NOT FOR SALE

महालक्ष्मी विशेषांक – (द्वितीय)

अक्टूबर 2000

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

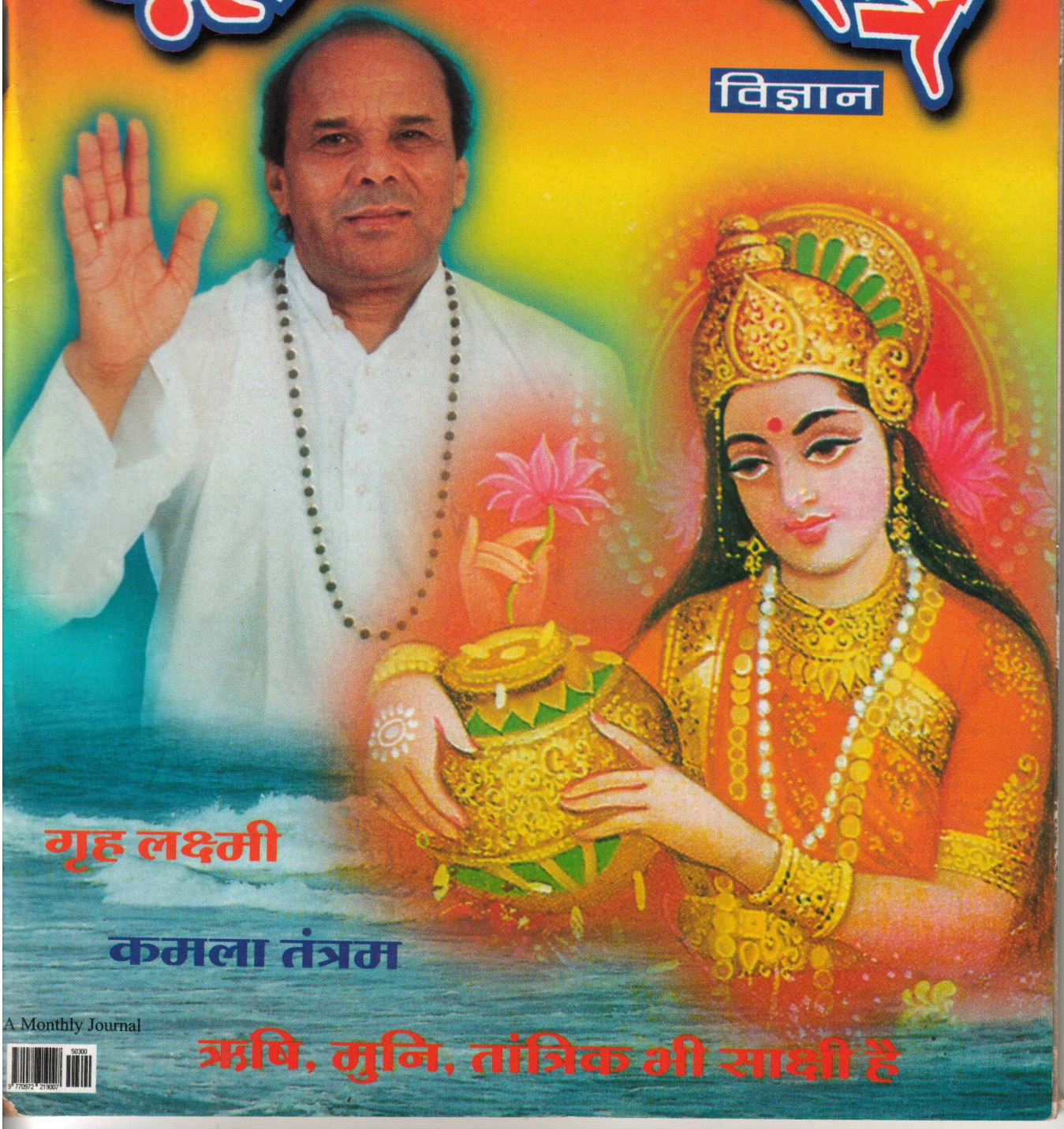

गृह लक्ष्मी

कमला तंत्रम

A Monthly Journal

ऋषि, मुनि, तांत्रिक भी साक्षी है

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

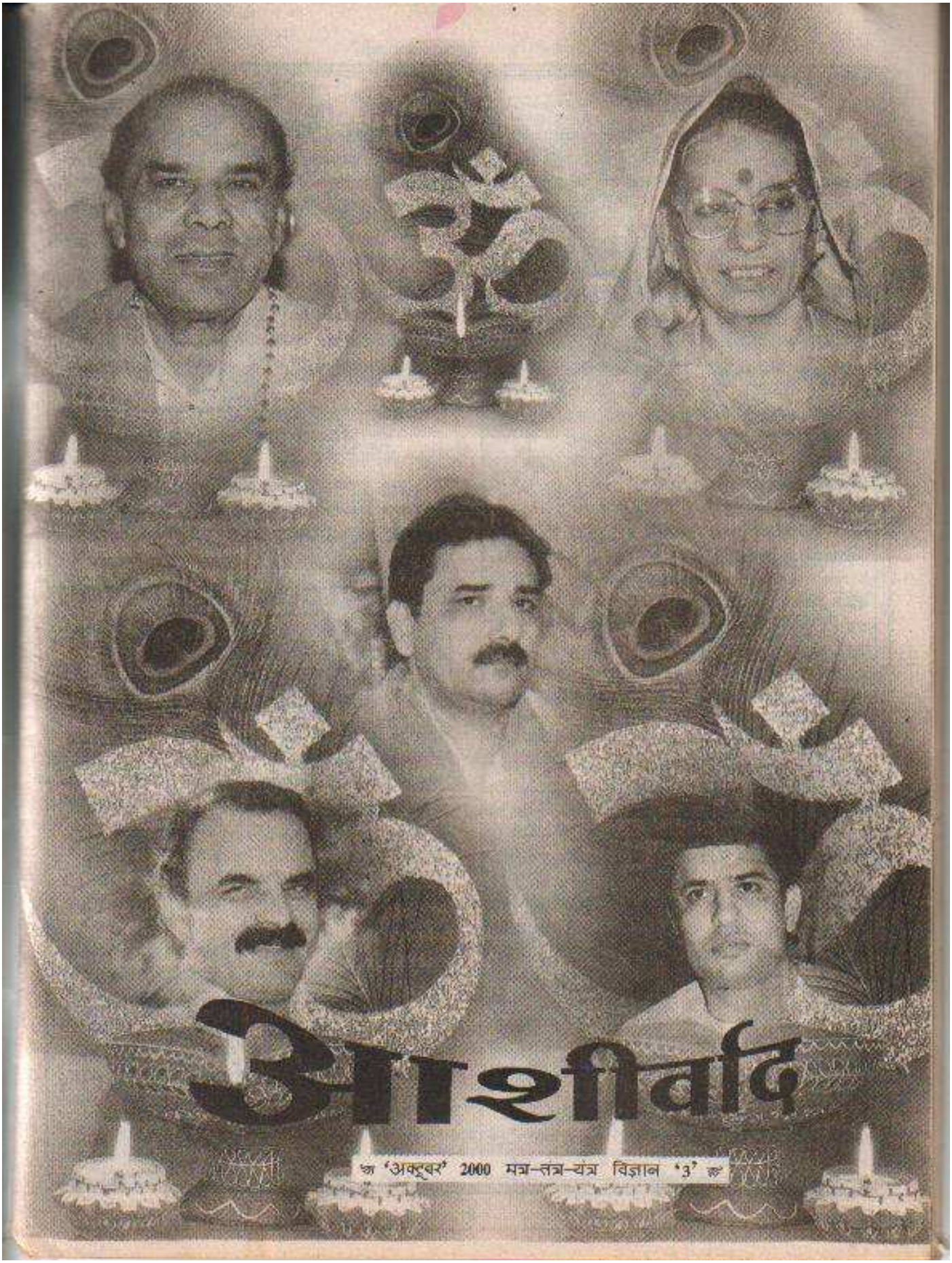

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में १९५/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

निधे नित्यस्मरे निरवधि गुणे नीतिनिपुणे।
निराधार ज्ञाने निजम परचित्तैकनिलये॥
निर्मुक्ते निखिल निजमान्तस्तुत एवे।
निरांतके नित्ये निजमव ममापि स्तुतिमिमाम्॥

हे नवनिधि स्वरूपा भगवति! आप नित्य स्मरण करने योग्य हैं, अनन्त गुणमयी नीतिनिपुण तथा सभी का एक मात्र आधार हैं, आप ज्ञान स्वरूपा हैं, समस्त मर्यादाओं का आधार हैं, कर्मबंधनों से विमुक्त हैं, वेदान्त वाक्यों के द्वारा स्तुत्य हैं, सनातन स्वरूपा हैं, और सभी प्रकार के भय से रहित हैं, आप मेरी इस प्रार्थना को भी स्वीकार करें।

❊ ईश्वरः सर्वभूतानाम् ❊

एक व्यक्ति सन्त एकनाथ के पास आकर बोला, "महाराज! मुझे भगवत-भक्ति का सरल उपाय बताइये। मैं आपके पास आत्म कल्याण हेतु हमेशा के लिए आया हूं।"

"क्या तुम अकेले हो या गृहस्थ धर्म का पालन करते हो?" – एकनाथ जी ने उससे प्रश्न किया।

"जी मेरा विवाह हो चुका है और मैं स्त्री बच्चों का त्याग कर आपके पास बड़ी आशा लेकर आया हूं।"

"क्या तुम्हारी पत्नी ने तुम्हें अनुमति दी है?"

"जी नहीं, वह जब नींद में बेखबर थी, तो मैं भागकर निकल आया हूं।"

"और बच्चे?"

"बच्चे भी सो रहे थे, लेकिन मेरा धक्का लगने से छोटा बच्चा रोने लगा, तब मैं छिप गया। मगर पत्नी ने आंखें बन्द किए ही उसे छाती से लगा लिया और मैं चुपचाप यहां निकल आया। मुझे शंका थी कि यदि पत्नी जाग जाए, तो मेरा भाग निकलना सम्भव न हो सकेगा। महाराज, मैंने घर-गृहस्थी त्याग दी है और अब भगवान की सेवा करना चाहता हूं।"

एकनाथ बोले, **"मूर्ख, जिस भगवान की सेवा करने की इच्छा से तू यहां आया है, वह तो तेरे घर में ही है और उसे तू ने त्याग दिया! अरे, भगवान तो घट-घट व्यापी है। जब तक तू अपने घर के भगवान की सेवा नहीं करेगा, तेरा उद्धार नहीं होगा। अरे मूर्ख, त्याग आत्मीय लोगों का नहीं, मन के विकारों का करना होता है और तभी प्रभु प्रसन्न होते हैं।"**

वह व्यक्ति चुपचाप घर वापस लौट गया।

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 7
गुरु वाणी 44

स्तम्भ

शिष्य धर्म 43
स्वास्थ्य सरिता 59
साधक साक्षी 58
कालचक्र 31
मैं समय हूं 62
वराहमिहीर 63
नक्षत्रों की वाणी 71
इस मास दिल्ली में 80
एक दृष्टि में 86

वर्ष 20 अंक 10
अक्टूबर 2000 पृष्ठ 88

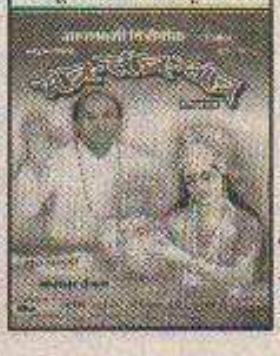

साधना

गृह लक्ष्मी साधना 23
कमला साधना 26
स्थायी लक्ष्मी साधना 32
ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना 46
ऋषि, मुनि, तांत्रिक भी साक्षी है साधना के 39

आपके जीवन के २१ जटिल प्रश्न पूज्य गुरुदेव – 49

विशेष

संन्यास जीवन 37
चन्द्र नमस्कार 83
दीपावली आह्वान 29
आपको जीवन जीतना है 30

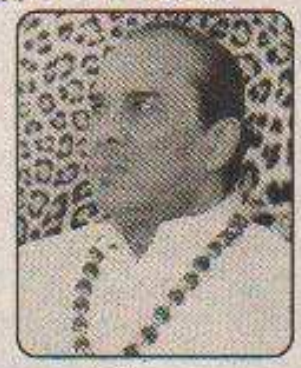

विवेचन

प्रश्नोपनिषद रहस्य 67
लक्ष्मी स्वयं याति निवास 61
मनुआ मन की आंखें खोल . . . 64
निखिल अमृत वचन 60
शरीर लक्षण से पहचाने 73

स्तोत्र शक्ति

श्री विद्या स्तोत्र 77

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार मंडल
डॉ० राम चैतन्य शास्त्री, श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव, श्री रमेश पाटिल, श्री एस.के. मिश्रा, श्री आर.सी.सिंह, श्री नंगाधर महापात्र, श्री बसंत पाटिल, श्री सतीश मिश्रा (बम्बई), श्री एम. आर. वशिष्ठ, श्री सुधीर सेलोकर, श्री विजय शास्त्री (हरियाणा), श्री कृष्णा गौड़ा (बेंगलोर), डॉ० एस. के. धीताल (नेपाल),

प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली
द्वारा
नीरू आर्ट प्रिन्टर्स
10/2, DLF, इंडस्ट्रियल एरिया, मोती नगर, नई दिल्ली
से मुद्रित तथा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/–
वार्षिक : 196/–

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली–110034, फोन: 011–7182248, टेली फैक्स : 011–7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०) फोन : 0291–432208, टेलीफैक्स : 0291–432010
WWW address – http:/www.siddhashram.org E-mail add. – mtyv@siddhashram.org

अपनों से अपनी बात

प्रिय आत्मन

शुभाशीर्वाद !

कहते हैं ''युग बदलता है, तो आचार-विचार, मान्यताएं भी बदल जाती हैं। युग के साथ परिवर्तन होते हैं।'' ये पंक्तियां शायद किसी निराश दार्शनिक ने कही होंगी। गलत होंगे उनके सिद्धान्त, गलत होंगी उनकी धारणाएं। काल का कोई खण्ड एक दूसरे से पृथक नहीं है। यह तो अविरल चलने वाली यात्रा है जिस प्रकार से सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग। समाप्त हो गए चक्रवर्ती सम्राट्, सम्राप्त हो गए लक्ष्मीपति। लेकिन समाप्त नहीं हो सके . . . तो कौन? वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, गर्ग, कणाद, व्यास, शुकदेव, सान्दीपन, शंकराचार्य जैसे महान गुरु कभी भी समाप्त नहीं हो सकते हैं, क्योंकि इन्होंने भूमि पर राज्य नहीं किया है, इन्होंने अपने साम्राज्य को नगरों की सीमा में नहीं रखा, फिर भी ये अमर बन गये . . . अमृत बन गये। सही रूप में अमर शब्द नहीं, अपितु 'अ-मृत' शब्द है और अमृत वही हो सकता है, जिसने जमीन पर नहीं अपितु मन पर राज्य किया हो। इन ऋषियों-मुनियों ने अपनी वाणी, ज्ञान-ऋचाओं द्वारा लोगों के मन को जीता है और इसलिए मनस्वी कहलाए। हम अपने आपको राजाओं की संन्तान नहीं, अपितु ऋषियों की सन्तान कहते हैं और इसमें हमे गर्व का अनुभव होता है। हमारे जीवन में भौतिकता भी है, लेकिन वह भौतिकता भी आध्यात्मिकता के रंग से रंगी हुई है। हमने पाया कि जीवन में आधारशक्ति क्या होती है। सब सहारे टूट जाने के बाद भी हमारे पास सहारा रहता ही है, वह सहारा जो सद्गुरु रूप में सदैव शाश्वत विद्यमान रहता है।

आत्मलीन और आत्मा से आनन्द की प्राप्ति का पाठ सद्गुरुदेव ने ही हमें सिखलाया, उन्होंने बताया कि आनन्द अनुभव करना है तो कल-कल बहती नदी, उफनते समुद्र,, उद्दाम प्रवाह से गिरते झरने, पत्तों की सरसराहट, पक्षियों के गायन . . . इनमें देखों। आनन्द तो वात्सल्य, प्रेम, श्रद्धा, अनुराग और प्रीति में छिपा पड़ा है, बिखरे पड़े हैं सब जगह आनन्द के मोती। और केवल आवश्यकता है मानस के राजहंस बनकर उन मोतियों को चुगने की। गुरु तो सतत क्रियाशील रहते हैं उन्हें विश्राम नहीं चाहिए, उन्हें चाहिए आनन्दभरे हृदय। आनन्द से परमानन्द की प्राप्ति होती है और परमानन्द का तात्पर्य है 'अ-मृत'।

कालचक्र में कालपुरुष बनना है, यम के नियम तो चलते रहेंगे, लेकिन ज्ञान-चेतना और आनन्द की यह अजस्र धारा हर एक के जीवन में बनी रहे, मधुरता सुगन्ध से नहीं अपितु मन की आवाज से लहराती है। सोचना यह है कि रोज दीपावली हो, हर रोज वही मस्ती, खुमारी, आनन्द घन बरसता रहे।

सद्गुरुदेव नहीं बिछुड़ते हैं न राम बिछुड़े, न श्याम बिछुड़े, न नारायण बिछुड़े, बिछुड़े तो बाल-गोपाल, संगी-साथी।

सुनो, आत्मा की आवाज, उस आत्मा में सदानन्द, चिदानन्द, सच्चिदानन्द, सद्गुरुदेव विराजमान है।

आज से हंसना है, मन से मुस्कुराना है, आनन्द से सराबोर कर देना है हृदय को सद्गुरुदेव में। सद्गुरुदेव की मीठी बांसुरी आपके मन हृदय-आत्मा में प्रेम गीत गुंजायमान कर रही है, आप सब द्वन्द्वों से परे होकर आनन्द गीत गाएं, आनन्द नर्तन करें, यही हार्दिक इच्छा है।

आपका अपना ही गुरु परिवार . . . .

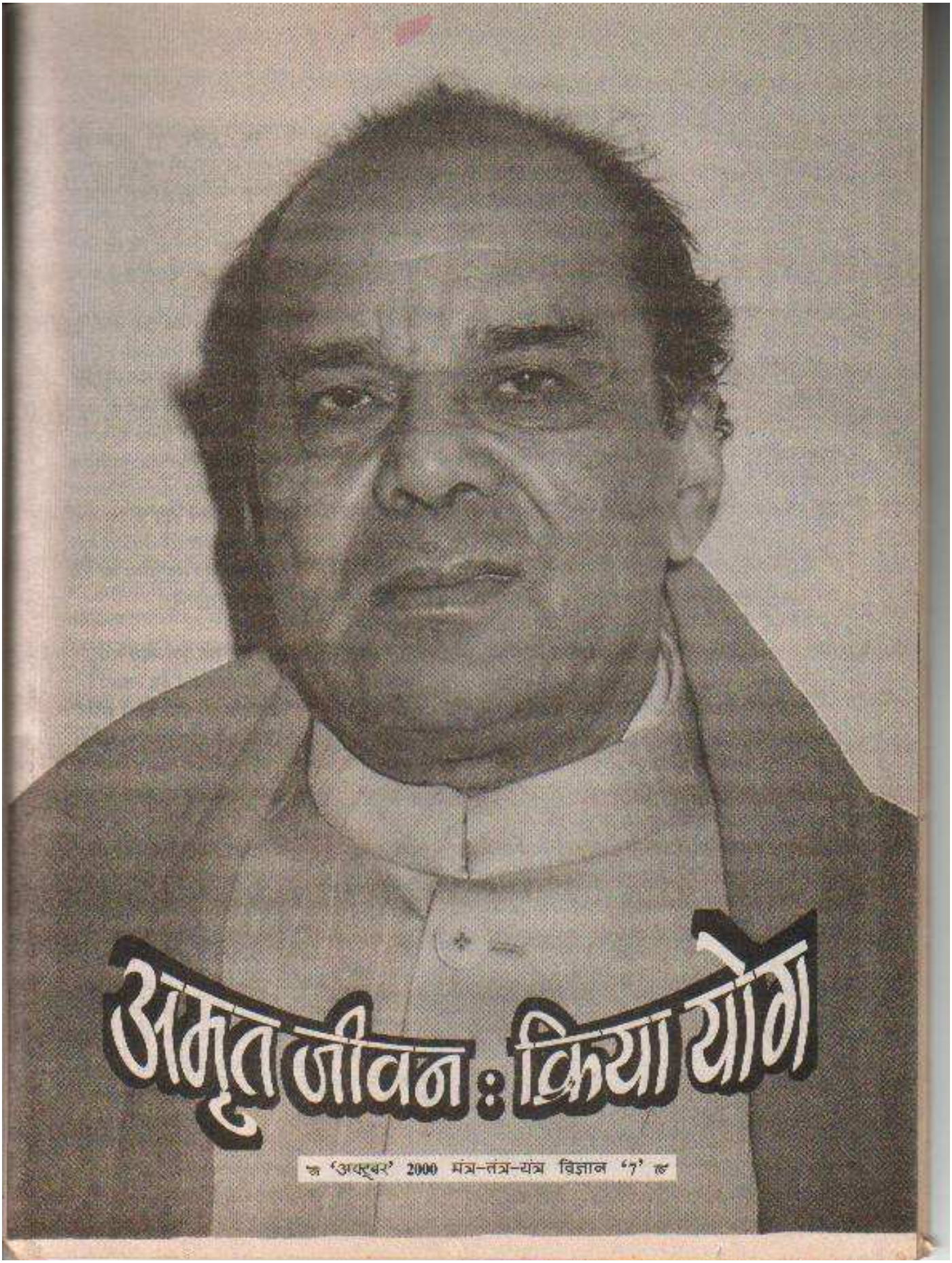

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

एक समय पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी ने शिष्यों को जीवन का सार समझाते हुए इतने ओजस्वी पूर्ण तरीके से आवाहन किया था, कि वह अपने शिष्यों को कितना कुछ प्रदान कर देना चाहते हैं, उन्हें जीवित जाग्रत ग्रंथ बना देना चाहते हैं, जिससे आने वाले समय उन्हें पढ़ सके, ऐसा नवीन चिन्तन, ऐसी दिव्य वाणी जिसे सुनते ही, पढ़ते ही रोम-रोम में चेतना का संचार हो जाता है, क्योंकि सद्गुरु के वाक्य काल के भाल पर लिखे गए अमिट अक्षर होते हैं, जो सदा सर्वथा अपनी अर्थवत्ता लिए रहते है। पूज्यपाद सद्गुरुदेव का वही प्रवचन प्रस्तुत है –

पूर्ण वदे पूर्ण मदैव रूपं
क्रियात्व रूपं देह स्वरूपं।
ब्रह्माण्ड रूप मपर मचलं मदीयं
त्वां देव सेवसेवीशरणं प्रपद्ये ॥

हमारा शरीर, जो कि अपने-आप में जड़ स्वरूप है, पूर्ण चैतन्यता युक्त बने और हमारे शरीर के समस्त अंग, इंद्रियां, तीसरा नेत्र तथा प्रत्येक अणु-परमाणु अपने-आप में विकसित हो, जिससे कि हम केवल एक छोटे से क्षेत्र में ही सीमित नहीं रहे, अपितु **''अणोरणीयान् महतो महीयान्''** शब्द को पूर्णता देते हुए एक अणु से महान बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो सकें . . . और जीवन में कुछ ऐसा कर सकें, जिसके माध्यम से हम एक अणुवत पैदा होकर भी एक महान रूप में अपने जीवन को पूर्णत्व दे

सके – ऐसा ही चिंतन करना मानव जीवन का मूल उद्देश्य है।

भौतिकता के चक्रव्यूह में उलझ कर मानव का मन और मस्तिष्क अंतर्द्वन्द्व में उलझ जाता है, और तब आदमी निर्णय नहीं ले पाता, वह सही ढंग से सोच नहीं पाता, उसकी विचारधारायें, परस्पर मंथन करने लग जाती हैं। तब अपने स्वार्थ और परमार्थ दोनों की भावनाओं से व्यक्ति यह विचार नहीं कर पाता, कि जीवन में उसे क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये, क्या उचित है, क्या अनुचित है . . . और उस समय भी एक ऐसा प्रश्न पैदा होता है, कि क्या हमारा जीवन अपने-आप में एक क्षुद्रमय अस्तित्व व्यतीत करने के लिये है या जीवन को पूर्णता देने के लिये है।

आज हर तरफ विज्ञान हावी हो रहा है, और दूसरी तरफ जो हमारे खून में ज्ञान की गरिमा है, जो ज्ञान के कण हैं, वे बार-बार हम पर हावी हो रहे हैं, कि हमें ज्ञान के क्षेत्र में, व्यक्तित्व के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करनी है। व्यक्ति पूर्णता की ओर अग्रसर होता है, और वह इसलिये, कि हमारा खून, हमारा रक्त अपने आप में सदियों पुराना है, क्योंकि हम उन ऋषियों की संतान है – जिनको हमने वशिष्ठ कहा है, विश्वामित्र कहा है। मेरी इन धमनियों में वशिष्ठ का खून प्रवाहित हो रहा है, जो निश्चय ही मेरे पिता के शरीर में भी प्रवाहित है, अर्थात मेरे शरीर में मेरी पचास पीढ़ी पहले का भी खून है, और यह खून निश्चय ही ऋषियों का खून है . . . और उनका खून है, इसलिए ज्ञानश्चेतना से अनुप्राणित है, इसलिए बार-बार हमारा मन, हमारा ज्ञान उबाल खाता है, कि हमें साधना के क्षेत्र में कुछ करना चाहिए हमें अवश्य ही कुछ प्रयत्न करने चाहिए।

यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हमारा जीवन बुझा बुझा सा रहेगा। जीवन में जो कुछ पूर्णता होनी चाहिए, वह नहीं होगी, हमें जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहिए, वह नहीं कर पायेंगे, परन्तु बाहरी सभ्यता हमारे विचारों के ऊपर बहुत अधिक प्रतिकूल दबाव डाल देती है, क्योंकि बाहरी सभ्यता

कहती है, कि ये सब ढोंग है, ये सब व्यर्थ है, ये दकियानूसी है, ये पिछड़ापन है।

उनके अनुसार जीवन का एडवान्स क्षेत्र तो वह है, कि हम बहुत अधिक फारवर्ड हो जाएं, अपने-आप को एडवान्स कर दें, नाचे-गाएं, खाएं-पीएं और जितना हम भोगवादी प्रवृत्ति में जिन्दा रह सकें, रहें . . . और फिर मर जाएं।

– और आज हम हमारे चारों तरफ यही देखते हैं, क्योंकि उनके जीवन का यह छद्म स्वरूप बाहरी सभ्यता से आया है, वह चाहे अमेरिकन सभ्यता हो या इंग्लैण्ड की सभ्यता हो। अमेरिकन सभ्यता तो दो सौ पचास वर्ष ही पुरानी है, जबकि ईसाई सभ्यता तो दो हजार वर्ष पहले पैदा हुई – लेकिन ये सभी सभ्यताएं अपने-आप में पचास हजार वर्ष पुरानी सभ्यता की तुलना नहीं कर सकती, क्योंकि उस सभ्यता का अपने-आप में कोई आधार नहीं है, बेस नहीं है, उस सभ्यता में किसी प्रकार की गरिमा नहीं है।

यदि एक वटवृक्ष की जड़ें पचास फीट नीचे होंगी, तभी पचास फीट पेड़ ऊपर चढ़ सकेगा . . . और तब वह छाया दे सकेगा। दो हजार लोगों को, मगर एक छोटी सी बेल दो चार लोगों को भी छाया नहीं दे सकती। दो हजार वर्ष पहले की सभ्यता, जो कि अभी आंख ही नहीं खोल सकी है . . . और वह हम पर हावी होती है, तो इसका कारण केवल भोगवादी प्रवृत्ति है, और वह भोगवादी प्रवृत्ति भी हम साधना में पूर्णता में पूर्णरूप से देख चुके हैं।

चार्वाक हमारे यहां एक ऋषि हुए हैं, और उन्होंने कहा –

"भस्मी भूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः"

अर्थात **"*यह शरीर तो भस्म होने के लिए है ही, यह शरीर तो खत्म होगा ही, कौन जानता है, कि फिर ऐसी देह मिले या नहीं, और जब शरीर खत्म होगा ही, तो फिर जिन्दगी है, उतनी भोग में व्यतीत की जाय।*"**

भोगवादी प्रवृत्ति कोई नये सिरे से पैदा नहीं हुई, मगर चार्वाक . . . केवल एक ही चार्वाक पैदा हो सके, उसका कोई शिष्य पैदा नहीं हो सका, क्योंकि भोगवादी प्रवृत्ति जीवन की नाशवान प्रवृत्ति है . . . इस भोगवादी प्रवृत्ति में जीवन की पूर्णता नहीं है।

यदि इसमें कुछ सार होता, तो निश्चित रूप से चार्वाक के दो-चार हजार शिष्य होते ही। उनके ऊपर भाष्य लिखा जाता, ग्रंथ लिखे जाते, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ, क्योंकि आज हम किसी भी भोग में कितने ही लिप्त हो जाएं, कितना ही ऐश कर लें, किसी भी पराई लड़की के साथ कुछ भी कर लें, हम कितना ही धन लूट लें, परन्तु जब समाज में बात चलेगी, तो यही कहा जाएगा . . . नहीं, ये सब नहीं होना

चाहिए, दूसरी लड़की के साथ दिखना नहीं चाहिए . . . क्योंकि हमारे शास्त्र का आधार यह सब नहीं है।

भोगवादी जीवन हमारे जीवन का आधार नहीं है, इसलिए पश्चिमी परम्परा अपने-आप में आगे बढ़ नहीं सकी . . . वह जो पश्चिम की सभ्यता है, केवल एक छोटे से जीवन के लिये है, इस प्रकार का जीवन बीसवें साल में पैदा होता है और पैंतालिसवें साल में समाप्त हो जाता है।

आपने शायद अमेरिका पूरी तरह से देखा नहीं होगा, लेकिन मैंने देखा है। वे बीस साल से साठ साल तक भोगवादी प्रवृत्ति में पूर्ण लिप्त हैं, मगर साठ वर्ष के बाद व्यक्ति ओल्ड पीपल्स होम में पड़े रहते हैं। बेटे उनको देखने के लिये जाते नहीं, बहुओं को यह पता नहीं होता, कि उनका ससुर कहां पड़ा हुआ है . . . और तब वे बहुत दुःखी, परेशान और व्यथित होते हैं, सिसक-सिसक कर, तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। सरकार उनको रोटी, कपड़ा देती है, परन्तु वे पड़े-पड़े मृत्यु की कामना करते रहते हैं – मैं उन देशों के लोगों की बात कर रहा हूं, जो तुम्हारी नजर में सबसे अधिक सभ्य हैं . . . अमेरिका, इंग्लैण्ड और फ्रांस की बात कर रहा हूं।

जब मैं सन १९८३ में अमेरिका में था, तब एक व्यक्ति मुझसे मिलने के लिये आया . . . यह मैं बिलकुल आंखों देखी घटना लिख रहा हूं . . . मुझसे वह वार्तालाप कर रहा था, ठीक उसी समय एक टेलीफोन आया –

''आपकी मदर की ओल्ड पीपल्स होम में डैथ हो गई है।''

उसने कहा – **''ऑलराइट-ऑलराइट''** . . .

और फिर एक टेलीफोन नं. घुमाया . . . वहां मृत्यु संस्कार करने वाले डायरेक्टर होते हैं – ऐसा भी एक वहां एक डिपार्टमेन्ट है।

फोन पर उसने निर्देश दिया – **''वहां ओल्ड पीपल्स होम में एक बुढ़िया मर गयी है, जो मेरी मदर है, उसका अन्तिम संस्कार करना है, उसे जलाना है, क्योंकि हम हिन्दू हैं। उसको जलाकर आप हमें शाम को सूचना दे दें, और आपका जो भी चार्ज हो, उसका बिल भेज दें।''**

मैंने सोचा – कमाल है, वह जो उसकी सगी मां, जिसने उसको जन्म दिया है, उसको पाल-पोस कर बड़ा किया है, उससे कोई घृणा नहीं हो सकती है, दुश्मनी नहीं हो सकती है . . . और उसके प्रति ऐसी भावना!

वे अत्यन्त भोगवादी प्रवृत्ति के हैं, उनको जीवन में इस बात का एहसास नहीं है, कि हम कहां पर खड़े हैं। अन्तिम संस्कार के बाद वे केवल बिल का भुगतान कर देते हैं और जगह-जगह पर कार्ड भेज देते हैं – मेरी मां मर गयी है, उसकी शांति के लिए प्रार्थना करें।

– बस हो गयी शांति!

यह तो मैं बहुत ही भोगवादी प्रवृत्ति की बात कर रहा हूं, क्योंकि आप ये जो इतना अधिक भोगवादी प्रवृत्ति की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, उसका अंत कहां पर है . . . वह वहां पर है, जिसका मैंने आपको उदाहरण दिया है।

हमारे यहां जीवन में अपने-आप में भोगवादी प्रवृत्ति हावी नहीं रही,

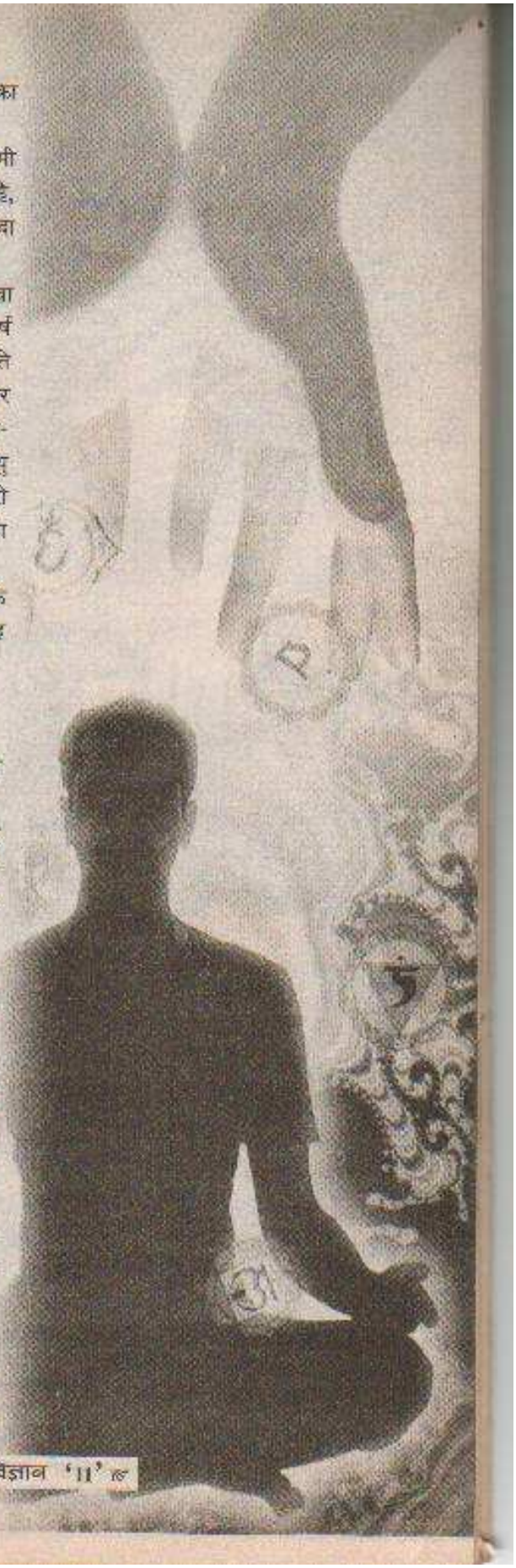

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

क्योंकि जीवन का एक अंग यदि अर्थ और काम है, तो दूसरा अंग – धर्म और मोक्ष है। जैसा कि शंकराचार्य ने अपने श्लोक में कहा है –

"अणोरणीयान"

–"मैं, अणु से भी अणु अर्थात अत्यन्त लघु रूप में पैदा हुआ हूं, इसमें कोई दो राय नहीं।"

शंकरभाष्य के श्लोक के अनुसार – "जब व्यक्ति पैदा होता है, तब उसमें सिर्फ एक कला होती है . . . और एक कला प्रधान है, अतः वह अपने कार्यों से, अपने प्रयत्नों से, अपने तरीकों से आगे बढ़ता है – ज्ञान की चेतना के माध्यम से, भोग की चेतना के माध्यम से नहीं, क्योंकि भोग अपने-आप में पशुत्व की तरफ ले जाता है।"

पशुओं को यह पता नहीं होता, कि हमारी बेटी कौन है, बहिन कौन है? इस बात का कोई एहसास नहीं होता। वे तो सामने वाली किसी मादा को देखते हैं, वह चाहे कोई हो, वे उसको भोग्या ही मानते हैं . . . और आज हमारा जीवन भी वैसा ही है, एक पशु जैसा हो गया है।

शंकराचार्य ने कहा है – यह हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं है, क्योंकि हम तो जन्म से ही एक कला प्रधान हैं . . . और आपको मालूम होना चाहिए कि जब महावीर स्वामी का शरीर शांत हुआ, तब वे थोड़े से कला प्रधान थे, जब बुद्ध का शरीर शांत हुआ, तब वे कुछ कला प्रधान थे, जब राम का शरीर शांत हुआ, तब वे बारह कला प्रधान थे, **सोलह कला प्रधान केवल श्रीकृष्ण थे . . . एक कला से सोलह कला तक की परिणति अपने-आप में अणु से महान बनने तक की यात्रा है। अणु कहां पर है – एक कला पर, और पूर्णता कहां पर है – सोलह कला पर, इसलिए सोलह कला पर पहुंचने की क्रिया पूर्णता है।** अब हम बीच में कहीं पर भी रुक सकते हैं – भगवान बुद्ध की स्टेज पर रुक सकते हैं, इससे पहले की स्टेज पर भी रुक सकते हैं, और सिर्फ एक कला लेकर भी मर सकते हैं।

जिसको हम साबुन लगाते हैं, कपड़े पहिनाते हैं, संवारते हैं, सुन्दर अलंकरणों से अलंकृत करते हैं, उस शरीर को चीर-फाड़ करके अगर देख लिया जाए, तो पाएंगे कि उसमें केवल मांस है, उलझी हुई नाड़ियां हैं, रक्त है, श्लेष्म है, थूक है, लार है, मल है, मूत्र है, इसके अलावा इस शरीर में और कोई विशेषता नहीं है। विशिष्टता तो इस बात में है, कि हम इस मल, मूत्र से भरे शरीर को क्रिया योग के माध्यम से वर्तमान जीवन में ही पूर्णता दे सकें, और इसी जीवन को पूर्णरूप से चेतनायुक्त बनाते हुए, अपने जीवन में पूर्ण सामर्थ्य युक्त हो सकें।

– हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

– इसको हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

परिश्रम करने से, और बिजनेस करने से इस उद्देश्य और लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। आप लखपति और करोड़पति तो बन सकते हैं, परन्तु वह जीवन का एक अंग है, जीवन की पूर्णता नहीं है। जीवन की पूर्णता पांच-सात पुत्र पैदा करने में भी नहीं है, न ही जीवन की पूर्णता बहुत सुन्दर भड़कीले वस्त्र धारण करने में ही है . . . **"जीवन की पूर्णता तो अन्दर जो आनन्द का ज्वालामुखी है, जिसको अमृत कुंड कहा गया है, उसे जाग्रत कर पूरे शरीर में उसके सत्व को फैला देने की क्रिया को कहते हैं।"**

यदि आपने **'रामायण'** पढ़ा हो, तो उसमें जब राम और रावण का युद्ध होता है, तो राम अपने सभी अस्त्र-शस्त्र प्रयोग करके निराश हो जाते हैं और एहसास करते हैं, कि रावण की मृत्यु नहीं हो सकती, पूरे शरीर को बांधने के बाद भी रावण मर नहीं रहा था, तो वे विभीषण को पास बुलाते हैं, और विभीषण से पूछते हैं – *"क्या कारण है, रावण मर क्यों नहीं रहा है?" विभीषण ने कहा –*

सः मृत्योर्वतियं अमृत कुण्ड रूपं ज्ञानो वतां पूर्ण मदैव रूपं।
रमो प्रचेयं परितं सः रूपं न मार्णतत्वं मरणं त्वदेवं ॥

– "राम आप रावण को नहीं मार सकेंगे। आपके अस्त्र-शस्त्र और आपकी युद्ध कला, सब अपने-आप में कोई अर्थ नहीं रखते, इनके माध्यम से आप रावण को कभी समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि रावण का अमृत कुंड जाग्रत है, और जब अमृत कुंड जाग्रत है, तो जहां पर भी नुकसान होता है, वहां अमृत तत्व पहुंच करके उसे पूर्ण कर देता है . . . मृत्यु तो हो ही नहीं सकती, क्योंकि जहां अमृत है, वहां मृत्यु नहीं हो सकती . . . यदि आप रावण को मारना चाहते हैं, तो बहुत जरूरी है, कि पहले आप उसके अमृत कुंड को समाप्त करें।"

राम अपने-आप में पूर्ण पुरुषोत्तम होने के बावजूद भी, बारह कला पूर्ण होने के बावजूद भी इस रहस्य को स्वतः नहीं जान सके, क्योंकि चार कला तो शेष थी ही। सोलह कला प्रधान व्यक्ति प्रत्येक प्रश्न का उत्तर जान सकता है, एहसास कर सकता है, देख सकता है . . . यही अन्तर है एक साधारण व्यक्ति और एक सोलह कला पूर्ण व्यक्ति में . . . राम की मर्यादा को मैं न्यून करके नहीं देख रहा हूं . . . अपितु वास्तविकता बता रहा हूं।

वाल्मिकी स्वयं कह रहे हैं – मैं आपको प्रणाम करता हूं, राम! आप बारह कला प्रधान हैं।

मगर बारह और सोलह में पूरी चार कलाओं का अन्तर है, और वे चार कलायें राम पूर्ण नहीं कर सके . . . फिर भी वे अपने समय

के अद्वितीय पुरुष थे, और आज वे भगवान राम हैं। उस समय तो उन्होंने उतनी ही दुःख और वेदना झेली, जितनी कि आप और हम, एक आम आदमी झेलता है।

– रावण पर अपने अस्त्रों का कोई प्रभाव न देख कर उसी क्षण युद्ध भूमि में राम बैठ गये . . . यह इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, इसको समझने की जरूरत है . . . उन्होंने युद्ध भूमि लंका में एक शिवलिंग बनाया – यदि कभी आप कोलम्बो गये हों, तो देखा होगा, कि जैसा रामेश्वरम् शिवलिंग यहां पर है, ठीक वैसा ही वहां पर भी है – उसी युद्ध भूमि में राम ने शिवलिंग बनाया, और पूजन करके भगवान शिव से प्रश्न किया –

पाशुपतेयं पूर्ण मदैव रूपं शिवत्व रूपं सवितं सदेयं।
प्रणम्यं वन्दनं, चिन्तन वदेयं सः हन्तनं हन्तनं हन्तनं वः॥

– "मैं हन्त हूं, मैं मर जाऊंगा इसमें कोई दो राय नहीं, और पराजय सूर्यवंश को समाप्त कर देगी, क्योंकि यह युद्ध नहीं है, अपितु दो सभ्यताओं का युद्ध है। इन दो सभ्यताओं में आसुरी सभ्यता प्रभावी हो जायेगी, और इस युद्ध में यदि मैं समाप्त हो गया, तो अपने पूरे परिवार को एक कभी न मिटने वाला कलंक देकर चला जाऊंगा, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूं, कि किस प्रकार से इस अमृत कुंड को सुखाऊं?"

– और उसी समय भगवान शिव उनको जो उत्तर देते हैं, वही उत्तर इस पुस्तक का आधार है। शिव कह रहे हैं–

त्वं पूर्णत्व प्रोजाति अमृत कुण्डोद्भवेत्।
ज्ञातव्यं हे राम। त्वं विजयी भव निश्चयः॥

अर्थात् **"तुमने विश्वामित्र से युद्ध कला तो जरूर सीखी, परन्तु तुमने "ब्रह्म दीक्षा" प्राप्त नहीं की। तुम युद्ध में तो पूर्ण निष्णात हुए, परन्तु तुम्हें इस बात का ज्ञान नहीं है, कि मूलाधार के ऊपर जो अमृत कुंड है, उस अमृत कुंड को प्राप्त किये बिना तुम जीवन में पूर्णता नहीं पा सकते। अवश्य ही तुम मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, आज नहीं तो दस सहस्र वर्ष बाद, मगर अपयश के बाद, क्योंकि जीवन में जो कुछ प्राप्त होना चाहिए, वह रावण ने तो किया, मगर तुम नहीं कर सके, और उस अमृतकुंड को समाप्त करके ही तुम उसको मृत्यु दे सकते हो . . .।"**

यह एक घोषणा है, यह एक चिन्तन है, यह एक विचार है।

वाल्मिकी रामायण में शिव स्वयं कहते हैं – **"राम! तुम पूर्ण नहीं हो। तुम मर्यादा पुरुषोत्तम तो हो, तुमने मर्यादा तो रखी है . . . मर्यादा यह, कि मुझे यह काम करना चाहिए, और यह काम**

नहीं करना चाहिए, अगर मेरे पिता ने मुझे बनवास दिया है, तो मुझे वन में ही रहना चाहिए, नगर में नहीं जाना चाहिए – और इसलिए वे लंका में नहीं गये . . . मर्यादा पुरुषोत्तम तो रहे, मगर कुण्डलिनी चक्र को जाग्रत करके नाभि में अमृत कुंड की स्थापना करने की प्रक्रिया को, उस अमृत को सहस्रार से प्राप्त कर पुनः सहस्रार एवं सम्पूर्ण शरीर तक पहुंचाने की क्रिया को, जिससे एक अणु पूरे एक हजार अणुओं में परिवर्तित हो जाता है, उस क्रिया को, राम ! तुमने नहीं सीखा, और उसको न सीखने के कारण से ही तुम आज पश्चाताप कर रहे हो, मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हो।''

– और शिव से प्राप्त अग्नि बाण द्वारा राम ने रावण के शरीर स्थित अमृत कुंड को सुखाकर उसको समाप्त किया।

यह तो इतिहास की एक घटना है . . . और मैं इतिहास के किसी पन्ने पर नहीं जा रहा हूं, मैं तो यह समझा रहा हूं, कि अगर तुम मृत्यु को समाप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें उस अमृत कुंड को पहिचानने की जरूरत है। ***उस अमृत कुंड को ऊंचा उठाकर पूर्ण सहस्रार तक पहुंचाने, और पुनः सहस्रार के उन सौ हजार अणुओं को अमृत से सिक्त होने की क्रिया को ''क्रिया योग'' कहते हैं।***

. . . और यह पूर्णता बारह कलाओं से शुरू होकर सोलह कलाओं पर समाप्त होती है। जब व्यक्ति बारह कला तक पहुंच जाता है, तब गुरु उसको समझाता है, कि तुम अमृत कुंड में अमृत एकत्र करके, उसको ऊंचा उठाने की क्रिया करो। अभी तो तुम्हें यह मालूम ही नहीं, कि अमृत कुंड कहां है?

✻ किस प्रकार से एक-एक बूंद करके अमृत एकत्र होता है?

✻ किस तरीके के ज्ञान-प्रवाह से उस अमृत कुंड में एकत्र किया जाता है?

✻ उस अमृत का ऊर्ध्वीकरण कैसे होता है?

✻ उसका वीरोचन कैसे किया जाता है?

✻ उसे सहस्रार में विस्तृत कैसे

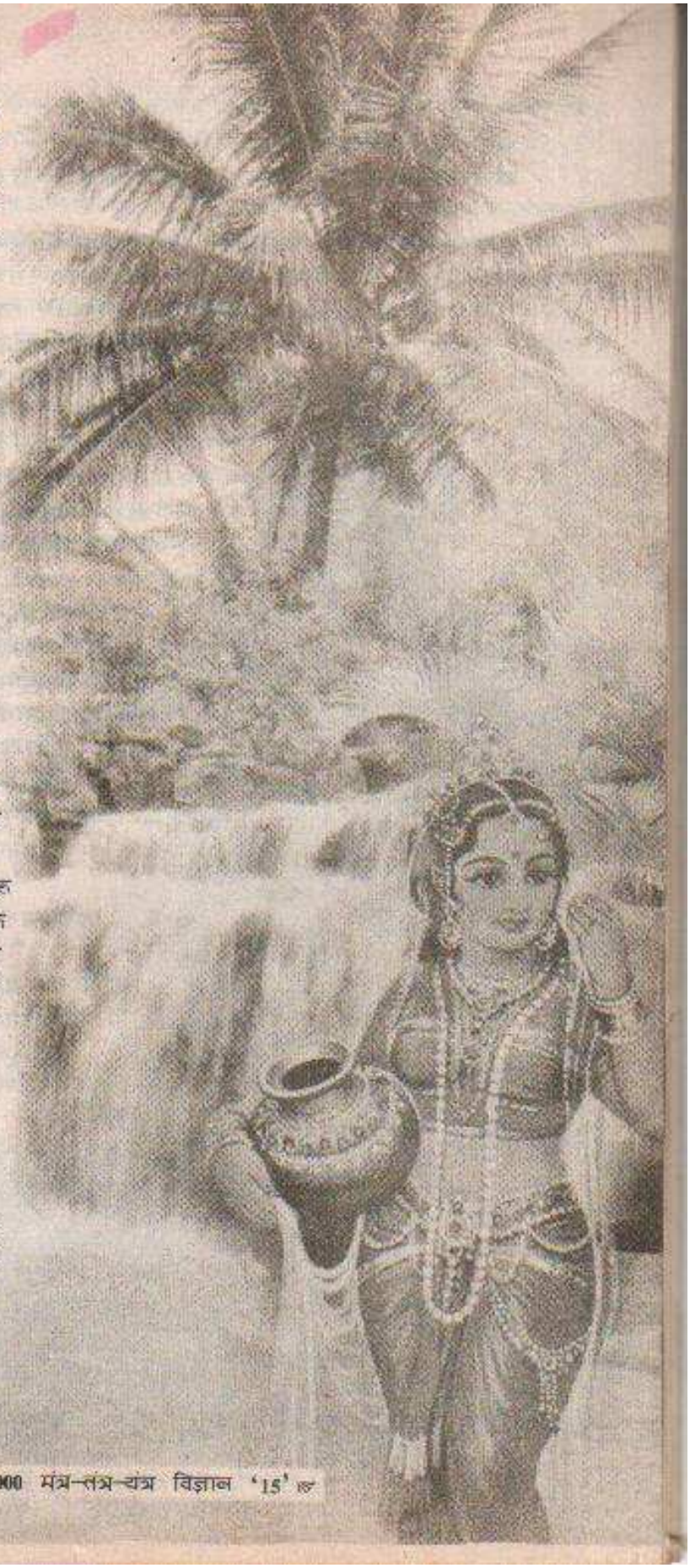

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

किया जाता है?

✲ सहस्रार से पूरे शरीर में कैसे प्रवाहित किया जाता है?

यह अपने-आप में कुण्डलिनी की एक पूरा परिच्छेद है, और इस पूरे क्रम को प्राप्त करने के लिये क्रिया योग को सीखना ही पड़ेगा।

जीवन की पूर्णता सोलह कला प्राप्त होना है। सोलह में से पन्द्रह तो अंधकार में हैं, केवल एक कला हमारे पास में है, और जब पन्द्रह कलाओं का अंधकार पक्ष हमारे ऊपर हावी है, तो – हम किस प्रकार से ईश्वर के दर्शन कर सकेंगे? – हम जीवन के पाप कहां से काट सकेंगे?– हम जीवन की पूर्णता कैसे प्राप्त कर सकेंगे? – जब कि हमने जीवन की यात्रा का मात्र एक चरण ही पार किया है। उस एक कला से आगे बढ़ते हुए दूसरी कला प्राप्त करे, तीसरी कला प्राप्त करे . . . और यदि व्यक्ति जीवन में तीसरी कला प्राप्त करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तब भी उसके साथ ये संस्कार बने होते हैं, मिटते नहीं हैं . . . और जब व्यक्ति पुनः जन्म लेता है, तब उसके जीवन में तीन कलाएं तो होती ही हैं। यद्यपि वह उस समय भी एक कला प्रधान ही होता है, किन्तु थोड़ा सा भी साधना में आगे बढ़ जाय, तो वह तुरन्त तीन कलाएं प्राप्त कर लेता है।

– मैं आपको बता रहा हूं, कि साधना का क्षेत्र, स्तर क्या है?

– यदि व्यक्ति में पूर्ण क्षमता है, तो वह साधना करता हुआ एक जन्म में ही पूरी कलाएं प्राप्त कर सकता है . . . प्राप्त कर सकता है, यदि व्यक्ति के पास कोई ऐसा गुरु है, जिसको इस बात का ज्ञान हो, कि इस व्यक्ति का विकास कहां तक है – यह तीसरी कला प्रधान है या पांचवी कला प्रधान है। लेकिन व्यक्ति कितनी भी उच्चता पर पहुंच जाएं, उसके चेहरे पर कोई अन्तर नहीं आयेगा, चेहरा और शरीर तो वैसा ही रहेगा, पर बौद्धिकता में अन्तर आ जायेगा। एक कला से आठ कला युक्त होने में बाहरी रूप में कोई चेन्ज नहीं आयेगा, किन्तु उसमें साधनात्मक डिफरेन्स तो आ ही जाएगा। अणु से पूर्णता तक, एक कला से सोलह कला तक पहुंचने का जो रास्ता है, उस रास्ते को क्रिया योग कहा जाता है।

– क्रिया योग क्या है? किसी ग्रंथ में इस प्रकार का विवेचन नहीं किया जाएगा, कि क्रिया योग का अर्थ क्या है?

मैं आपको समझा देता हूं – "हम निष्क्रिय हैं . . . हम ये जो खाना खा रहे हैं, दौड़ रहे हैं, बच्चे पैदा कर रहे हैं, यह सक्रियता नहीं है, पशुता है . . . सक्रियता तो एक कला से सोलह कला तक पहुंचने में है, और वह रास्ता बिलकुल अलग है, उस रास्ते पर तीव्रता से बढ़ने को क्रिया योग कहते हैं।

– मैंने यह कहा, कि हम सक्रिय नहीं, निष्क्रिय हैं, और निष्क्रिय इसलिए कि हमारा पूरा मस्तिष्क . . . जो कुछ हमारे पास है, उसका अमेरिका में सर्वेक्षण करने के बाद वहां के वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों ने यह निर्णय लिया, कि व्यक्ति के पूरे

मानस चेतना मृतवत है, जिसका व्यक्ति प्रयोग नहीं कर पा रहा है, उसको ज्ञान नहीं है, कि बाकी दिमाग का प्रयोग किस प्रकार किया जाए, इसका तरीका क्या है? इसको हम कैसे उपयोग में लें? जब मुझे पंखा चलाने का ज्ञान नहीं है, तो पंखा बंद ही पड़ा रहेगा, फिर उसका होना न होना बराबर है।

हमारे मस्तिष्क में एक सहस्रार ग्रंथि है। ग्रंथि का मतलब है – मांस पिण्ड, ग्रंथि का मतलब है – नाड़ियों का एक गुच्छा। यदि मैं आगे से हाथ काटूं, तो यहां पर भी नाड़ियों का एक गुच्छा होगा, यहां सभी मांस पिण्ड ही हैं . . . और इन मांस पिण्डों पर हमारा कोई कण्ट्रोल है ही नहीं।

आप कान को क्यों नहीं हिला पाते? क्योंकि वह मांस पिंड अपने-आप में निष्क्रिय है। उसके अन्दर का जो गुप्त भाग है, उसका प्रयोग तो हो रहा है, मगर कान की मांसपेशियों का प्रयोग नहीं हो रहा। अगर शरीर का कण्ट्रोल आपके हाथ में है, तो जरा सोचिए, आप उंगली हिला सकते हैं, पर नाक क्यों नहीं हिला पाते? सीना क्यों नहीं हिला पाते?

– आप नहीं हिला सकते, क्योंकि शरीर आपके कण्ट्रोल में है ही नहीं, यह तो केवल बाहरी आवरण है।

शंकराचार्य के इसी श्लोक में अणु से महियान तक की यात्रा में उन्होंने बताया है –

इस शरीर में एक सौ आठ इंद्रियां हैं . . . और मंत्र जप की माला में भी एक सौ आठ मनके होते हैं, ये एक सौ आठ मनके क्यों रखे गये? इसलिए कि इस माला के माध्यम से हमें ज्ञात हो सके, कि हम साधना के क्षेत्र में बैठे हैं, और साधना के क्षेत्र में हमें कहां बढ़ना है?

– "वहां जहां हमें समस्त एक सौ आठ उपनिषदों का निचोड़ प्राप्त हो सके . . . एक मनका घुमाते हैं, तो एक उपनिषद् पूर्ण होता है।"

कुल एक सौ आठ उपनिषद् हैं, और हमारे शरीर की कुल ग्रंथियां भी एक सौ आठ हैं, इन एक सौ आठ ग्रंथियों में अधिकतर ग्रंथियां सुप्त हैं . . . मैंने आपने और दुनियां भर के लोगों ने तो कहा है, कि पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं, और पांच कर्मेन्द्रियां हैं, बस तो हमको मालूम है। कर्मेन्द्रियों में हाथ, पैर, जिह्वा, आंख, नाक, कान हैं, इनका कार्य है केवल सूंघना, देखना, स्पर्श करना, अनुभव करना और पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं।

मगर शंकराचार्य और पुलस्त्य यह कह रहे हैं, कि एक सौ आठ ग्रंथियां हैं। एक सौ आठ में से यदि दस इन्द्रियों का ज्ञान है, तो उसके बाद अट्ठानवे इंद्रियां कहां चली गई?

– उनका आपको ज्ञान नहीं है।

जिनका ज्ञान है, वो मैंने आपको बता दिया है। हाथ का ज्ञान है, आप हाथ हिला देते हैं, परन्तु आपको केवल दस परसेन्ट ही ज्ञान है, और जब आपको अट्ठानवे इंद्रियों की

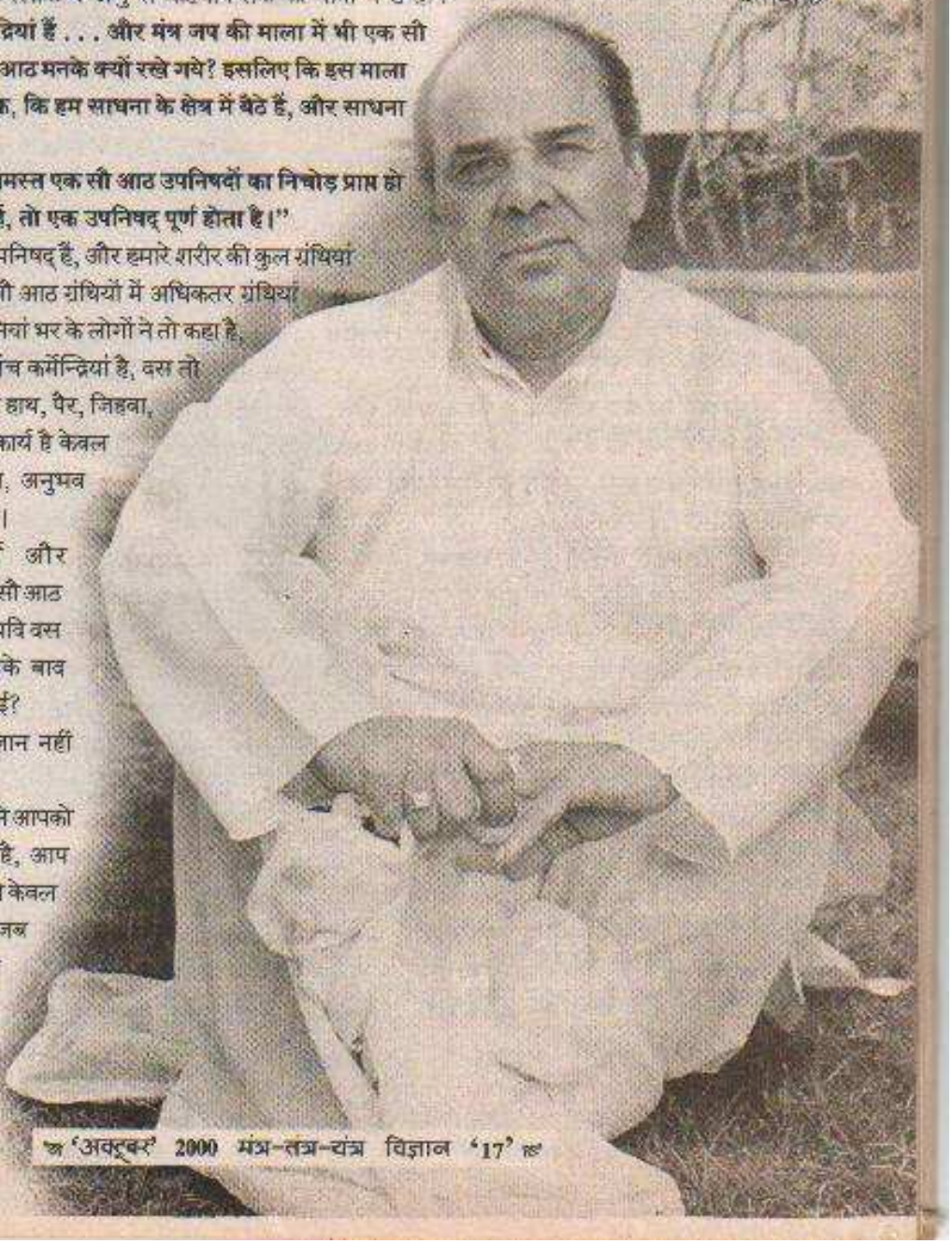

जानकारी नहीं है, तो आप उनका उपयोग भी नहीं कर सकते . . . और नहीं कर सकते, इसलिए आप पैदा होते हैं और मर जाते हैं।

अब आप पैदा तो हो गये, पर आपको यह मालूम नहीं, कि आपको पहुंचना कहां पर है? और मालूम इसलिए नहीं, क्योंकि आपके पास कोई गुरु ही नहीं हैं। अगर हैं, तो ऐसे जिनको खुद ही ज्ञान नहीं, वे तो खुद पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां लिये बैठे हैं – बच्चा राम-राम बोलो, सदा सत्य बोलो – अब राम-राम बोलो, और सदा सत्य बोलो से तो उस यात्रा की पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकते।

– क्योंकि सहस्रार को जाग्रत करना ही पूर्णता है। एक हजार नाड़ियों से मिलकर जो गुच्छा बना है, वह सहस्रार है। अगर आपने मधुमक्खियों का छत्ता देखा होगा, तो ठीक वैसे ही सहस्रार होता है। आपको ज्ञान नहीं है, कि आपका मन कहां पर है? दिल तो सीने में लेफ्ट साइड में पड़ा है, यहां तक तो विज्ञान पहुंचा है, मगर . . . मेरा मन कह रहा है, कि आज गर्मी बहुत है . . . मेरा मन कह रहा है, कि आज मैं बगीचे में घूम कर आऊं . . . हृदय नहीं कह रहा, हृदय तो दूसरी चीज है उसका काम तो धड़कना है। मन का काम है – भावनाओं को उजागर करना, कि यह मुझे अच्छा लगता है या बुरा लगता है।

– और मैं पूछ रहा हूं उन डाक्टरों से, कि यह मन कहां पर है, मुझे निकाल कर दिखाएं तो सही।

परन्तु उनका कहना है – नहीं, मन तो होता ही नहीं।

जब मन है, ही नहीं, तो फिर मन ऐसा क्यों कह रहा है, कि मुझे यह पसन्द है। वास्तव में उनको खुद ही ज्ञान नहीं है, कि यह मन कहां पर है? उनको खुद ही ज्ञान नहीं है, कि ये जो मस्तिष्क में ऊपर सहस्र छत्तों की तरह बना हुआ है, वह सहस्रार क्या चीज है?

एक लुहार का बेटा आसानी से एक लोहे की कील बना देता है। यदि मैं लोहे की कील बनाऊंगा, तो या तो हाथ कुचल लूंगा, या पैर काट लूंगा, पर लोहे की कील मुझसे नहीं बन पाएगी, पर उसे लुहार बना देगा।

अब जो ज्ञानी है, वही तो आपको बताएगा, कि मन कहां है? प्राचीन काल में पूर्वजों को यह ज्ञान था, उनका पूर्ण सहस्रार जाग्रत था, इसलिये उनके बेटों को भी ज्ञान था, और इसलिए उस समय जो ऋषि पैदा हुए, उनके पुत्र भी ऋषि ही हुए। ऋषियों को हमने त्रिकालज्ञ कहा, तीनों लोकों को देखने वाला कहा . . . और काल क्या होता है?

"कालोऽयं निर्विधाः विपुश्च सत्यः"

"काल का अर्थ है – जो ज्ञात नहीं हो सके, जिसको समाप्त कर ही नहीं सकते वह काल है।"

मैं यहां से ठेठ उस दीवार तक देख लेता हूं, क्योंकि बीच में कहीं कोई बाधा नहीं है, इसलिए मेरी दृष्टि वहां तक पहुंच रही है . . . और काल का भी कोई अवरोधक नहीं होता। काल अपने-आप में एक पूर्ण

इकाई है, हम उसके टुकड़े नहीं कर सकते। हवा के टुकड़े नहीं हो सकते, यह अलग बात है, कि आप हवा को अलग-अलग गुब्बारों में भर दें। वो तो आप भर रहे हैं, पर हवा अपने आप में विभाजित नहीं हो सकती। पानी के टुकड़े नहीं किये जा सकते, उसी प्रकार से काल के भी टुकड़े नहीं किये जा सकते। समय तो अपने-आप में पूर्ण एक पट्टी है, इस किनारे पर खड़े होकर दूसरे किनारे पर दिखाई देगा, जरूरत है तो क्षमता की।

– और काल तो अत्यन्त लम्बा-चौड़ा है।

आज से पच्चीस हजार वर्ष पहले की जो घटना है, और जो पच्चीस हजार वर्ष बाद की घटना है, वह पूरी एक इकाई है, उसको काल कहते हैं। यदि एक सिरे से हम देखें, काल का दूसरा सिरा दिखना ही चाहिए। व्याकरण में समझाया जाता है, कि एक भूतकाल होता है, एक वर्तमान काल होता है, तथा एक भविष्य काल होता है। किसी से पूछें – काल कितने प्रकार के होते हैं? तो वह कहेगा तीन तरह के होते हैं, और हमने यह सब व्याकरण में पहली-दूसरी क्लास में पढ़ा है।

मगर मैं कहता हूं, कि वर्तमान काल जैसी कोई चीज है ही नहीं। काल तो केवल दो ही होते हैं – भूतकाल और भविष्य काल। जो कुछ बीत चुका वह भूतकाल है। इस समय ठीक तीन बजे हैं, तो दो बजकर उनसठ मिनट और उनसठ सेकेण्ड भूतकाल है। जैसे – एक सेकेण्ड पहले की घटना भूतकाल है, और एक सेकेण्ड आगे की घटना भविष्य काल है। वर्तमान तो अपने-आप में दोनों कालों को पहिचानने की क्षमता है . . . दोनों कालों के बीच में जो खड़ा है, वह मनुष्य है, एक मनुष्य ही खड़ा हो सकता है दोनों कालों के बीच में, पशु नहीं। पशु पीछे का भी चिन्तन नहीं कर सकता और आगे का भी चिन्तन नहीं कर सकता, इसलिए तीसरा काल है ही नहीं।

तीसरा, जिसे हम वर्तमान काल कहते हैं, उसको **'काल पुरुष'** कहा गया है।

काल पुरुष मनुष्य को कहा गया है, भगवान को कहा गया, क्योंकि वही उस क्षण विद्यमान रहता है, जिसे हम वर्तमान कहते हैं। उसी में क्षमता है आगे और पीछे देख सकने की। मैं देख सकता हूं, कि भविष्य क्या है, और भूत क्या है . . . मगर दुर्भाग्य तो यह है, कि काल के देख सकने की क्रिया हमें ज्ञात नहीं, इसलिए हमें भूतकाल का भी ज्ञान नहीं। एक घंटे बाद क्या होगा हमें ज्ञात नहीं, और आज से सौ साल पहले हमारे साथ क्या घटना घटी, वह भी हमें ज्ञात नहीं। ऐसा इसलिए, कि उस ग्रंथि का उपयोग करना हम भूल गए, जिसके माध्यम से यह अनुभव हो सकता है। आंख एक ग्रंथि है, इसके माध्यम से हम देख सकते हैं, और सहस्रार भी एक ग्रंथि है, जिसके माध्यम से हम भूतकाल और भविष्य काल को देख

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सकते हैं। उस ग्रंथि में अपने-आप में जड़ता है, क्योंकि उस ग्रंथि में स्पन्दन नहीं रहा।

– यदि मेरे घुटने बिलकुल खराब हो जाएं, तो मैं चल नहीं पाऊंगा। जोड़ों में बहुत ज्यादा दर्द होता है, तो लोग मुश्किल से चल पाते हैं, अगर साल दो साल निष्क्रिय पड़े रहें, तो वे चल भी नहीं सकते, क्योंकि चलने से सम्बन्धित ग्रंथि काम करना बन्द कर देगी।

– इस प्रकार शरीर के जिस किसी अंग का उपयोग नहीं किया जाए, वह धीरे-धीरे काम करना बन्द कर देगा, निष्क्रिय हो जाएगा।

आपने हठ योगियों के बारे में तो सुना ही होगा, एक हठयोगी पन्द्रह साल बिलकुल हाथ ऊपर किए हुए खड़ा रहा . . . और चिड़िया ने वहां घोंसला बनाया, अंडे दिए, और बच्चे, चिड़ियां बनके उड़ भी गये . . . परन्तु उसने पन्द्रह साल तक हाथ यों ही रखा, नीचे नहीं उतारा, और जब पन्द्रह साल के बाद हाथ नीचे उतारने की कोशिश की, तो हाथ नीचे नहीं उतरा, क्योंकि हाथ की ग्रंथि, उसकी मांसपेशियां जाम हो गयी, फिर उसका जिन्दगी भर हाथ ऐसे ही रहा, मरने पर भी हाथ वहीं रहा, क्योंकि हाथ से सम्बन्धित इंद्रियों ने भी वर्क करना बन्द कर दिया था।

– और हमने सहस्रार ग्रंथि का उपयोग नहीं किया, तो उसने भी वर्क करना बन्द कर दिया है, जिन्दा तो है मगर वह एक्टिव नहीं है। मैंने कहा, कि नब्बे प्रतिशत हमारा मस्तिष्क एक्टिव नहीं है। जब कोई ग्रंथि कार्य नहीं करती, तो उससे सम्बन्धित कार्य भी हम नहीं कर पाते। आंख फूट जाएगी, तो हम देख नहीं पाएंगे।

सहस्रार ग्रंथि में कोई स्पन्दन नहीं है, इसलिए वह देख नहीं पा रही है। ज्योंही सहस्रार जाग्रत होता है, तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। उसका काम ही है, पूरे भूतकाल और भविष्यकाल को देख लेना।

पांच हजार साल पहले शंकराचार्य कहां घूमे, कहां रहे – हम इसके माध्यम से देख सकते हैं, और इसी तरह से हम भविष्य को भी देख सकते हैं, कि मैं दो साल बाद कहां जाऊंगा। इस पूरे जीवन को पूर्ण समग्रता के साथ देखने की जो क्रिया है, वह सहस्रार ग्रंथि के माध्यम से ही सम्भव है। अथवा छठी इंद्रिय को जाग्रत

इसी सहस्रार ग्रंथि कहते हैं। मनुष्य का उस ग्रंथि करने की प्रक्रिया को **क्रिया योग** से संयोग करने को **क्रिया योग** कहते हैं।

अब आप पूछेंगे – ''क्या जरूरत है इस ग्रंथि को जाग्रत करने की?''

तो मैं पूछता हूं – ''आपको आंख की क्या जरूरत है? आप लकड़ी के सहारे भी चल सकते हैं, फिर आपको आंख की जरूरत ही क्या है?''

– सहस्रार जाग्रत नहीं है, इसीलिये तो हम दुःखी रहते हैं, कि भगवान जाने चार महीने बाद क्या होगा?

– परन्तु भगवान कौन सा?

हम तो खुद कह रहे हैं – **''अहं ब्रह्माऽस्मि,''** मैं ब्रह्म हूं, और मैं सब कुछ जानता हूं, तो भगवान फिर कौन सा है?

– और यह ऊहापोह की स्थिति इसलिए है, क्योंकि जो हमारा चेतनायुक्त स्थान है, वह अपने-आप में सक्रिय नहीं है। हमारे शरीर के कई अंग सक्रिय नहीं है – वे जिन्हें हम मूलाधार, स्वाधिष्ठान, आज्ञा चक्र कहते हैं, उनमें निहित शक्ति अभी सुप्तावस्था में है।

आप पूछेंगे – क्या मूलाधार होता है गुरुजी?

मैं आप से पूछ रहा हूं – क्या हृदय होता है? क्या अनुभव किया जा सकता है, कि हृदय है?

– यदि यहां चीरा लगाएं, तो देख सकते हैं।

– यदि ऑपरेशन द्वारा चीरा लगाएं, तो जैसा मूलाधार का आकार बताया है, बिलकुल वैसा ही नाड़ियों का गुच्छा दिखायी पड़ता है . . . अब उसको स्पन्दित करने की जरूरत है, जब उसको छेड़ेंगे, तो वह अपने-आप जाग्रत होगा . . . और जाग्रत होगा, तो उसका जो काम है, वह अपने-आप करने लग जाएगा। उस आदमी को एहसास होगा, कि पिछले जीवन में तो यह था ही, और इस जीवन में भी यह है, और आगे भी यह होगा। ये कृष्ण खड़े हैं, यह द्वारिका है – ये सब प्रक्रिया क्या है? इन सारी घटनाओं को देख पाने की क्षमता को त्रिकाल दर्शिता कहते हैं। एक काल तो मैं हूं ही, एक भूतकाल और एक भविष्य काल इन तीनों को मिलाकर मैं काल पुरुष सिद्ध होता हूं।

इस सारी ऐक्टिविटी को हिन्दी में क्रिया कहते हैं, और इन सारी क्रियाओं से मनुष्य को जोड़ने की प्रक्रिया को क्रिया योग कहते हैं।

इस क्रिया योग के माध्यम से हम एक कला से छलांग लगाकर सीधा पांचवी कला पर पहुंच सकते हैं, दूसरी तीसरी कला पर रुकने की जरूरत नहीं है।

क्रिया योग सिद्ध होने का मतलब है, आप पांचवी कला पर हैं। सोलहवी कला तो दूर है, परन्तु आप यदि पांचवी कला पर जाना चाहें, तो क्रिया योग का अभ्यास करिये, और यदि आपको सोलहवी कला पर जाना है, तो भी रास्ता यही है क्रिया योग का। कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से, और इसके माध्यम से . . . जब हम आगे बढ़ेंगे, तो अपने-आप में जीवन की पूर्णता प्राप्त हो जाएगी।

महात्मा गांधी जैसे व्यस्त व्यक्तित्व ने भी स्वामी योगानन्द से प्रार्थना की – "यदि आप प्रसन्न हैं, तो कृपया मुझे क्रिया योग सिखा दीजिए।"

और वशिष्ठ ने भी यही इच्छा की अपने गुरु से – "ब्रह्मा! यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे क्रिया योग सिखा दीजिए।"

शंकराचार्य ने कहा है –

"पूर्वर्द्धा पूर्व भवेत पूर्व सः क्रियां पूर्वमेव तुल्यं"

क्रिया योग जैसी कोई अन्यतम विधा नहीं है, परन्तु आज क्रिया योग को समझने वाले व्यक्तित्व नहीं है। क्रिया योग पर सुनने वाला व्यक्ति तो हो सकता है, पर क्रिया योग पर बोलने वाला, समझने-समझाने वाला व्यक्तित्व दुर्लभ है।

– क्योंकि पूरे एक सौ आठ उपनिषदों को मंथन करके जिस रस को निकालते हैं, उसको क्रिया योग कहते हैं।

(प्रथम खंड)

– पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

तिब्बती धन प्रदाता लामा यंत्र

दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं . . . इस के लिए कहने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो अपनी उपस्थिति मात्र से अपनी सुगंध से ही आस पास के लोगों को एहसास करा देता है, अपने होने का . . . उत्तम कोटि के मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित दिव्य यंत्रों के लिए भी किसी विशेष साधना विधान की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे यंत्र तो स्वयं ही दिव्य रश्मियों के भण्डार होते हैं, जिनसे रश्मियां स्वतः ही निकल कर सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति एवं स्थान को चैतन्य करती रहती हैं। हिमालय की पहाड़ियों पर बसा तिब्बत देश क्षेत्रफल में छोटा अवश्य है परन्तु तंत्र क्षेत्र में जो उपलब्धियां तिब्बत के बौद्ध लामाओं के पास हैं, वे आम आदमी को आश्चर्यचकित कर देने और दांतों तले उंगलियां दबा लेने के लिए पर्याप्त हैं। ऐसे ही एक सुदूर बौद्ध लामा मठ से प्राप्त गोपनीय पद्धतियों एवं मंत्रों से निर्मित व अनुप्राणित यह यंत्र साधक के आर्थिक जीवन का कायाकल्प करने में पर्याप्त है।

इस यंत्र के स्थापन से तिब्बती लामाओं की धन देवी का वरद साधक के घर को धन-धान्य, समृद्धि से परिपूर्ण कर देता है, फिर अभाव उसके जीवन में नहीं रहते, ऋण का बोझ उसके सर से हट जाता है और उसे किसी के आगे हाथ नहीं पसारने पड़ते।

विधि -- किसी रविवार की रात्रि को यह यंत्र लाल कपड़े में लपेट कर ॐ मणिपद्मे धनदाये हुं ॐ फट् मंत्र का ११ बार उच्चारण कर मौलि से बांध दें। फिर इसे अपने घर की तिजोरी में रख दें। इससे निरन्तर वृद्धि होगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं ४ को स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क – 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 30/- Annual Subscription 195/- + 30/-postage

सम्पर्क : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India.
Phone : 0291-432209 Fax-0291-432010

निम्न साधना से सभी आवासीय बाधाओं से मुक्ति मिल सकती है।

गृहलक्ष्मी तो आपके साथ है लेकिन आपका स्वयं का घर भी तो हो !!!

गृहस्थ जीवन का आधार है गृहलक्ष्मी, श्रेष्ठ गृह और उसी से बनती है श्रेष्ठ गृहस्थी !!!

संसार में सबसे कठिन धर्म गृहस्थ धर्म निभाना है, गृहस्थ धर्म अनेक व्यवस्थाओं, बंधनों में जकड़ा हुआ अवश्य रहता है, लेकिन इसके साथ ही परमात्मा और प्रकृति की निरन्तर रचना अभिवृद्धि गृहस्थ के माध्यम से ही सम्भव है। गृहस्थ के जीवन में पग-पग पर समस्याएं अवश्य आती है। उसके लिए जीवन का प्रत्येक दिन कुरुक्षेत्र के समान होता है। प्रत्येक गृहस्थ अपने जीवन में तीन इच्छाएं अवश्य रखता है। प्रथम श्रेष्ठ पत्नी हो जिसे गृहलक्ष्मी कहा जाता है, दूसरी इच्छा यह रहती है कि उसका स्वयं का अपना घर हो, और तीसरी इच्छा श्रेष्ठ संतान हो। मनुष्य अपने स्वअर्जित धन से भूमि खरीदता है और उस पर अपना स्वयं भवन, मकान बनाता है। तो उसके मन में प्रसन्नता सहस्र गुणा हो जाती है। लोकोक्ती में कहा भी गया है कि किराये के महल से खुद की झोपड़ी अच्छी होती है।

मनुष्य के जीवन में जमीन, घर उसके कर्म और भाग्य दोनों पर निर्भर अवश्य करते हैं। आइए ज्योतिषीय दृष्टि से विचार करते है कि ग्रहों की स्थिति ग्रहदशा किस प्रकार की होती है तब जीवन में भूमि क्रय के योग बनते है और कब जीवन में भवन निर्माण के योग बनते है।

ज्योतिषीय दृष्टि से भूमि क्रय करने के योग

१. द्वितीयेश बुध उच्च का होकर पंचमभाव में स्वयं सूर्य के साथ स्थित हो तथा भाग्यभाव का स्वामी शनि दशम भाव में स्थित हो तो इन्हीं ग्रहों की महादशा अन्तरदशा में भूमि क्रय होगा।

२. तुला लग्न में शनि और केतु स्थित हो तथा मंगल उच्च का होकर चतुर्थ भाव में और बृहस्पति के साथ चन्द्रमा गजकेशरी योग बनाता हो तो शनि अथवा बृहस्पति और मंगल के संयोग के समय भूमिक्रय संभव है।

३. उच्च का राहु (जैसा इस समय चल रहा है) यदि कुंडली में हो और द्वितीयेश, चतुर्थेश, भाग्येश प्रबल हो तो भूमि का क्रय संभव है।

४. उच्च का शुक्र और स्वयं राशि का शनि हो, द्वितीय भाव बलवान हो तो खेती अथवा बाग-बगीचे की भूमि खरीदना संभव होता है।

५. द्वितीय भाव में मेष का सूर्य और सूर्य से बारहवें तथा दूसरे भाव में चन्द्रमा, राहु और केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो भूमिक्रय संभव होता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

६. चतुर्थ भाव में बृहस्पति उच्च का होकर दशमभाव में और चन्द्रमा उच्च का होकर द्वितीय भाव में तथा सूर्य आयभाव में बुध के साथ हो तो श्रेष्ठ भूमि का स्वामित्व प्रदान करता है।

७. जन्म पत्रिका में उभयचरी योग गजकेसरी योग के साथ हो दो ग्रह उच्च के अथवा स्वयं राशि के हो तो जातक भूमि खरीदने में अथवा उत्तराधिकार में प्राप्त करने में सफल होता है।

८. लग्न में बुध और मंगल हो और उस पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तथा द्वितीयेश की पूर्ण दृष्टि भी ऐसे मंगल पर पड़ रही हो तो भूमि खरीदना संभव होता है।

९. द्वितीय भाव में उच्च का बृहस्पति चन्द्रमा के साथ और भाग्य भाव में अपनी ही राशि का शनि केतु के साथ हो, लग्न में बुध अदित्य योग हो तो भूमि खरीदना संभव हो पाता है।

भवन निर्माण करने के योग

१. द्वितीय भाव में स्वः राशि अथवा उच्च का चन्द्रमा स्थित हो उस पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो, चतुर्थ भाव का स्वामी भी उच्च का होकर अथवा स्वराशि का होकर भाग्येश, लग्नेश और पंचमेश बलवान हो तभी भवन निर्माण संभव हो पाता है।

२. भवन निर्माण करने के लिए जन्म चक्र में केमद्रुम योग नहीं होना चाहिए अन्यथा मकान बनाकर के भी गंवाना अथवा बेचना पड़ जाता है।

३. जिसकी कुंडली में शनि के द्वारा चन्द्रमा, अनफा-सुनफा योग बनता है और उसके साथ ही दुर्धरा योग भी हो और शुक्र प्रबलकारक ग्रह हो तभी मकान निर्माण संभव होता है।

४. लग्नाधिपति, धनेश, आयेश, चतुर्थेश और भाग्येश के अनुकूलतम सहयोग और प्रबल कारकत्व में भवन निर्माण संभव होता है।

५. चन्द्रमा से तीसरे स्थान पर मंगल हो, मंगल से सातवें भाव में शनि हो, शनि से सातवे भाव में शुक्र हो और शुक्र से सातवें भाव में चन्द्रमा युक्त बृहस्पति हो अथवा चन्द्रमा से दृष्ट बृहस्पति हो साथ ही महादशा भी अनुकूल हो तो व्यक्ति श्रेष्ठतम भवन निर्माण करता है।

भारत के श्रेष्ठतम महलों और मंदिरों आदि का निर्माण ऐसे ही समय में किया गया है।

६. यदि सूर्य से दूसरे भाव में बुध हो, बुध से ११ वे भाव में चन्द्रमा और चन्द्रमा से पांचवे या नवे भाव में बृहस्पति हो ऐसे समय में खरीदा गया अथवा बनाया गया मकान इतना शुभ होता है कि भवन स्वामी उसके बाद मकान पर मकान बनाता चला जाता है और उसे पीछे मुड़कर कभी नहीं देखना पड़ता।

७. केन्द्र या त्रिकोण में चार ग्रह यदि उच्च के हो तथा केमद्रुम योग न हो तो भवन निर्माण संभव है।

८. दूसरे भाव का स्वामी बृहस्पति उच्च का होकर नवमभाव में स्थित हो तथा दसम स्थान का स्वामी बुध के साथ स्थित हो तो श्रेष्ठ भवन निर्माण होता है।

९. पंचम और नवम भाव के स्वामी केन्द्र में हो और उन पर बुध, चन्द्र, बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही हो और कालसर्प योग न हो तो श्रेष्ठ भवन निर्माण होता है।

१०. द्वितीय स्थान में उच्च का शुक्र हो और पंचम स्थान में उच्च का राहु, भाग्य भाव में उच्च का शनि हो तो श्रेष्ठतम भवन का निर्माण संभव होता है।

ज्योतिष और भूलक्ष्मी

बृहद पाराशर संहिता जो कि ज्योतिष ज्ञान के सम्बन्ध में आधारभूत ग्रंथ है उस ग्रंथ में भवन और भूमि के सम्बन्ध में कई विशेष बातें कही गई है।

१. जातक की जन्मपत्रिका में लग्नेश, द्वितीय, चतुर्थेश, भाग्येश ग्रह बलवान हो तो व्यक्ति भूमि और भवन अधिपति होता है।

२. धनभाव अर्थात द्वितीय भाव का स्वामी ग्रह कारक ग्रह होकर यदि उच्च भाव का अथवा स्वराशि का स्थित हो तो व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठ भवन का स्वामी बनता है।

३. लग्नेश और भाग्येश का आपसी सम्बन्ध है और दोनों मित्र ग्रह हो तो भवन निर्माण की स्थिति बनती है।

४. सामान्यतः भवन निर्माण के विशेष योग मुहूर्त २५ मार्च से १५ मई के बीच और १५ सितम्बर से १५ अक्टूबर के बीच में बनते है क्योंकि इस समय सूर्य, बुध और शुक्र स्वराशि में अथवा उच्च राशि में विचरण करते है।

५. सारांश के रूप में यह कहना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं का भवन निर्माण अथवा बना बनाया भवन क्रय हेतु निरन्तर प्रयत्नशील अवश्य रहे।

६. जो व्यक्ति नया भवन बनाते है उन्हें वास्तु शास्त्र के अनुसार निर्माण करना चाहिए जो व्यक्ति बना बनाया भवन खरीदते है उन्हें गृहप्रवेश के समय वास्तु देव का विशेष पूजन नवग्रह पूजन, गुरु पूजन कुल देवता पूजन अवश्य ही सम्पन्न कराना चाहिए।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाए तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्र का पते लिखकर भेजे कार्ड मिलने पर रु. 438/- की वी. पी. पी. द्वारा आपको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'वासुधा लक्ष्मी यंत्र, 'वसुधा सौभाग्य नीली हकीक माला' भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जावेगी।

गुरु एक शब्द नहीं . . . कुछ अक्षर नहीं . . . एक सम्पूर्णता है, जीवन की मिठास है, देह को ऊपर उठाने की क्रिया है, जहर को अमृत बना देने का गोपनीय रहस्य है . . .

–

✱–पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी ✱

वसुधा लक्ष्मी सिद्धि

किसी भी बुधवार को प्रातः अपनी दैनिक साधना पूर्ण कर पीले रंग के सूती आसन पर पूर्व दिशा की और मुंह कर बैठे अपने सामने एक थाली पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं स्वस्तिक में चार सुपारी स्थापित करे मध्य में एक अक्षत की ढेरी बनाकर उसमें पुष्प रखें पुष्प के ऊपर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त भूमि सिद्धि भवन सिद्धि प्राणश्चेतना मंत्रों से अनुप्राणित **वसुधा लक्ष्मी यंत्र** स्थापित करें।

सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मी का ध्यान करें–

यावच्चद्रश्च सूर्य्यश्च यावद् देवा वसुन्धरा।
तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव ॥१॥
यावद् ब्रह्मादयो देवामनुभुञ्ज चतुर्दश।
तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव ॥२॥
यावत् तारागणाकाशे यावद् इन्द्रादयोऽमराः।
तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव ॥३॥

विनियोग

ॐ अस्य श्री पृथ्वी मंत्रस्य वराह ऋषिः त्रिवृच्छंदः वसुधा देवता, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

इसके पश्चात अपनी मनोकामना दोनों हाथ जोड़कर सदगुरु के समक्ष व्यक्त करें। बायें हाथ में स्वस्तिक पर रखी चारों सुपारी मुट्ठी में रखकर दाहिने हाथ से **'वसुधा सौभाग्य नीली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की चार माला मंत्र जप करें।

॥ ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा ॥

साधना के समय इस बात का ध्यान रखें कि बायें हाथ में चारों सुपारी कसकर पकड़ी हुई रहे मंत्र जप के पश्चात माला को यंत्र के सामने रख दें। चारों सुपारी को बायें हाथ से दाहिने हाथ में लेकर मुट्ठी बांध कर अपने सिर पर चार बार घुमाएं और किसी चौराहें पर जाकर चारों दिशाओं में ये चारों सुपारी फेक दें।

इस प्रकार यह साधना चार बुधवार सम्पन्न करनी है हर बार नया स्वस्तिक बनाकर नई सुपारी प्रयोग में लानी है चार बुधवार बाद ये साधना सम्पन्न कर लक्ष्मी आरती अवश्य सम्पन्न करें और यंत्र एवं माला वरुण देवता अर्थात जल को जलाशय में समर्पित कर दें। यह एक अत्यन्त सिद्धिदायक श्रेष्ठ प्रयोग है जिससे भूमि एवं भवन सम्बन्धि मनोवाछित कार्यों में शीघ सफलता प्राप्त होती है।

लक्ष्मीम मलां देवीं सर्व शक्ति समन्विताम

कमला ही लक्ष्मी का मूल स्वरूप है।

लक्ष्मी का शुद्ध स्वरूप कमला ही है

तंत्र शास्त्रों में लक्ष्मी की पूजा कमला स्वरूप में की जाती है और लक्ष्मी से सम्बन्धित पूर्ण तंत्र को कमला तंत्र कहा जाता है। दीपावली के दूसरे दिन करें, या कभी भी करें एक शाश्वत प्रयोग

देवी कमला महालक्ष्मी स्वरूपा जगत की आधार हैं जिनके बिना सृष्टि के सारे चक्र अधूरे रह जाते हैं। महामाया कमला आद्या शक्ति हैं, जिनकी कृपा दृष्टि से ही ब्रह्मा एवं अन्य देवता शक्ति प्राप्त करते हैं और जो साधक महामाया पूर्ण लक्ष्मी भगवती कमला को हृदय से नमन करता है, उसकी कभी भी दुर्गति नहीं हो सकती। ऐसा साधक निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर अनन्त, अलौकिक वैभव, धन-धान्य, सम्मान, कीर्ति प्राप्त करता है।

कमला तंत्र

वास्तव में ही लक्ष्मी की साधना तंत्र मार्ग से ही सम्भव है और यह कमला साधना द्वारा सहज सम्भव है। कमला तंत्र में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जीवन में अतुलनीय धन वैभव प्राप्त करने के लिए कमला साधना आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा ही

भगवती कमला साधना

जीवन में वह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो कि आज के मनुष्य को चाहिए।

सबसे बड़ी बात यह है कि कमला साधना एक तरफ जहां पूर्ण मानसिक शांति और सिद्धि प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अतुलनीय वैभव और अनायास धन प्राप्ति होती रहती है। तंत्र में इसके द्वादश नाम स्पष्ट हुए हैं। यदि कोई साधक केवल इन द्वादश नामों का उच्चारण नित्य कर लेता है, तो भी उसे सिद्धि प्राप्त हो जाती है। फिर यदि कोई कमला जयंती के अवसर पर एक बार भली प्रकार से कमला साधना सम्पन्न कर लेता है, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही कैसे सकता है। कमला के द्वादश नाम निम्नलिखित हैं –

१ महालक्ष्मी, २ ऋणमुक्ता, ३ हिरण्यमयी, ४ राजतनया, ५ दारिद्र्यहारिणी, ६ कांचना, ७ जया, ८ राजराजेश्वरी, ९ वरदा, १० कनकवर्णी, ११ पद्मासना, १२ सर्वमांगल्य युक्ता।

कमला प्रयोग

यदि तांत्रिक दृष्टि से कमला साधना सम्पन्न की जाती है, तो निश्चित ही साधक अश्चर्यजनक उपलब्धियां अनुभव करने लगता है, जो तंत्र के क्षेत्र में थोड़ी बहुत भी रुचि रखते हैं, वे कमला तंत्र के नाम से परिचित है, और वे यह भी जानते है कि यह तंत्र कितना महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। एक प्रकार से देखा जाय तो कमला तंत्र सर्वथा गोपनीय ही रहा है, मगर जो साधक पूर्ण निष्ठा के साथ इस कमला तंत्र को सिद्ध कर लेता है, उसे जीवन के समस्त सुख, वैभव और सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। दरिद्रता तो हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, अनायास धन प्राप्ति की सम्भावनाएं बन जाती हैं, और साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करता हुआ सही अर्थों में वैभव युक्त बन जाता है।

साधक प्रातः काल उठकर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाए और फिर साधना प्रारम्भ करें। साधना प्रारम्भ करने से पूर्व पूजन सामग्री अपने सामने रख दें, जिसमें जलपात्र, केसर, अक्षत, नारियल, फल, दूध का बना प्रसाद, पुष्प आदि हो। कमला साधना में अष्टगंध का प्रयोग ज्यादा महत्वपूर्ण माना गया है, अतः साधकों को चाहिए कि वे पहले से ही अष्टगंध प्राप्त कर उसे घोल कर अपने सामने रख लें।

कमला यंत्र

तांत्रोक्त कमला साधना का आधार कमला यंत्र ही है। क्योंकि यह पूर्ण रूप से प्रभाव युक्त और सिद्धिदायक है। कमला तंत्र में यंत्र के बारे में बताया है, कि यह पूर्ण विधि के साथ षट्कोण सहित अष्टदलों से युक्त महत्वपूर्ण यंत्र हो –

अनुक्तकल्पे यंत्रस्तु लिखेत्पद्मदलाष्टकम् ।
षट्कोणकर्णिकतंत्र षेवद्वारोपशोभितम् ॥

यह यंत्र ताम्र पत्र पर अंकित हो, साथ ही साथ कमला तंत्र में बताया गया है, कि जब तक तंत्रोद्धार सम्पन्न यंत्र न हो तो उसका प्रभाव नहीं होता, तंत्रोद्धार में बारह तथ्य स्पष्ट किये गये हैं, बताया है कि इन तत्वों को सम्पन्न करके ही यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

कमला तंत्र के अनुसार –

१. यह शुद्धता के साथ विजय काल में अंकित किया जाना चाहिए,
२. इसका पूर्ण रूप से मंत्रोद्धार हो,
३. यह वाग बीज से सम्पुटित हो,
४. लज्जा बीज के द्वारा इसका अभिषेक हो,
५. श्री बीज के द्वारा यह यंत्र सिद्ध हो,
६. काम बीज के द्वारा यह वशीकरण युक्त हो,
७. पद्म बीज के द्वारा यह प्रभाव युक्त हो,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

८. जगत बीज के द्वारा यह आकर्षण युक्त हो,

९. रुद्र बीज द्वारा वह शौर्य युक्त हो,

१०. मनु बीज के द्वारा मन पर नियंत्रण प्रदान करने वाला हो,

११. ऐं बीज के द्वारा वैभव प्रदान युक्त हो,

१२. रमा बीज के द्वारा सिद्धि दायक हो।

तारं पूर्वं लिखित्वा परमतमतं वाग्भवं बीजमन्य त्स्वज्जा श्री बीज पूर्ववश-करण-तमं काम बीजं परस्तात्। हसौः पश्चाद् जनीयंनसुयुतमथः जगत् पूथिकाद्यः प्रचूत्वा हेन्तं रूपं तमरोतं लिखित मनु विधुर्मन्त्रमुक्तं रमाद्याः ॥

वास्तव में ही **कमला यंत्र** पूर्ण रूप से सिद्ध करना अत्यन्त पेचीदा और श्रमसाध्य कार्य है। इस प्रकार का यंत्र पूजा स्थान में स्थापित कर साधना प्रारम्भ करें। ऐसा यंत्र जहां उनके स्वयं के जीवन के लिए तो सौभाग्यदायक तो रहेगा ही, आने वाली कई-कई पीढ़ियों के लिए भी यह यंत्र भाग्योदयकारक बना रहेगा।

इस प्रकार के यंत्र को जल से फिर पचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर इस **'कमला यंत्र'** को स्थापित करना चाहिए। फिर साधक अलग पात्र में गणपति की स्थापना करें। दूसरे बाजोट पर नवग्रहों के प्रतीक स्वरूप में नौ सुपारी खाने बनाकर स्थापित करें और फिर एक थाली रख कर उस पर नया पीला वस्त्र बिछा दें, कपड़े के ऊपर सिंदूर से सोलह बिंदियां लगावें सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिंदियां चार पंक्तियों में, इस प्रकार कुल १६ बिंदियां लगाकर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा इलायची रख कर फिर इसका अष्टगंध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करें –

उद्यन्मार्तण्ड कान्ति विगलित कबरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगीम्।
वण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥
नाना रत्नैर्विभान्तां स्मित मुख कमलां सेवितां देव सर्वैः।
भार्या राज्ञीं नमो भूत स रवि कल तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम् ॥

जो साधक संस्कृत पढ़े-लिखे नहीं है, उनको चिन्ता नहीं करना चाहिए और धीरे धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान पढ़ सकते हैं।

इसके बाद ताम्र पत्र पर अंकित **कमला यंत्र** को जहां सोलह बिंदियां लगाई है, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ स्थापित करें, और अष्टगंध से इस यंत्र पर सोलह बिंदियां लगा दें। ये सोलह बिंदियां सोलह लक्ष्मी की प्रतीक मानी जाती है।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें –

आह्वान मंत्र

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे। श्री जगन्मातृ महालक्ष्म्यै देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। सर्वेष्ट सिद्धये मम धनाप्तये ममाभीष्टप्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावें उसका पूजन करें तत्पश्चात सुगन्धित अगरबती प्रज्जवलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहिनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें। सामने ताम्बूल, फल और दक्षिणा समर्पित करें।

तत्पश्चात साधक को चाहिए कि वह निम्न दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करे जो महत्वपूर्ण है, इसके द्वारा उस यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

इस कवच का उच्चारण सनत्कुमार ने भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किया था। कमला उपनिषद में भी इस लघु कवच का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रयोग है –

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा।
जिह्वायां मुख वृत्ते च कर्णयोर्वन्तयोर्नसि।
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णुरूपिणी।
हृदये मणि बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः।
स्वधा तु प्राण शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा।
पुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदावतु।
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर जेहिनी।
सर्वाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु माया सुरेश्वरी।
शिव दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।
पातु मां देव देवी च लक्ष्मीः सर्व समृद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षु युग्मे च शांकरी।
ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु मूले हनौ पुनः ॥
कर्ण युग्मे भुज द्वये स्तन द्वन्द्व च पार्वती ॥
पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा ॥

नर्वाजे पातु कामेशी महादेवी समुद्भवः ॥
ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु वल्लभा ॥
रमा पातु महा देवी पातु माथा स्वराट् स्वयं ॥
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥
भैरवी पातु भवने जया पातु सदा मम ॥
इति ते कथितं दिव्य कवचं सर्व सिद्धये ॥

वास्तव में ही यह कवच जो कि ऊपर स्पष्ट किया गया है यह अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसके जीवन में धन, वैभव, यश, सम्मान प्राप्त होता रहता है।

प्रयोग में इसका पांच पाठ करें, फिर **कमला माला** का पूजन करना चाहिए। यह कमला माला विशेष मंत्रों से सिद्ध और सूर्य मंत्रों से संगुफित होती है, जो कि वास्तव में ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इस माला को पहले से ही प्राप्त कर रख लेनी चाहिए।

इसके बाद साधक घी के सोलह दीपक लगा लें, फिर निम्न मंत्र की **सोलह माला** मंत्र जप उसी आसन पर बैठे-बैठे करें –

कमला मंत्र

॥ ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह सौः जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

जब **सोलह माला** मंत्र जप हो जाए तब भगवती लक्ष्मी की विधि विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें, तथा कमला माला को इस यंत्र के सामने या यंत्र के ऊपर स्थापित कर दे। भविष्य में जब भी कमला मंत्र का जप करना हो तो इसी कमला माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला फेरें।

वस्तुत यह मंत्र और तांत्रिक प्रयोग अपने आप में ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण है, साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही इस साधना को सम्पन्न करें और अनुभव करें कि आज के युग में भी साधनाएं कितनी शीघ्र और अचूक फल प्रदान करने में समर्थ हैं।

साधना सामग्री पैकेट – 330/-

गुरु गृह में दीपावली

भौतिक संसार में लक्ष्मी की कामना-इच्छा और वरण करना अनिवार्य ही है, प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में लक्ष्मी प्राप्ति के लिए ही अग्रसर होता है, उसके साथ ही साधनात्मक रूप से लक्ष्मी की पूर्ण अनुकम्पा भी चाहिए जिससे उसका कार्य रुके नहीं वह जो भी कार्य करें उससे अर्थ प्राप्ति अवश्य हो।

सदगुरुदेव ने एक नवीन परम्परा स्थापित की, हर वर्ष दीपावली के शुभ अवसर पर शिष्यों को आवाहन किया कि जिस प्रकार बिछड़ा बालक दीपावली के दिन घर आने के लिए लालयित रहता है परदेश में नौकरी व्यापार करने वाला ही यह इच्छा रखता है कि वह दीपावली के दिन अपने घर अवश्य पहुंचे ।

सदगुरुदेव ने एक बार अपने प्रवचन में कहा कि तुम शिष्य लोग अलग-अलग स्थानों पर नौकरी, व्यापार इत्यादि कर रहे हो। यह ठीक है लेकिन यह मत समझ लेना कि वो तुम्हारा घर है तुम्हारा घर तो गुरु गृह है और तुम सब मेरे बच्चे हो और दीपावली पर्व अपने बच्चों के साथ सम्पन्न करके ही मुझे प्रसन्नता होती है।

यह महान उदगार शाश्वत है और प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य है कि वह धनतेरस, रूपचतुर्दशी और दीपावली गुरु गृह में सम्पन्न करें।

इस वर्ष २६-२७ अक्टूबर को आपको गुरुधाम जोधपुर अवश्य ही आना है। गुरु परिवार के आप सदस्य हैं दीपावली पर्व केवल साधनात्मक शिविर अथवा उत्सव ही नहीं है अपितु इन दोनों से ऊपर एक महान विकास है। जब परिवार के सारे सदस्य एक साथ बैठकर आनन्द मग्न होते हैं। उस अवसर पर मनुष्य तो क्या देवगण और भगवान भी साक्षात् पूर्ण आशीर्वाद प्रदान करते ही हैं।

आपको जीवन में जीतना ही है

कई बार सदगुरुदेव बातो ही बातों में ऐसी बात कह जाते थे जिनके बारे में विचार कर अपने जीवन में प्रयोग लाए तो जीवन परिवर्तित होकर पूर्ण बन सकता है। ऐसे ही कुछ श्रेष्ठ सूत्र हो गुरु प्रसाद है इन्हें आप अपने जीवन में अवश्य ही लाएं।

१. आपका प्यार सब के दिलों को पिघला सकता है। सारे पशु पक्षी वृक्ष, हवा, जल परमात्मा की ही प्रसंशा कर रहे है आप भी लोगों का प्यार पाने के लिए उनसे प्यार तो करें।

२. आपके पास ईर्ष्या, गुस्से और निराशा के लिए समय नहीं होना चाहिए याद रखे कि आप भगवान के स्वरूप है जो आप बनना चाहते है वह बन सकते है। निश्चय ही भविष्य आपके हाथ में ही है।

३. हर समय सकारात्मक विचारधारा बनानी ही होगी, मैं कर सकता हूं करने की क्षमता परमात्मा अपने आप देगा जब आप यह पक्का विचार कर लेते है तो निश्चय ही सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

४. सफलता के बाद मिलने वाली खुशी की ओर अपना ध्यान रखें। सफलता एक यात्रा है मंजिल नहीं सफलता तो निरन्तर करते रहने में है।

५. आप अपना लक्ष्य बनाये की आप क्या प्राप्त करना चाहते है? उसके लिए कब क्या और कैसे करना है? इतना सोचकर काम में डट जाए काम लगातार लक्ष्य सामने रखकर करते रहें।

६. जीवन में आराम भी करें, इन्जाय भी करे, जिन व्यक्तियों के पास लक्ष्य नहीं होता वे हमेशा उदास और डिप्रेस रहते है।

७. आप अपनी शरीर रचना और शारीरिक शक्ति को बदल नहीं सकते लेकिन माइंड पावर की मदद से पूर्ण सफलता प्राप्त कर बुलंदियों की ऊचाई पर पहुंच सकते है।

८. कभी भी सतुष्टि भाव नहीं रखे अन्यथा आप एक तालाब बनकर रह जाएगे। नदी और समुद्र बनने के लिए निरन्तर गतिशील होना आवश्यक है।

९. परमात्मा के बनाये हुई सारी रचना पेड़, पौधे, जल, वायु, बालक और आप भी बढ़ रहे है। तो आप भी कहिए कि मैं करके रहूंगा भीतर ही भीतर यह बोलने से शक्ति प्राप्त होगी।

१०. बहस करने से आप किसी से जीत नहीं सकते लोग हमेशा अपनी बात ही कहना चाहते है। अच्छे श्रोता बनेगे तो लोग आपको अधिक चाहेगे।

११. कोशिश करे कि बहस न हो झगड़ा न हो गुस्से से बोलते हुए अपने माथे पर टेन्शन न लाए मुस्कराते हुए बात सुने इस तरह आप लोगों को खुशी देगे तो बदले मे खुशी ही आएगी।

१२. जब भी कोई बात सुने उस समय सामने वाले की आखों में ध्यान रखते हुए ध्यान से सुने और फिर सोच समझ कर जवाब दें।

१३. हमेशा दूसरों में जो भी अच्छाई है उसे देखने का प्रयास करे अच्छे कार्य के लिए अपने मित्रों अधीनस्थों परिवार के सदस्यों को कम्पलीमेन्ट अवश्य दें। मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ है वह प्रेम और कम्पलीमेन्ट का भूखा है।

१४. ईश्वर आपके अन्दर स्वप्न बनाता है तो यह अवश्य जानिए कि ईश्वर की अवश्य इच्छा है कि आपकी इच्छाएं पूर्ण हो आपको तो केवल काम करना है।

१५. मनुष्य का मस्तिष्क एक पावरफुल कम्प्युटर है जो इसमें डालेंगे वही तो बाहर आएगा। आपकी पांच इन्द्रियां हैं, देखना, सुनना, बोलना, स्वाद, गन्ध और स्पर्श इनके द्वारा ही सब कुछ मस्तिष्क में जाता है।

१६. मस्तिष्क एक थिंकिंग मशीन है जो कभी सोती नहीं, जो आप सोचेंगे बोलेंगे वही तो आप बनेंगे। जब कोई काम ड्यूटी समझकर करते हैं तो जिन्दगी गुलामी बन जाती है और जब कोई काम अपना समझ कर करते हैं तो काम में आनन्द आता है।

१७. मैं कामयाबी के लिए पैदा हुआ हूं, मैं कर सकता हूं, मैं करके रहूंगा, इस तरह कई बार दिन में जोर-जोर से बोलें जो बोलेंगे वही मिलेगा।

१८. सत्य ही शिव है शिव ही गुरु है तो फिर देर किस बात की, कभी इसी क्षण हमें प्रकाश की ओर ले जाने की क्रिया और प्रेरणा गुरुदेव हमें प्रदान करें।

★ काल चक्र ★

समय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग महत्व है। इस काल चक्र की गति के फलस्वरूप जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं, जिनमें कुछ विशेष साधनाओं को सम्पन्न करने पर सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। इस स्तम्भ के अंतर्गत ऐसे विशिष्ट साधना मुहूर्त को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिन में सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होती है।

६. अक्टूबर को प्रातः ६ बजे से सर्वार्थ सिद्धि योग अतिश्रेष्ठ मुहूर्त है। **इस काल में कार्य की पूर्णता हेतु साधना** सम्पन्न की जा सकती है। **श्री हरि बीज** (न्यौछावर ९०/-) को स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से करें तथा निम्न मंत्र का जप १५ मिनट तक करें–

॥ ॐ ह्रीं श्रीं हरिदेवाय सर्व कार्यसिद्धयै ह्रीं श्रीं ॐ नमः ॥

९ अक्टूबर को एकादशी का व्रत है इस दिन आप अपने सर पर से तीन बार **'गर्जीणा गुटिका'** (न्यौछावर ६०/-) को घुमाकर अपने सामने रखकर सिर्फ पांच मिनट निम्न मंत्र का जप करें –

॥ॐ गं गं गणपते सर्व मनोकामना गं गं ॐ नमः ॥

१३ अक्टूबर को पूर्णमासी है इस दिन आप सुबह ७.१० मिनट पर उठकर अपना दायां पांव पांच बार जमीन पर निम्न मंत्र बोलते हुए रखें। **ॐ पृथिव्यै नमः** इसके बाद अपने कुल देवता का ध्यान करें।

२५ अक्टूबर को धनत्रयोदशी है इस दिन आप सुबह उठकर **धनदा गुटिका** के समक्ष निम्न मंत्र का १५ मिनट तक जप करें।(न्यौछावर ७५/-)

॥ ॐ श्रीं श्रीं महालक्ष्मी प्रसन्न श्रीं श्रीं ॐ नमः ॥

९ नवम्बर को सिद्धि योग है इस दिन आप किसी भी प्रकार की **बाधा को समाप्त करने के लिए प्रयोग** किया जा सकता है। खाने वाले पान के सादे पत्ते पर कुंकुम से अपनी बाधा लिखें, उस पर **रुलक्ष गुटिका** (न्यौछावर १००/-) को रखें, फिर निम्न मंत्र का १० मिनट तक जप करें –

॥ ॐ ऐं रुद्राय सर्व बाधा निवारणाय फट् ॥

मंत्र जप के बाद गुटिका को जल में प्रवाहित कर दें।

११ नवम्बर को पूर्णमासी है इस दिन आप **अप्सरा साधना सम्पन्न कर तो शीघ्र ही सफलता मिलती है।** आप रात्रि १० बजकर १० मिनट पर अपने पूजा स्थान में अप्सरा माला से निम्न मंत्र का जप करें –

॥ ॐ ह्रीं अप्सरा सिद्धिं ह्रीं ॐ ॥

मंत्र का जप सिर्फ १५ मिनट तक करें उसके बाद माला को सवा महीने तक एक घंटे पहना करें। सवा माह के बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें।(न्यौछावर १५०/-)

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

धनवर्षिणी स्थायी लक्ष्मी साधना

जिससे लक्ष्मी स्थायी रूप से घर में धन वर्षा करती रहती है और दरिद्रता, अभाव लाखों मील दूर भाग जाते हैं।

मेरे जीवन की सफलता, प्रसिद्धि और सम्मान का एकमात्र कारण – धनवर्षिणी लक्ष्मी साधना।

मेरे जीवन की उमंग, मेरे जीवन का जोश और उत्साह का एकमात्र कारण – धनवर्षिणी लक्ष्मी साधना

सामाजिक व्यवस्था को संतुलित बनाये रखने के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थों – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का निर्धारण किया गया है। ये चारों पुरुषार्थ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आवश्यक अंग हैं और एक-दूसरे के पूरक हैं। पुरातन युग धर्म प्रधान युग था और वर्तमान युग अर्थ प्रधान युग है। ऐसा नहीं है कि पुरातन युग में अर्थ की आवश्यकता नहीं थी, आवश्यकता तो उस समय भी थी, किन्तु लोगों की भावनाओं में प्रधानता धर्म की थी। युग बदला, आवश्यकताएं बदली और मान्यताएं भी बदल गई, आज मानव जीवन का केन्द्र बिन्दु अर्थ हो गया है और अर्थ पर ही शेष तीनों पुरुषार्थ आधारित हो गये हैं।

इसलिए आज व्यक्ति की सर्वप्रथम आवश्यकता है, कि वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो, उसके पास धन का न होना, सुखद जीवन का अंत ही माना जाता है।

धन का तात्पर्य – रुपये पैसे तक ही सीमित नहीं है, व्यक्ति के पास धन-धान्य, यश, कीर्ति, भवन, ऐश्वर्य सब कुछ हो, वही धनवान है, वही लक्ष्मीवान है, ऐश्वर्यवान है। किसी भी लक्ष्मी साधना का तात्पर्य मात्र धनोपार्जन से नहीं, अपितु समस्त भौतिक सम्पदा की पूर्ति है . . . और समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति लक्ष्मी के स्थायित्व से ही प्राप्त हो सकती है।

जीवन में दुःख, परेशानी, पीड़ा, कष्ट, दरिद्रता कुछ तो भाग्य का दोष कहा जा सकता है, और कुछ व्यक्ति के खुद का आचरण, जो उसे इस प्रकार के दारुण्य को भोगने के लिए मजबूर कर देता है। कितने ही धनोपार्जन के उपाय क्यों न कर लें, प्रतिवर्ष दीपावली को मंत्र जप, अनुष्ठान आदि कार्य क्यों न सम्पन्न कर लिए जायें, फिर भी लक्ष्मी स्थायी रूप से किसी के घर में नहीं रह पाती . . . और फिर एक बार व्यक्ति के मन में अपने कर्म, भाग्य तथा पूजा पाठ के प्रति सन्देह, भ्रम, अविश्वास की दीवार खड़ी हो जाती है – जबकि ऐसा नहीं है।

लक्ष्मी का स्थायीवास सम्भव है, किन्तु उसके लिए

नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था और उसी के अनुकूल वातावरण बनाना पड़ता है, तभी लक्ष्मी प्रसन्न रूप से वास करती है।

परन्तु साधक के लिए सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण बात यह है, कि वह घर में एक ऐसे वातावरण का निर्माण करें, कि लक्ष्मी खुद आने के लिए बेताब हो जाय, अपने समस्त सहस्र रूपों में। किसी भी व्यक्ति को यदि सम्मान दिया जाय, उसका प्रेम पूर्वक स्वागत किया जाय, उसके मनोनुकूल व्यवहार किया जाय, तो वह अपना सर्वस्व समर्पित करता ही है।

अतः साधक को यह जानना आवश्यक है, कि लक्ष्मी कहां रहती है –

जिस घर में मधुरता का वातावरण हो।

वहां रहने वाले लोग सत्यभाषी हो।

धर्म को मानने वाले तथा सदाचारी हो।

घर में किसी प्रकार का कोई लड़ाई झगड़ा या कलह की स्थिति उत्पन्न न होती हो।

सभी सदस्य मृदुभाषी हों।

एक दूसरे का सम्मान करते हो।

जिस घर के लोग अपने इष्ट या गुरु के प्रति श्रद्धानत हो।

जहां व्यक्ति सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर ईश्वर का चिन्तन करता हो।

जहां स्त्री पुरुष का व घर के प्रत्येक सदस्य का सम्मान करती हो और पुरुष भी स्त्री के सम्मान और प्रतिष्ठा का हमेशा ध्यान रखता हो।

जहां गुरु की ईश्वर तुल्य मान कर पूजा होती हो।

जहां घर में आये अतिथि का ईश्वर की तरह आदर सत्कार किया जाता हो।

आध्यात्मिक वातावरण हो, कोई न कोई उत्सव, त्यौहार पूजा पाठ होता हो।

जब घर में ऐसा वातावरण हो और यदि धनवर्षिणी लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय, तो लक्ष्मी कहीं और जा ही नहीं सकती, उसे रहने के लिए विवश होना पड़ता है . . . और जब ऐसा होता है, तो स्वतः ही व्यापार में वृद्धि होने लगती है, ऋण से मुक्ति मिल जाती है . . . और फिर गृहस्थ की सम्पन्नता तो रुपये पैसे के साथ ही साथ उसकी कीर्ति, यश, मान, सम्मान भी होता है।

जीवन में जो न्यूनताएं रह जाती है, उन्ही की समाप्ति

के लिए यह साधना सम्पन्न की जाती है। यह साधना श्री, सुख समृद्धि प्रदान करने में अद्वितीय एवं सर्वश्रेष्ठ है, प्रत्येक स्त्री-पुरुष को यह साधना अपने गृहस्थ जीवन को पूर्णता देने के लिए अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

प्रयोग विधि –

१. इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है – **धनवर्षिणी लक्ष्मी यंत्र व धनाक्षी माला** जो मंत्र सिद्ध व प्राण-प्रतिष्ठायुक्त हो।

२. कार्तिक शुक्ल पक्ष लक्ष्मी दिवस के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करें, यदि इस दिन न कर सकें, तो किसी भी रविवार के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

३. इस प्रयोग को ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः ४ बजकर ४५ मिनट से ७ बजे के मध्य करें।

४. पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठे।

५. पीले आसन का प्रयोग करें।

६. साधक स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर साधना कक्ष में बैठ जायें, फिर गुरु पूजन सम्पन्न करें। एक चौकी पर सफेद रंग का वस्त्र बिछा दें और उस पर तांबे या स्टील की एक छोटी सी प्लेट में 'श्रीं' बीज अंकित करें।

७. इसके पश्चात यंत्र को जल से स्नान कराकर, पोंछकर उसे प्लेट में स्थापित कर दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप व दीप आदि से विधिवत पूजन करें।

८. पूजन के पश्चात हाथ में जल लेकर अपने गोत्र व नाम का उच्चारण कर अपने कार्य की पूर्णता हेतु धनवर्षिणी लक्ष्मी से प्रार्थना करें, फिर निम्न मंत्र से ध्यान करें –

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम् ।
त्रिनेत्रां खड्ग त्रिशूल पद्म चक्र जवा धराम् ॥
पीताम्बरा धरां देवीं नानालंकार भूषिताम् ।
तेजः पुञ्ज धरीं श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल कुमारीकाम् ॥

९. फिर निम्न मंत्र का **धनाक्षी माला** से १ माला जप करें –

मंत्र

॥ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं धनवर्षिणी लक्ष्मीराजच्छाजच्छ मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ॥

१०. जप के बाद थोड़े से अक्षत यंत्र पर चढ़ा दें।

११. इसके पश्चात यथाविधि मानसोपचार पूजन कर निम्न स्तोत्र का एक बार पाठ करें –

ॐकारं लक्ष्मी रूपं तु, विष्णुं हृदयमव्ययम् ।
विष्णुमानन्दमव्यक्तं, हींकारं बलि-रूपिणीम् ॥
क्लीं अमृतानन्दिनीं भद्रां, सदाऽनन्द प्रदायिनीम् ।
श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं, मालिनीं शत्रु मर्दिनीम् ॥
तेजः प्रकाशिनीं देवीं, वरदां शुभ कारिणीम् ।
ब्राह्मीं च वैष्णवीं रौद्रीं, कालिका रूप शोभिनीम् ॥
अकारः लक्ष्मी रूपं तु, उकारः विष्णुमव्ययम् ।
मकारः पुरुषोऽव्यक्तो, देवी प्रणव उच्यते ॥
सूर्य कोटि प्रतीकाशं, चन्द्र कोटि सम प्रभम् ।
तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं, ब्रह्म रूपं व्यवस्थितम् ॥
ॐकारं परमानन्दं, सदैव सुख सुन्दरीम् ।
सिद्ध लक्ष्मि मोक्ष लक्ष्मि, आद्य लक्ष्मि! नमोऽस्तुते ॥
सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तुते ॥
प्रथमं त्र्यम्बका गौरी, द्वितीयं वैष्णवी तथा ।
तृतीयं कमला प्रोक्ता, चतुर्थं सुन्दरी तथा ॥
पंचमं विष्णु शक्तिश्च, षष्ठं कात्यायनी तथा ।
वाराही सप्तमं चैव, ह्यष्टमं हरि वल्लभा ॥
नवमी खड्गिनी प्रोक्ता, दशमं चैव देविका ।
एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंस वाहिनी ॥

१२. फिर यंत्र पर पुष्प चढ़ावें।

१३. पाठ समाप्ति के पश्चात एक माला मूल मंत्र का पुनः जप करें।

१४. जप करने के बाद यंत्र पर अक्षत और पुष्प चढ़ावें।

१५. उपरोक्त विधान को सम्पन्न करने के बाद एक सप्ताह के भीतर ही यंत्र व माला दोनों को किसी नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।

इस प्रकार श्रद्धापूर्वक साधना सम्पन्न करने पर लक्ष्मी का वास घर में होता ही है।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

तुम जानना चाहते हो, गुरु किसे कहते हैं तो सुनो गुरु एक प्रेम है एक श्रद्धा पूर्ण रूप से नमन होने की क्रिया है, एक समर्पण है जो तुम देखकर सीख सकते हो गुरु पूर्ण रुप से उन्मुक्त और विसर्जित हो जाने की क्रिया है, पूरी तरह से डूबकर एकाकार हो जाने की क्रिया है।

– पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

यदि आप सदस्य बनना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-432010 या टेलीफैक्स : 0291-432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

(1)

दिनांक : .....अक्टूबर 2000

कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भिजवा दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।

मेरा नाम : .....

ग्राम : ..... पोस्ट: .....

जिला: ..... राज्य: .....

सामग्री का नाम

(2)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : ..... अक्टूबर 2000

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियां वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

....

....

....

....

मेरा नाम/पता : .....

.....

नोट : 300/– से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

(3)

(पृष्ठ संख्या 82 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : ..... अक्टूबर 2000

मुझे उपहार स्वरूप **'महाकाल माला'** 365/– (300/– न्यौछावर तथा डाक व्यय 65/–) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

.....

.....

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जुग जुग रो जोगी है म्हारो गुरुदेव

संन्यास दिवस महोत्सव

दिनांक १० - ११ नवम्बर २००० रायपुर, छत्तीसगढ़ (म. प्र.)

सिद्धाश्रम के योगियों द्वारा प्रतीक्षित ऐसा दिवस जिसकी चैतन्यता सुलभ हो रही है, गृहस्थ शिष्यों-साधकों के लिए भी क्योंकि इसी दिवस पर तो उपस्थित होते हैं पूज्यपाद सद्गुरुदेव अपने सम्पूर्ण तपोमय संन्यस्त स्वरूप में . . .

न वा अरे लोकानां कामाय लोकाः प्रिया भवन्त्यात्मनस्तु कामाय लोकाः प्रिया भवन्ति।
आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् ॥

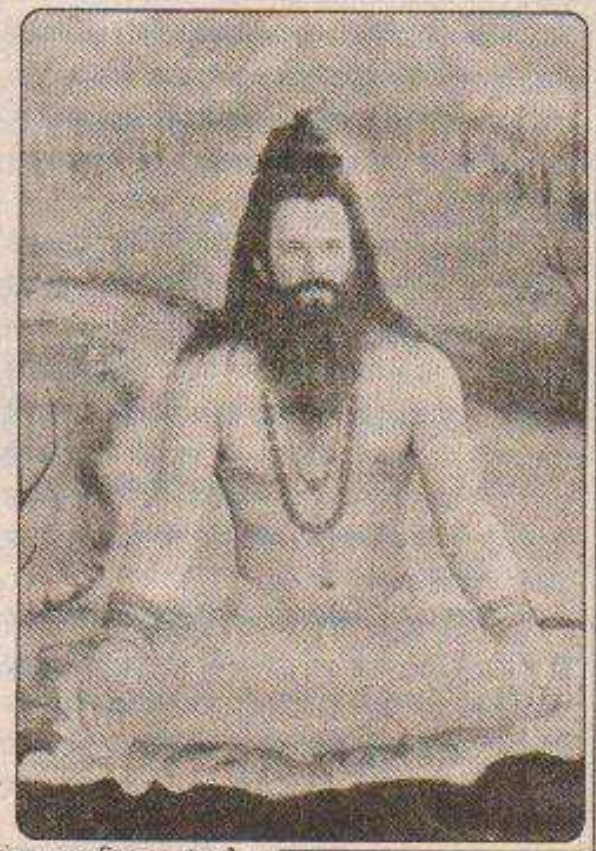

— हे मानव इस संसार में पत्नी की कामना, पुत्र की कामना, वित्त की कामना, ब्रह्म शक्ति की कामना, शक्ति की कामना, दिव्य लोक की कामना, देवों की कामना यह सब कुछ पत्नी, पुत्र, वित्त, ब्रह्म, शक्ति, दिव्यलोक, देव आदि के लिए प्रिय समझ कर नहीं किए जाते यह तो अपने आत्मा की कामना के लिए ही प्रिय होता है। यह आत्मा ही तो दृष्टव्य है श्रोतव्य है, मंतव्य है, आत्मा के स्वरूप का चिंतन कर आत्मा की पुकार सुनो, आत्मा ज्ञान को ही अपना लक्ष्य समझो और उसी की धुन में मस्त हो जाओ।

बृहदारण्यक उपनिषद का यह श्लोक संसार के परमज्ञान को स्पष्ट करता है। यह संसार अनगिनत द्वन्द्वों से भरा पड़ा है। कई लोक ईश्वर की खोज के लिए घर बाहर छोड़ कर संन्यास धारण कर लेते हैं, लेकिन वे अपने भीतर के मनुष्य को ही खो बैठता है। ये उमग्न अवस्था संन्यास की भावना अत्यन्त एकांकी और दोषपूर्ण विचार धारा है। हमारा जीवन शरीर और आत्मा स्त्री और पुरुष आदि कितने ही द्वन्द्वों पर खड़ा है। मानव के इन बुनियादी अधिष्ठानों के विरुद्ध विद्रोह करके संन्यासी भी सफल नहीं हो सका है। अपने पैरों को काटकर कौन इस दुनियां में चल सका है? अपनी आंखों को फोड़ कर कौन देख पाया है?

यह सच है कि एक संन्यासी निर्द्वन्द्व अवस्था में ही ब्रह्मानन्द का अनुभव करता है, इसी अनुभव के लिए उसके सारे परिश्रम होते हैं। अनेक यम, नियम, प्रत्याहार का पालन भी इसी ब्रह्मानन्द की प्राप्ति के लिए करता है। फिर भी, यह सब करते हुए भी जीवन के द्वन्द्वों को स्वीकार करना ही पड़ता है। आत्मा के अस्तित्व का साक्षात्कार दुनियां तभी पाती है जब वह आत्मा, शरीर धारण कर लेती है। स्त्रियां नौ मास तक गर्भ धारण न करें तो मनुष्य पैदा कैसे हो सकेगा? इतनी सरल और आसान बातें हैं सारे सामान्य आदमी इन्हें मानकर ही चलता है। वह अपने आप को सहज रूप में प्रकृति का ही एक हिस्सा मान लेता है। इसलिए मनुष्य प्रकृति का स्वामित्व भी स्वीकार कर लेता है।

यह सच है कि मनुष्य केवल प्रकृति की उपज नहीं है उसका आधा भाग यानि उसका शरीर प्रकृति के कितने ही नियमों से नियंत्रित रहता है। उस शरीर के द्वारा ही उसकी आत्मा का भी विकास संभव होता है। इस तरह विकसित मनुष्य प्रकृति से भी काफी बड़ा होता है, वह प्रकृति पर अधिकार कर सकता है। किन्तु ऐसा वह प्रकृति से मुख मोड़कर या प्रकृति को ठुकराकर नहीं उसके अस्तित्व को स्वीकार करके ही पाता है। जीवन को केवल आत्मा या केवल शरीर मानना दोनों एकदम अलग सिरे वाली कल्पनाएं हैं। सर्वथा गलत विचार है इस तरह की एकांगी कल्पनाओं के कारण ही मनुष्य विकृत होते हैं। अपना सर्वनाश कर लिया करते हैं।

पूर्णभोगी बनना शरीर की क्रिया है और सब कुछ छोड़ कर संसार से भागकर एकांत में ब्रह्म प्राप्त करने की धारणा भी गलत है। भोग युक्त जीवन में रहते हुए भी योगी बने रहना ही तो संन्यास है। केवल मनुष्य ही प्रकृति और परमात्मा के बीच की सर्वश्रेष्ठ कड़ी है। परमात्मा द्वन्द्वातीत है और प्रकृति को द्वन्द्व की कोई कल्पना तक नहीं होती उसकी कल्पना तो केवल मनुष्य ही कर सकता है। वह नदी जो प्यास से तड़पते तृष्णा को शांत करती है गहरे पानी में उतरने पर उसकी जान भी ले लेती है।

जीवन के इन द्वन्द्वों का ज्ञान केवल मनुष्य के मन में ही जागता है विकास की हर अवस्था के साथ यह ज्ञान सूक्ष्म और व्यापक होता जाता है। जीने की अदम्य इच्छा और उसके लिए हर प्राणी द्वारा जारी कोशिश मनुष्य को मिली प्रकृति की ही विरासत है। लेकिन मनुष्य जीवन में आत्मा रथी, शरीर रथ, बुद्धि सारथी और मन लगाम है। विभिन्न इन्द्रियां घोड़े हैं, उपभोग के सभी विषय उसके रास्ते है, इन्द्रियों और मन से युक्त आत्मा उसका भोक्ता।

संन्यासी उसे ही कहा जा सकता है जो इस जीवन रूपी समर भूमि में अपने हाथ में लगाम रखें अपने मन पर बुद्धि का नियंत्रण रखें और योगी धर्म की अपेक्षा गृहस्थ का धर्म निभाना बहुत कठिन है। हर मनुष्य की आत्मा शरीर के बंधन में बंधी पड़ी मालूम होती है, और इसी आत्म सुख की प्राप्ति के लिए यह आत्मा चाहती है कि इसी शरीर में रहकर तरल और विशाल बन जाए। जीवन के प्रति आशक्ति वास्तव में आत्म आशक्ति है। हर परिवार, नौकरी, व्यवसाय यह सारे कर्म मनुष्य आत्म सुख के लिए ही करता है और जो आत्म सुख प्राप्त करने की विद्या जानता है वही संन्यासी है।

शरीर और आत्मा एक दूसरे के शत्रु नहीं वे तो एक रथ के दो पहिये है इनमें से एक भी पहिया टूट के गिर जाए तो दूसरे पर सारा भार आकर उसका संतुलन नष्ट हो जाता है। आत्मा की उन्नति के लिए देह को कष्ट देना या देह के सुख के लिए आत्मा को बेहोसी में रखना दोनों गलत है।

परमात्मा द्वारा निर्मित प्रकृति के विविध सौन्दर्य अपवित्र या अस्पर्श कैसे हो सकते है। शरीर भी उन्नति करे और आत्मा भी उन्नति करे देहगत सारे सुख प्राप्त हो और आत्मगत सारे सुख प्राप्त हो यह मनुष्य जीवन बुद्धि भावना और शरीर के त्रिवेणी संगम का नाम है।

गृहस्थ जीवन तो वास्तव में तपस्वी जीवन है, गृहस्थी उसका यज्ञ है। प्रीति, वात्सल्य, करुणा, गृहस्थ जीवन के ऋत्विक् है। निरपेक्ष प्रेम के बोल जीवन मंत्र है, सेवा, त्याग, भक्ति ये गृहस्थ जीवन के यज्ञ की आहुति है।

यही मर्यादा का स्वरूप विस्तृत किया सद्गुरुदेव ने अपने पूरे जीवन में और इसी संन्यास को सार्थक बनाया। लाखों-लाखों शिष्य यही संन्यास भावना लिए अपने जीवन में निरन्तर ज्ञानयज्ञ में गतिशील हैं, उसी महान संन्यास धर्म को अनुप्राणित करने हेतु एकत्र होंगे नव प्रातः छतीसगढ़ की राजधानी रायपुर में १०, ११ नवम्बर को।

किसी के सामने सिद्ध नहीं करना है लेकिन हजारों गृहस्थ संन्यासियों को एक साथ देखना है तो वह अदभुत दिवस, अदभुत क्रिया, अदभुत दृश्यमान होगा संन्यास दिवस महोत्सव में।

स्वागत है आप सब का जो जीवन में संन्यस्त हैं।

ऋषि हो मुनि हो कोई देवता हो निखिल! तुम तो वर्षे वतन की दया हो

ऋषि-मुनि और तांत्रिक भी साक्षी है लक्ष्मी साधना के

ऋषि वशिष्ठ

ऋषि वशिष्ठ ने अपने शिष्य आरम्बिक को कहा कि मैं आज से लक्ष्मी को सिद्ध करने और प्रत्यक्ष करने के लिए साधना में बैठ रहा हूं और संसार में इससे बड़ी साधना, इससे तेजस्वी मंत्र कोई नहीं है ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं यह साधना करूं और लक्ष्मी मेरे आश्रम में पूर्णता के साथ प्रत्यक्ष प्रकट न हो।

शुक्रवार के दिन वशिष्ठ ने अपने सामने **'लक्ष्मी यंत्र'** स्थापित किया और उसे क्षीरोदय मंत्र से सिद्ध किया। सामने ऋद्धि-सिद्धि और शुभ-लाभ से सम्बन्धित चार तेल के दीपक प्रज्ज्वलित किए और फिर **'स्फटिक माला'** से जप प्रारम्भ किया। वशिष्ठ का गोपनीय मंत्र है –

॥ ॐ ह्रीं कमल वासिन्यै प्रत्यक्षं ह्रीं फट् ॥

रात्रि को स्नान कर पीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठे और २१ माला मंत्र जप करते -करते अपने पूर्ण स्वरूप में लक्ष्मी वशिष्ठ के सामने प्रकट हुई और कहा – मैं अत्यधिक प्रसन्न हूं और तुम्हारी साधना से जीवन पर्यन्त तुम्हारे आश्रम में स्थापित रहूंगी। किसी प्रकार से कोई कमी, कोई न्यूनता, कोई दुख-दैन्य, कोई अभाव रह ही नहीं सकेगा।

और फिर यह सिद्ध हो गया कि वशिष्ठ कृत यह मंत्र यह यंत्र और यह साधना अपने आप में प्रामाणिक है। इसी प्रकार से महर्षि वशिष्ठ कृत अनेक साधनाओं और मंत्रों की उच्चता तथा श्रेष्ठता अपने आप में निर्विवाद है और फलदायक अनुभूत है ही।

साधना सामग्री – 460/-

महर्षि पुलस्त्य

पुलस्त्य ऋषि ने लक्ष्मी को पूर्णता के साथ प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जिसकी आज भी शास्त्रों में विशेष चर्चा है। उन्होंने अपने सामने ताम्र पत्र में अंकित **'श्री लक्ष्मी यंत्र'** को स्थापित किया और यंत्र के सामने घी का दीपक जला कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठे और **'सफेद हकीक माला'** से एक रात्रि में निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप कर लक्ष्मी को प्रकट होने के लिए बाध्य कर दिया और यह सिद्ध कर दिया कि महर्षि पुलस्त्य का यह मंत्र और यह प्रयोग अत्यधिक चैतन्य पूर्ण है। महर्षि पुलस्त्य ने जिस मंत्र का उच्चारण किया था वह है –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं कमल वासिन्यै आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥

और वास्तव में आने वाले समय में कई साधकों ने इस बात को अनुभव किया कि यह मंत्र और यह प्रयोग पूर्णतः सिद्ध है।

साधना सामग्री – 300/-

शंकराचार्य

अपने समय के अद्वितीय विद्वान और संन्यासी शंकराचार्य का नाम किसी से छिपा हुआ नहीं है, उनके गुरु ने कहा शंकर जब तक तुम लक्ष्मी की आराधना और साधना सिद्ध नहीं कर लेते, तब तक जीवन में पूर्णता संभव ही नहीं है। वह चाहे तुम्हारे लिए हो, चाहे तुम्हारे शिष्यों के लिए हो, और उन्होंने एक अत्यन्त गोपनीय विधान शंकराचार्य को बताया।

किसी भी रविवार की रात्रि को कांसे या पीतल की थाली में काजल लगा कर काली कर दें और फिर चांदी की शलाका से लक्ष्मी का चित्र बनाएं चाहे वह कैसा भी बने, फिर चित्र के ऊपर **'ऐश्वर्य लक्ष्मी यंत्र'** स्थापित कर दें और एकनिष्ठ होकर, मात्र एक सफेद धोती ही पहन कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर, सामने गेहूं के आटे के चार दीपक बनाएं और उसमें किसी भी प्रकार का तेल भर कर प्रज्वलित करें और थाली के चारों कोनों पर रखें। फिर **'मूंगा माला'** से निम्न मंत्र का एक रात्रि में ३१ माला मंत्र जप होना चाहिए।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् ॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाए तो रात्रि में वहीं विश्राम करें, जमीन पर ही सो जाएं, सुबह जब घुंघरुओं की आवाज सुनाई दे तो उठ जाएं और इससे यह समझ लें कि लक्ष्मी का आगमन उनके घर में हो चुका है और किसी प्रकार की न्यूनता और अभाव उनके घर में नहीं रहेगा।

साधना सामग्री – 300/-

योगी शिवानन्द

योगी शिवानन्द का नाम सम्पूर्ण भारत में विख्यात है और लक्ष्मी से सम्बन्धित सैकड़ों संस्मरण उनके साथ जुड़े हुए हैं।

शरीर छोड़ने से पहले उन्होंने अपने प्रधान शिष्य कृपाचार्य को यह लक्ष्मी प्रयोग बताया था जो सोने की कलम से लिखने योग्य है क्योंकि संन्यासियों और योगियों में इस साधना की अत्यधिक चर्चा है।

किसी भी रात्रि को साधक एक थाली लेकर उसमें घी के छः दीपक जला ले और थाली के बाहर **'विजय लक्ष्मी यंत्र'** स्थापित कर दें जो कि सम्पूर्ण विजय मंत्र से सिद्ध हो कर रक्त चंदन की माला या **'मूंगा माला'** से निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं फट् ॥

उसी रात्रि में ३१ माला मंत्र जप होना अनिवार्य है।

उनके जिस शिष्य ने भी इस साधना को सम्पन्न किया उनका अनुभव यह है कि मंत्र जप समाप्त होते-होते लक्ष्मी अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ साधक के सामने प्रकट हुई और उनके जीवन में सभी दृष्टियों से सम्पन्नता ऐश्वर्य योग एवं क्षेम

प्राप्त हुआ। यह प्रयोग वास्तव में ही प्रामाणिक है।

साधना सामग्री – 300/-

स्वामी सच्चिदानन्द

टिहरी गढ़वाल में योगराज सच्चिदानंद जी का आश्रम था, जो कि अत्यधिक विख्यात था और जिसकी बड़ी चर्चा थी, उन्हें नेपाल से एक प्राचीन ग्रंथ प्राप्त हुआ था जिसमें विशिष्ट लक्ष्मी प्रयोग था, जिसे योगी राज सच्चिदानन्द ने सिद्ध किया था। उनकी हस्तलिखित जीवनी में इस प्रयोग की चर्चा है और कई योगियों ने इस साधना से पूर्ण लाभ उठाया है, किसी भी बुधवार की रात्रि को साधक शुद्धता के साथ स्नान कर पीली धोती धारण कर ले और एक आसन पर उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाए तथा सामने एक ही पंक्ति में ११ तेल के दीपक लगाएं। इसमें तेल किसी भी प्रकार का हो सकता है, फिर इसके सामने **प्रत्यक्ष लक्ष्मी सिद्ध यंत्र** को स्थापित करे जो विष्णु मंत्र से सिद्ध हो और **सिद्धि माला** से निम्न मंत्र का जप करें। मंत्र जप के बीच उठे नहीं, चाहे घुंघरुओं की आवाज सुनाई दे या सम्पूर्ण स्वरूप के साथ लक्ष्मी दिखाई ही दे।

मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं फट् ॥

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

हिमालय के कई सन्यासियों के पास यह प्रयोग मैंने देखा है और उन्होंने अनुभव किया है कि यह अत्यन्त तेजस्वी प्रयोग है।

साधना सामग्री – 300/-

पगला बाबा

पगला बाबा तो अपने आप में सम्पूर्ण भारत वर्ष विख्यात है और उन्होंने अपने जीवन में लाखों रुपये दान में दिए फिर भी उनके खजाने में कोई न्यूनता नहीं आई। उन्होंने इस लिए यौवनावस्था में एक लक्ष्मी प्रयोग सिद्ध किया था जो कि अत्यन्त गोपनीय था। यह प्रयोग इस प्रकार है –

एक मिट्टी का दीपक घी से भरकर बांये हाथ से रख दें और उस दीपक को प्रज्वलित कर दें फिर दाहिने हाथ से **'कमल गट्टे की माला'** से २१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ह्रीं ऐश्वर्य श्रीं धन धान्याधिपत्यै ऐं पूर्णत्व लक्ष्मी सिद्धयै नमः ॥

इसमें २१ माला मंत्र जप होना जरूरी है। और मंत्र के बाद उस दीपक को धरती पर रखें कहते हैं कि यह प्रयोग भी असफल नहीं हुआ। हठयोग का यह श्रेष्ठ प्रयोग है, इस प्रयोग में सफलता मिलती ही है। दीपक के सामने उंगलियों पर **पूर्णत्व लक्ष्मी यंत्र** रख दें और इस यंत्र को बाद में अपने घर में पीले कपड़े में बांधकर उस स्थान पर रखें जहां रुपये पैसे रखे जाते हैं। वास्तव में एक श्रेष्ठ प्रयोग है।

साधना सामग्री – 270/-

और ये तांत्रिक भी साक्षी है।

विश्व के उच्च कोटि के तांत्रिकों के इन प्रयोगों को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि गोपनीय तो रहे हैं पर प्रामाणिक हैं और अत्यधिक तेजस्वी हैं। कहते हैं कि सूर्य पूरब में उगना भूल सकता है पर इन साधनाओं से सिद्धि प्राप्ति में चूक नहीं होती।

गोरखनाथ

तंत्र के क्षेत्र में गुरु गोरखनाथ का नाम अत्यन्त सम्मान से लिया जाता है, उन्होंने लक्ष्मी से सम्बन्धित उच्च कोटि की साधना कर एक ऐसा वातावरण अपने आश्रम में बना दिया था कि वे जितना भी खर्च करते उससे सौ गुणा ज्यादा प्राप्त होता था। कहते हैं कि उनके आश्रम में लक्ष्मी हर समय प्रत्यक्ष रहती थी और किसी-किसी को दिखाई भी दे जाती थी।

किसी भी रविवार की रात्रि को **'श्वेतार्क गणपति'** को थाली में स्थापित कर दें और उसे सिंदूर से रंग दें फिर चांदी के किसी शलाका से उस श्वेतार्क गणपति पर लिखें –

॥ श्रीं ह्रीं श्रीं ॥

रात्रि को साधक मात्र एक धोती पहन कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर खड़ा हो जाए और हाथ में **स्फटिक माला** जो छोटे मनके की हो ले लें और खड़े-खड़े ही ११ माला मंत्र जप करें।

॥ ह्रीं ह्रीं लक्ष्मी आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं फट् ॥

जब तक ११ माला मंत्र जप पूरा न हो जाए तक तक न तो बैठे और न नींद ले, न पानी ले। ज्यादा से ज्यादा किसी दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो सकते हैं, इसमें किसी भी प्रकार के दीपक अगरबत्ती की आवश्यकता नहीं है यदि साधक चाहे तो तेल का दीपक लगा सकता है। यह अपने आप में अचूक प्रयोग है और सफलतादायक भी है।

साधना सामग्री – 460/-

मत्स्येन्द्र नाथ

तंत्र के क्षेत्र में जितना गोरखनाथ का नाम है उतना ही मत्स्येन्द्र नाथ का भी नाम है। कहते है कि उच्च कोटि की साधनाओं में मत्स्येन्द्र नाथ गोरखनाथ से ही कई गुणा आगे थे। उन्होंने लक्ष्मी से सम्बन्धित एक गोपनीय प्रयोग सिद्ध किया था जो मुझे तिब्बत के ग्रंथ में प्राप्त हुआ।

साधक स्नान करने के बाद स्वच्छ धुली हुई धोती पहने इसके अलावा कोई वस्त्र शरीर पर नहीं पहने और न हो कोई आसन हो, जमीन पर बैठ जाए और उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने **हीरा शंख** स्थापित कर लें और इस शंख के सामने **हकीक माला** से निम्न मंत्र की ३१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ऐं यं रं श्रीं यं फ्रौं क्रीं फट् ॥

यह अपने आप में कूट बीज मंत्र है और अत्यन्त प्रसिद्ध मंत्र है प्रत्येक साधकों को इस मंत्र का प्रयोग कर पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

साधना सामग्री – 240/-

त्रिजटा अघोरी

जो भी तंत्र के बारे में जानते हैं या जिनकी भी तंत्र के में रुचि है वे त्रिजटा अघोरी से परिचित होंगे ही। अपने आप में

अत्यधिक तेजस्वी और सिद्धि प्रद व्यक्तित्व है उनका। जिसने उच्च कोटि की शक्तियों को अपने वश में कर रखा है। लक्ष्मी से सम्बन्धित एक अचूक प्रयोग –

अपने सामने सात **गोमती चक्र** और पूर्ण **धनेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र** को स्थापित कर दें और सात तेल के दीपक लगा दें यह सब एक ही थाली में करें वह थाली अपने सामने रख दें और **सिद्धि माला** से निम्न मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ हुं हुं हुं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रं ह्रं ह्रं फट् ॥

एक अद्भुत और चैतन्य मंत्र है यह और एक आश्चर्य जनक साधना, एक सिद्धि प्रद प्रयोग है जिसे साधकों को दीपावली पर सम्पन्न करना ही चाहिए।

साधना सामग्री – 360/-

स्वामी भैरवानंद

लक्ष्मी से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण प्रयोग पूरे हिमालय में प्रचलित है और सैकड़ों साधकों ने इस प्रयोग को आजमाया है। अपने सामने **सियार सिंगी** रख दें और उसे सिंदूर से तिलक करें, साधक स्वयं अपने ललाट पर सिंदूर का तिलक करे और रात्रि में उत्तर की ओर मुंह कर लाल आसन पर बैठ जाए और स्वयं भी लाल धोती धारण करें। फिर सात घी या तेल का दीपक लगा कर पूर्ण **भाग्योदय लक्ष्मी मंत्र** का जप करे जो कि इस प्रकार है –

मंत्र

॥ ॐ लक्ष्मी आवद्ध आवद्ध सिद्धय सिद्धय फट् ॥

इस मंत्र की ५ माला मंत्र जप **स्फटिक माला** से सम्पन्न करें। मंत्र जप सम्पन्न होते-होते लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो जाती है और उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। यह अपने आप में तेजस्वी मंत्र है।

साधना सामग्री – 450/-

अवधूत कृत्यानंद

अवधूत साधना में स्वामी कृत्यानंद का नाम विश्वविख्यात है उन्होंने मुझे एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग बताया था।

उनके अनुसार किसी भी रात्रि को अपनी बायीं हथेली पर **काम रूप मणि** रख दें और हथेली पर एक छोटा सा मिट्टी का दीपक तेल से भरा रख दें, दीपक को प्रज्ज्वलित करें। लौ पर नजर रखते हुए दाहिने हाथ से **मूंगे की माला** से मंत्र जप करें। एक ही रात्रि में ११ माला मंत्र जप होना जरूरी है।

मंत्र

॥ ॐ श्रं सिद्धेश्वराय लं महालक्ष्मी वं वश्यमानाय फट् ॥

मंत्र जप के बाद उस कामरूप मणि को अपने घर में किसी भी स्थान पर रख दें और साधक यह देख आश्चर्य चकित रह जाएगा कि लक्ष्मी प्राप्ति की दृष्टि से यह प्रयोग अद्भुत और महत्वपूर्ण है। प्रत्येक साधक को यह प्रयोग आजमाना ही चाहिए।

साधना सामग्री – 240/-

तांत्रिक हलाहलनन्द

तांत्रिक क्षेत्र में हलाहलनन्द जी का नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है। लक्ष्मी से सम्बन्धित उनके प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण माने गए है।

मंगलवार की रात्रि को साधक लाल लंगोट पहने कर लाल आसन पर खड़ा होकर सिंदूर का तिलक अपने ललाट पर लगाकर **'वशीकरण लक्ष्मी यंत्र'** को बायीं हथेली में ले ले और दाहिने हाथ में **'सिद्ध माला'** को लेकर २१ माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ अघोर लक्ष्मी मम गृहे आगच्छ स्थापय तुष्टय पूर्णत्व देहि देहि फट ॥

और वास्तव में यह प्रयोग चमत्कारी प्रयोग है जो दिखने में तो सरल है परन्तु अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसे करने पर पूर्णत्व सिद्धि प्राप्त होती ही है।

साधना सामग्री – 330/-

स्वामी कौल्यानन्द

स्वामी कौल्यानन्द का नाम उत्तर काशी के, क्षेत्र में साधकों के बीच अज्ञात नहीं है। पूर्ण रूप से वीतरागी होते हुए उन्होंने जिस प्रकार एक चुनौती मिलने पर लक्ष्मी की यह साधना प्रस्तुत की उसकी प्रामाणिकता देखकर दांतों तले उंगली दबा लेनी पड़ती है। किसी भी मंगलवार की रात्रि में एकान्त में बैठ लाल वस्त्र पहन सामने **दस केलन** रख कर एक बड़ा तेल का दीपक जला लें और प्रत्येक केलन को सिन्दूर से रंग **हकीक माला** से इस मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें।

॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रियै फट् ॥

साधना सामग्री – 240/-

शिष्य धर्म

❊ शिष्य को चाहिए, कि वह जब भी गुरु शब्द का उच्चारण करे, तो पूर्ण श्रद्धा से उच्चारण करे।

❊ गुरु चरणों के अतिरिक्त शिष्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसी भाव से वह गुरु चरणोदक को भी अमृत समझकर पान करता है।

❊ गुरु शिष्य को अपने समकक्ष बनाने का प्रयास करते हैं, और इसी कारण से उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिष्य के अनुरूप स्वरूप धारण करता पड़ता है, परन्तु यह शिष्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिन्तन दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

❊ हे मेरे सदगुरुदेव हम अपने जीवन में मंथन की इस क्रिया को रोकेंगे नहीं, आप तो स्थान-स्थान पर अमृत बरसाकर चले गए, वे स्थान तो धन्य हो गए, उन सब स्थानों पर हम एकत्रित होकर आपके विचारों को अपने जीवन में अवश्य उतारेंगे आप ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, अपनी ऊष्मा, ऊर्जा, चैतन्य शक्ति हमें निरन्तर देते रहें, जिससे कि हमारे कदम रुके नहीं निरन्तर गतिशील रहें।

❊ जो आप बनना चाहते हैं, वो आप बन सकते हैं लेकिन आपके विचार सकारात्मक हों और उन सकारात्मक विचारों से ही अपने भीतर की निराशा को तोड़ सकते हैं।

❊ संयम, श्रद्धा, आत्मविश्वास, प्रेम, निष्ठा और समर्पण ये छः गुण जब स्थापित हो जाएं, तब ही जानिए कि आप सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं। कोई आपके लिए सफलता के द्वार खोल कर नहीं खड़ा है। आपको ही ये छः गुण अपने भीतर विकसित करने हैं।

❊ हर समय अदम्य इच्छा शक्ति बनाए रखें और आपका लक्ष्य सदैव आपके सामने लिखा हुआ होना चाहिए।

❊ गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती, इसलिए अपनी सामर्थ्यनुसार गुरु कार्य में भी पूर्ण मनोभाव से सहयोगी बना रहे।

❊ सदगुरुदेव ही आपके मित्र हैं, भ्राता है, माता-पिता हैं। उनमें ही एकाकार होने की क्रिया आज ही से प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

– श्रीमन्

गुरुवाणी

❋ शिष्य का लक्षण, शिष्य का चिन्तन, शिष्य का विचार, शिष्य बनकर सेवा मैंने की है। इसलिए मैं गर्व के साथ शिष्य के लक्षण और शिष्य के चिन्तन सुना सकता हूं, समझा सकता हूं।

❋ तुम्हारे पास केवल तीन रास्ते हैं, जिससे तुम लोहे से कुन्दन बन सकते हो, और वह है सेवा, समर्पण और श्रद्धा। और इन सबका समन्वय है प्रेम।

❋ ध्यान लगाने से आत्मा परमात्मा में विलीन नहीं हो सकती। आत्मा मंत्र जप से परमात्मा में लीन नहीं हो सकती, क्योंकि आत्मा का परमात्मा तक पहुंचने का जो रास्ता है वह वेदना का है, तड़फ का है, विरह का है, समुद्र में डूब जाने का है।

❋ जब आंखों से बहकर आंसू गालों पर लुढ़कने लगे तथा उन आंसुओं से गुरु चरणों को प्रक्षालित करोगे, तब समझ लेना कि तुमने गुरु के दर्शन कर लिए। उस तड़फ में, आंसुओं की झिलमिलाहट में निहारोगे, तो तुम्हें गुरु सामने ही मंद मंद मुस्कुराते हुए साफ साफ दिखाई दे जाएंगे।

❋ समुद्र तो बाहें फैलाए खड़ा रहता है, नदी वेग से आती है . . . और बीच में रुकावट आती है, पर वह नदी रुकती नहीं . . . गांव आते हैं, तो गांव को बहा देती है . . . समाज, किनारे के अन्दर नदी को बांधने की कोशिश करता है, तो नदी उन किनारों को तोड़ देती है। नदी तो तेजी से भागती है, अपने प्रियतम से मिलने . . . और जिस क्षण समुद्र में लीन हो जाती है, बिल्कुल शान्त हो जाती है, तब उसकी लहरों से संगीत फूट पड़ता है, जिसे साधना और शिष्यता की पूर्णता कहा है, ब्रह्म की उपलब्धि कहा है।

❋ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में नीलोगे नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता . . . और वह अन्दर उतर कर प्रभु से साक्षात करने की क्रिया ही तो प्रेम है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

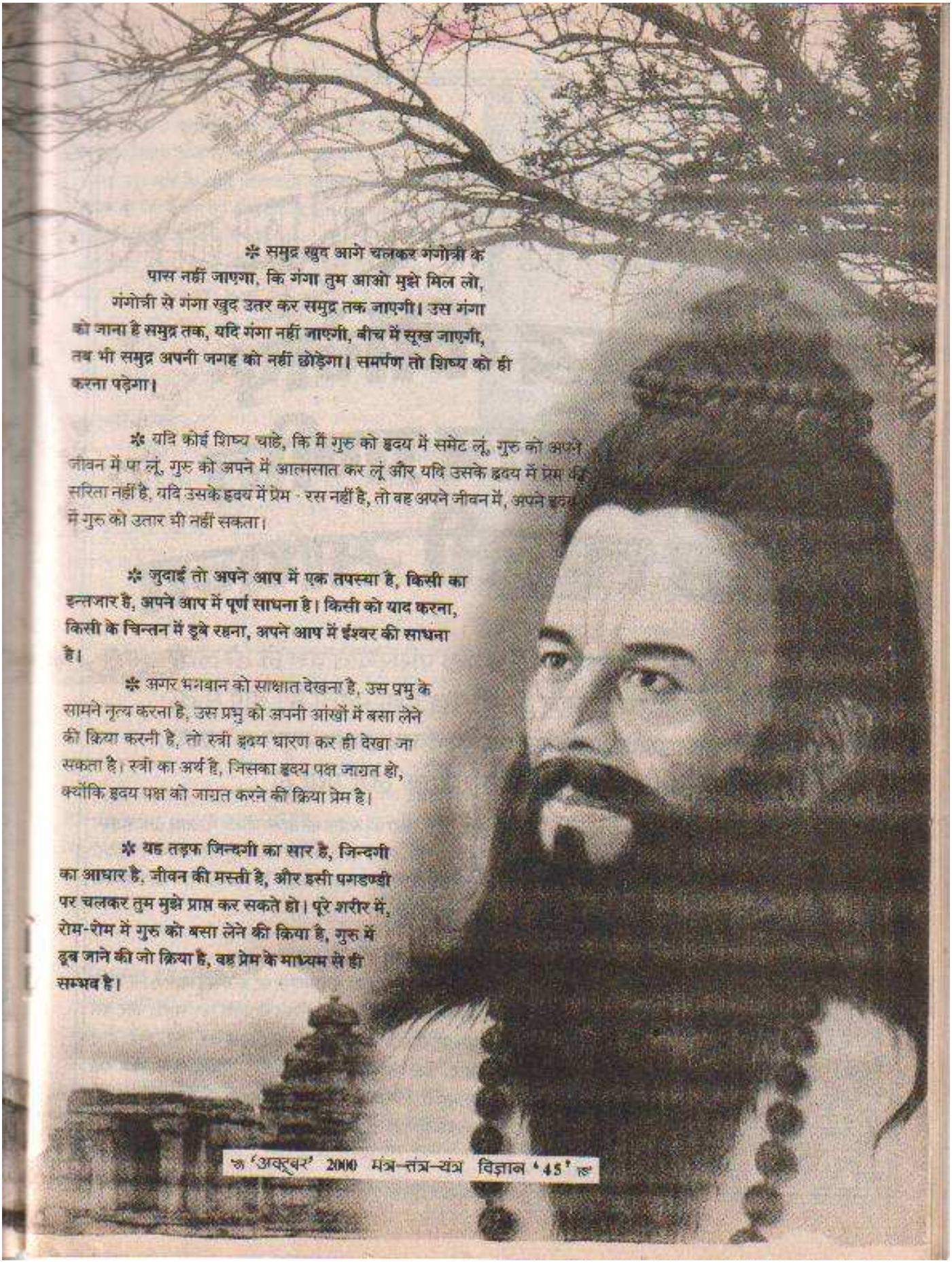

❋ समुद्र खुद आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुद उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी, तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।

❋ यदि कोई शिष्य चाहे, कि मैं गुरु को हृदय में समेट लूं, गुरु को अपने जीवन में पा लूं, गुरु को अपने में आत्मसात कर लूं और यदि उसके हृदय में प्रेम की सरिता नहीं है, यदि उसके हृदय में प्रेम - रस नहीं है, तो वह अपने जीवन में, अपने हृदय में गुरु को उतार भी नहीं सकता।

❋ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इन्तजार है, अपने आप में पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के चिन्तन में डूबे रहना, अपने आप में ईश्वर की साधना है।

❋ अगर भगवान को साक्षात देखना है, उस प्रभु के सामने नृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आंखों में बसा लेने की क्रिया करनी है, तो स्त्री हृदय धारण कर ही देखा जा सकता है। स्त्री का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जाग्रत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जाग्रत करने की क्रिया प्रेम है।

❋ यह तड़फ जिन्दगी का सार है, जिन्दगी का आधार है, जीवन की मस्ती है, और इसी पगडण्डी पर चलकर तुम मुझे प्राप्त कर सकते हो। पूरे शरीर में, रोम-रोम में गुरु को बसा लेने की क्रिया है, गुरु में डूब जाने की जो क्रिया है, वह प्रेम के माध्यम से ही सम्भव है।

कहीं आप ऋण के दल-दल में तो नहीं फंस गए हैं

तो सिद्ध कीजिए विश्वामित्र प्रणीत जयेष्ठ लक्ष्मी साधना

ऋण एक ऐसा कष्ट है कि व्यक्ति परिस्थिति वश ले तो लेता है किन्तु अपना स्वाभिमान गिरवी रख देना पड़ता है। बाद में तो फिर यही ऋण उनके मन मस्तिष्क पर दवाब डालकर उसे खोखला बना देता है, मानो भीतर ही भीतर दीमक लग गयी हो . . .

यदि किसी के जीवन में सबसे बड़ा दुख है तो वह है ऋण और ऋण का जहर पूरे शरीर में फैलकर ऋणी के मस्तिष्क में प्रभाव डालता है। जिस प्रकार दल-दल में डूबने वाला व्यक्ति उस दल दल से बाहर उतना ही अधिक फंसता है, ठीक यही स्थिति कर्ज में डूबे व्यक्ति की होती है। एक कर्ज को उतारने के लिए तीसरा। हर समय इस आशा में रहता है किसी न किसी प्रकार कर्ज को उतार दूंगा, लेकिन यह दल-दल ऐसा है कि जिससे बचकर बहुत कम ही बाहर आ पाते हैं। एक लोकोक्ति है इस संसार में सभी विश्राम करते है निद्रा लेते हैं, लेकिन काल चक्र, ऋण और ऋण का सहयोगी ब्याज कभी भी विश्राम नहीं करते, इनका चक्र चौबीस घंटे घूमता रहता है।

मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के ऋण आते हैं, प्रथम माता-पित का ऋण, द्वितीय गुरु ऋण और तीसरा धन ऋण। इन तीनों ऋणों को व्यक्ति को अपने जीवन में उतार देना चाहिए अन्यथा इन ऋणों का दोष उसे अपने अगले जीवन में भोगना पड़ता है, और ऋण हमेशा बढ़ता है, जब कि ऋण का शाब्दिक अर्थ घटता है।

मातृ-पितृ ऋण

मा बाप का ऋण व्यक्ति पर इसलिए होता है कि उनके कारण ही वह इस मनुष्य जीवन में प्रवेश कर सका, और इस संसार में सभी प्रकार के आनन्द सुख का मार्ग उनके द्वारा बना, अतः जो व्यक्ति अपने जीवन में माता-पिता की सेवा नहीं करता है तो उसे ऋण दोष लगता है, और यह दोष उसे अपने जीवन में नहीं तो अगले जीवन में उतारना ही पड़ता है।

गुरु ऋण

दूसरा ऋण गुरु ऋण होता है, गुरु का तात्पर्य है जो आपको दीक्षा दे ज्ञान दे, जीवन के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराएं, उस गुरु के प्रति यदि जाने अनजाने दोष हो जाए, अवज्ञा हो जाए, गुरु का अपमान किया जाए, गुरु के वचनों का पूर्ण रूप से पालन नहीं किया जाए, गुरु सेवा में कमी रहे, अर्थात मन, वचन, कर्म से किसी भी रूप में गुरु की श्रद्धा में कमी आने पर गुरु ऋण सहस्र गुणा बढ़ जाता है। ऋण व्यक्ति के जीवन में इस प्रकार जुड़ जाता है कि उसे सांसारिक जीवन में बाधाओं के चंगुल में फंसा देता है, और महा चुंगल से मुक्ति पाने का उपाय गुरु के पास ही होता है।

लक्ष्मी ऋण

तीसरा ऋण आर्थिक ऋण है जो व्यक्ति अपनी क्षमता से बाहर अपने महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु, सांसारिक भोग विलास में डूबने हेतु, झूठी शान शौकत में वृद्धि करने हेतु लेता है इसके अतिरिक्त असत्य भाषी, आलसी, क्रिया हीन, साधना हीन, व्यक्ति को भी जीवन में आर्थिक कर्जे का बोझा ढोना ही पड़ता है।

एक बार मैंने गुरुदेव से पूछा कि मानव जीवन के तीन सबसे बड़े दुख कौन से है ? तो गुरुदेव ने कहा – कि जब पुण्य का क्षय होता है तो पाप अपना प्रभाव डालते हैं, और जब साधना से, सदविचारों से, सुकार्यों से व्यक्ति मुंह मोड़ लेता है तथा अहंकार एवं किसी भी बल के घमंड से अपने को महान समझने लगता है तो उसके जीवन में तीन दोष में से एक दोष अवश्य ही आ जाता है, प्रथम बीमारी, द्वितीय वाद-विवाद अर्थात मुकदमा, तृतीया ऋण (दरिद्रता)। इन तीन दोषों में सबसे भयानक है ऋण दोष, कर्जा। क्योंकि यह कर्जा जीवन में अब तक किये गये सारे कारजों (कार्य) पर पानी फेर देता है, अतः व्यक्ति को अपने जीवन में इन तीन दोषों से मुक्ति अवश्य ही पा लेना चाहिए।

पूर्व जन्म के दोष

ऊपर जो तीन ऋणों का वर्णन आया है यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में इन्हें पूरा नहीं किया, तो ये दोष उसके अगले जन्म में प्रभाव डालते हैं, और उसके कारण ही मनुष्य गरीब घर में पैदा होता है, आगे बढ़ने के साधन उपलब्ध नहीं होते हैं, घर परिवार में कलह का वातावरण रहता है, व्यक्ति शारीरिक और मानसिक तौर पर दुखी रहता है, और सत्य

कहा जाए तो उसका जीवन एक प्रकार से नीरस एवं कष्ट से गुजरते हुए बीत जाता है।

जैसा गुरुदेव ने कहा कि तीन दुख प्रधान होते है उनमें यदि आपके पास तीसरा दोष, दुख ऋण अर्थात लक्ष्मी की कमी नहीं है तो आप बीमारी की बाधा को पार कर सकते हैं, मुकदमें, वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े के कुचक्र से निकल सकते हैं, लेकिन यदि धन का ऋण है तो ये तीनों दोष वृद्धि करते हैं।

ऋण दोष का निवारण कैसे हो?

जितनी बड़ी बीमारी होती है उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि उसका इलाज भी उतना ही बड़ा हो, कई बार बड़ी-बड़ी औषधियां काम नहीं करती वही साधारण सी औषधि से रोग जड़ से समाप्त हो जाता है।

ऋण की माता का नाम है निर्धनता और निर्धनता को नष्ट कर देने वाली देवी है, लक्ष्मी और जब तक साधक लक्ष्मी की विशेष साधना नहीं करता तब तक उसे ऋण से मुक्ति नहीं मिल सकती, और जिस दिन साधक यह संकल्प कर लें कि मैं इस निर्धनता के नाश के लिए तैयार हूं, लक्ष्मी की आराधना के लिए, लक्ष्मी को सम्मान देने के लिए तत्पर हूं, तभी वह

अपने जीवन में इस दोष से मुक्त हो सकता है।

लक्ष्मी उपासना में ऋण दोष को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग वेदोक्त ग्रंथों में दिये गये हैं। विश्वामित्र संहिता में भी एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयोग दिया गया है, और इसके अतिरिक्त साबर साधनाओं में भी ऋण निवारण प्रयोग है। लेकिन व्यक्ति जब तक अपने जीवन में माता पिता की सेवा और गुरु सेवा और इसके साथ इन दोनों के प्रति अपने ऋण के महत्व को नहीं समझेगा, तब तक उसे धन ऋण से पूर्ण मुक्ति नहीं मिल सकती।

विश्वामित्र प्रणीत ऋण हर्ता प्रयोग

विश्वामित्र ने जब अपना राजपाट छोड़ संन्यास धारण कर लिया तो उन्होंने देखा कि निर्धनता के कारण व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है, और वह संसार के कुचक्र में ही फंसा रहता है। इसलिए उन्होंने ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना की रचना की। इस प्रयोग को जो साधक सात दिन तक सम्पन्न करता है, और उसके उपरांत ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र का प्रतिदिन जप करते हुए एक लाख मंत्र सम्पन्न कर देता है तो उसे किसी न किसी माध्यम से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है, और वह अपना ऋण उतारने में समर्थ होता है।

इस साधना में मुख्य रूप से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र' 'नौ लक्ष्मी सिद्धि फल'** आवश्यक है, ये फल ज्येष्ठा लक्ष्मी की शक्तियों के द्योतक हैं, और इनका पूजन अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग विधि विधान

विनियोग

ॐ अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुपछंदः। ज्येष्ठालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धियर्थे जपे विनियोगः।

अब ज्येष्ठा लक्ष्मी का ध्यान कर उस यंत्र को ताम्र के पात्र में पुष्प का आसन देकर स्थापित करें –

ॐ रक्त ज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात।

अब हाथ में सुगन्धित पुष्प लेकर यंत्र में ज्येष्ठा लक्ष्मी की भावना रखते हुए निम्न मंत्र पढ़ें –

ॐ संबिलमये परे देवि परामृत रस प्रिये। अनज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारार्चनाय मे।

अब नौ श्री फल को जो ज्येष्ठा की नौ शक्तियों के प्रतीक हैं उनको पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए क्रमशः निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए स्थापित करने चाहिए –

१. *ॐ लोहितायै नमः* २. *ॐ विरूपायै नमः*
३. *ॐ करालयै नमः* ४. *ॐ नील लोहितायै नमः*
५. *ॐ समदायै नमः* ६. *ॐ वारूण्यै नमः*
७. *ॐ पुष्टयै नमः* ८. *ॐ उमायायै नमः*
९. *ॐ विश्वमोहिन्यै नमः।*

अब साधक अहगंध से इस पूरी सामग्री के चारों ओर एक घेरा बना दें तथा चारों दिशाओं में चार दीपक जलाकर रखें, तथा निम्न ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र का **लक्ष्मी माला** से ५ माला नियमित ११ दिन तक जप करें।

ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

इसके पश्चात साधक सारी सामग्री को एक थाली द्वारा ढक दें और दूसरे दिन पुनः इस प्रयोग को संपन्न करें, इस प्रकार सात दिन तक प्रयोग करने के पश्चात साधक बाद में केवल ज्येष्ठा लक्ष्मी का मंत्र ही जपे।

जो साधक एक लाख मंत्र जप कर लेता है तो उसे जीवन में ऋण सम्बन्धी किसी प्रकार की बाधा का सामना नहीं करना पड़ता है। मंत्र जप पूरा होने पर सारी सामग्री नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 410/-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः,
शुभायै शोभनायै महालक्ष्म्यै नमो नमः।
वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः,
सुखदायै मोक्षदायै महालक्ष्म्यै नमो नमः॥

मंगल मूर्ति, दिव्य शक्तिमयी, सतत् कल्याण कारिणी, सर्वत्र शोभायुक्त भगवती महालक्ष्मी को मेरा बारम्बार नमन अर्पित हो।

वरदायिनी, पुत्र-पौत्र आदि सन्तति को देने वाली, धन देने वाली, सुख तथा मोक्ष प्रदान करने वाली भगवती महालक्ष्मी को श्रद्धायुक्त मेरा नमन स्वीकार हो।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

आपके जीवन के 21 जटिल प्रश्न और इनका समाधान पूज्य गुरुदेव की डायरी से

जिज्ञासा मानव मन की प्रवृत्ति रही है और इसी वजह से उसने सागर की गहराइयों का नापा, आकाश की ऊंचाइयों में उड़ान भरी, सूर्य, चन्द्रमा और उस त्रि-आयामी शक्ति के रहस्यों को उजागर किया जिसके कारण से वह सब कुछ सम्भव है जो असम्भव लगा . . . और यह त्रि-आयामी शक्ति ही अध्यात्म कहलायी . . . जिसे हमारे ऋषियों ने धरोहर के रूप में संजोकर हमे सौपा . . . लेकिन काल के गर्त में यह विद्या लुप्तप्राय सी हो गई और इस विद्या के आंशिक जानकारों ने समाज को दिग्भ्रमित किया . . . लेकिन गीता के श्लोक में कहे अनुसार समय-समय पर इस पृथ्वी पर एक युग-पुरुष अवतरित होता है, जो अपने कार्यों के माध्यम से अपनी उपस्थिति का भान कराता है . . . साधनात्मक मार्ग में तरह-तरह की जिज्ञासाएं सामने आती हैं, जो स्वाभाविक हैं, जो चलेगा उसके सामने ही परेशानियां उत्पन्न होंगी – और ऐसे ही जिज्ञासाओं से भरे हुए पत्र कार्यालय को नित्यप्रति प्राप्त होते रहते हैं, जिनका समाधान पूज्य गुरुदेव एक बार अपने प्रवचन में स्पष्ट किया था, प्रस्तुत है कुछ प्रश्नों के समाधान –

१. पूज्य गुरुदेव! साधकों के ऐसे अनेक पत्र प्राप्त होते हैं, जिनमें वे पूछते हैं, कि मुझे साधना में सफलता नहीं मिल रही है, ऐसा क्यों है, जबकि हमने बतायी गई विधि के अनुसार ही साधना की है?

उत्तर : प्रायः ऐसे प्रश्न लिये गृहस्थ शिष्य मेरे पास आते ही रहते हैं। साधना मात्र मंत्र रटने की क्रिया नहीं होती, साधना के लिए उसके गोपनीय पक्षों का समुचित ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक होता है और सभी ज्ञान कागज के पन्नों पर उपलब्ध नहीं होता, उसके लिए गुरु के साहचर्य की अत्यन्त आवश्यकता होती है। साधक गुरु का सान्निध्य प्राप्त करने में सक्षम नहीं है, तो वह ऐसा प्रयास करें, कि उसका बराबर सम्पर्क गुरु से बना रहे, वह जो साधना करे उसके सम्बन्ध में बराबर गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहे। इसके साथ ही साधना के प्रति साधक के मन में पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और लगन होना आवश्यक है।

२. गुरुदेव! साधना के बाद माला, यंत्र तथा अन्य सामग्री को जल में प्रवाहित क्यों किया जाता है?

उत्तर – साधना के बाद साध्य सामग्री उससे सम्बन्धित इष्ट को सौंप दी जाती है, इस कामना के साथ, कि मैंने जिन इच्छाओं की पूर्ति हेतु आपकी आराधना की है, मेरी वह इच्छा पूरी हो जाय। शास्त्रों में जल, अग्नि, वायु, चन्द्रमा तथा सूर्य को प्रत्यक्ष देव के रूप में माना गया है, ये ऐसे देव हैं, जिन्हें हम अपनी आंखों से देख सकते हैं, इसलिए इनके सहयोग से हम अपने सम्बन्धित इष्ट को अपनी बात कह सकते हैं। अतः साधना के बाद साध्य सामग्री को जल में प्रवाहित करने का विधान है, जो कि शास्त्रोक्त है।

३. क्या गुरु दीक्षा लेना आवश्यक है?

उत्तर – सामान्य मानव के लिए कुछ भी आवश्यक

नहीं है, परन्तु जब कोई साधक एक ऊंचे धरातल पर जाने की इच्छा व्यक्त करता है, जब वह पशु जीवन से सही मायनों में मानव जीवन की ओर बढ़ना चाहता है, तब उसे एक माध्यम की आवश्यकता पड़ती है, जो उसको सही मार्गदर्शन दे सके और यही कार्य गुरु करते हैं और उनकी तपस्या से जुड़ने के लिए गुरु दीक्षा ही वह विशिष्ट माध्यम है।

४. क्या साधना में सफलता मिलती भी है?

उत्तर – प्रत्येक साधना अपने आप में पूर्ण होती ही है, आवश्यकता इस बात की है, कि साधक जिस साधना को करना चाहता है, उस पर उसे पूर्ण निष्ठा और विश्वास हो। अविश्वास की नींव पर सफलता का महल नहीं खड़ा किया जा सकता है। सैकड़ों-हजारों साधकों ने साधनाएं की हैं और वे उनमें पूर्ण सफल भी हुए हैं। यह तो निश्चित है, कि यदि योग्य गुरु के निर्देशन में साधना सम्पन्न की जाए, तो सफलता, अवश्य प्राप्त होती ही है।

साधना में थोड़ी सी भी न्यूनता उसी सफलता को संदिग्ध बना जाती है, अतः समय-समय पर साधक को गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है, ऐसा होने पर वह शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेता है।

५. मंत्र जप कब और कैसे करें ?

उत्तर – मंत्र जप प्रातः काल स्नानादि करके पूर्ण बाह्य और आन्तरिक रूप से स्वच्छ होकर करें। यदि आप कहीं की यात्रा कर रहे हैं अथवा किसी कार्यवश सुबह पूजन नहीं कर सकें, तो किसी भी समय सुविधानुसार पूजन कर सकते हैं। मंत्र जप करते समय अपनी ध्यान एकाग्र रखें, मन को विचलित न होने दें। माला को दाहिने हाथ की अनामिका उंगली पर रखें तथा अंगूठे से मनकों को अपनी ओर खिसकाएं, इस कार्य में मध्यमा उंगली का प्रयोग सहायतार्थ करते हैं। तर्जनी उंगली से माला को छूना वर्जित है।

६. गुरु माला के क्या-क्या उपयोग हो सकते हैं?

उत्तर – गुरु माला से आप मंत्र जप कर सकते हैं। गुरु माला गुरुदेव की चैतन्यता और प्राणश्चेतना से अनुप्राणित होती है, अतः इसे आप रक्षात्मक कवच की तरह भी धारण कर सकते हैं, क्योंकि इसके माध्यम से पूरे दिन आप गुरु की चैतन्यता अनुभव करते हैं और गुरु की तेजस्विता से सम्पर्कित रहते हैं।

७. क्या परिवार में कोई शिशु जन्म अथवा किसी सगे संबंधी की मृत्यु के समय पर साधनाओं को निरन्तर कर सकते हैं या उन्हें बीच में ही रोक देना चाहिए?

उत्तर – जन्म के समय सूतक तथा मृत्यु के समय पातक दोष होता है, इन दिनों में यदि साधनाओं को न करें, तो उचित रहता है। यदि आप किसी ऐसे घर में जा रहे हैं, जहां जन्म या मृत्यु हुई है, तो अपनी माला या यंत्र जो धारण किया हुआ हो, उसे पूजा स्थान पर रख कर जावें, फिर स्नान करने के बाद धारण करें।

यदि घर में ऐसा है, तो जन्म के ११ दिन बाद तथा मृत्यु की तेरहवी के बाद ही साधना करें या यंत्र, मालादि को धारण करें।

८. साधना से सम्बन्धित दीक्षा लेनी क्यों आवश्यक है?

उत्तर – दीक्षा के माध्यम से गुरु साधक में साधना से सम्बन्धित पृष्ठभूमि तैयार कर देते हैं या सरल शब्दों में कहें, तो गुरु पूरी थाली सजा कर रख देते हैं। साधक को सिर्फ कौर तोड़ कर अपने मुंह में रख कर खाना है। इस प्रकार साधक यदि साधना से सम्बन्धित दीक्षा लेता है, तो उसको

सिर्फ मंत्र जप के द्वारा पूर्णता प्राप्त करना शेष रह जाता है। इसलिए साधक को उस साधना से सम्बन्धित दीक्षा लेना उचित है, जिस साधना को वह करना चाहता है।

९. साधना में यदि सफलता न मिले, तो क्या करें?

उत्तर – ऐसा तो होता ही नहीं है, कि साधना की जाय और वह निष्फल हो। साधक द्वारा की गई साधनाओं का फल तो उसे अवश्य प्राप्त होता ही है।

कई बार ऐसा होता है, कि साधक साधनाएं सम्पन्न करता तो है, परन्तु साधक द्वारा पूर्वजन्म कृत या इहजन्म कृत दोष, पाप और विकार, जो जाने-अनजाने में हो जाते हैं, उनको समाप्त करने में वह साधनात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है, जिससे वह यह अनुभव करता है, कि सफलता प्राप्त नहीं हुई। ऐसे समय में साधक को चाहिए, कि वह निरन्तर मंत्र जप करता रहे, जिससे उसके विकार आदि समाप्त हो जाएं।

साधना में सफलता प्राप्त करने का एक सरलतम उपाय यह भी है, कि साधक साधना सम्बन्धित दीक्षा प्राप्त करें।

१०. शक्तिपात क्या है और यह कैसे सम्भव है?

उत्तर – साधना की सफलता के लिए यह आवश्यक है, कि साधक के अन्दर वह तपस्यात्मक ऊर्जा हो, जिसके माध्यम से वह साधना में सफलता प्राप्त कर सके, जो कि लम्बे प्रयास से प्राप्त होती है। लेकिन काल और स्थितियों को ध्यान में रखते हुए जब गुरु देखते हैं, कि उनका शिष्य सम्बन्धित साधना में सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहा है, तो वह अपनी संचित तपस्यात्मक ऊर्जा को अपने शिष्य के अन्दर समाहित कर उस साधना की सफलता के समकक्ष तैयार कर देते हैं। शिष्य के आग्रह पर, उसकी सेवा परायणता से, उसकी योग्यता को देखकर ही गुरु शक्तिपात करते हैं।

११. मैं आपका शिष्य होना चाहता हूं, कृपया बताएं, कि मैं कब आऊं?

उत्तर – गुरु और शिष्य का सम्बन्ध तो पूर्णतः आत्मिक होता है। मैं हमेशा ही कहता हूं, कि मेरा घर, मेरा हृदय आप लोगों के लिए खुला है, आवश्यकता है, कि तुममें उत्कंठा हो, तुम्हारे अन्दर सामर्थ्य हो, कि तुम मुझे अपना गुरु बना सको। जिस प्रकार से नदी उफनती, दौड़ती हुई समुद्र में मिल जाती है, वह समुद्र से नहीं पूछती है, कि क्या मैं मिलने आ जाऊं, वह चली ही आती है। इसी प्रकार गुरु भी समुद्र की तरह अपनी बाहें फैलाएं खड़ा है, आकर मिलना तो शिष्य को है। इसलिए जब सदभावनाओं का उदय हो, तभी शुभ मुहूर्त समझना चाहिए और सभी प्रकार से प्रयास करके शिष्यत्व धारण कर लेना चाहिए।

१२. जीवन में गुरु बनाना क्यों आवश्यक है?

उत्तर – जीवन का प्रत्येक क्षण संघर्षमय होता है। शिष्य के सामने कई बार ऐसी समस्याएं आती हैं, जिनका निराकरण वह सही ढंग से नहीं कर पाता। उस क्षण उसे एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है, जो उसे सही मार्गदर्शन करा सके, जिसे काल का पूर्ण ज्ञान हो, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में सही-सही मार्गदर्शन करा सके और जो जीवन में सर्वोच्चता और पूर्णता प्रदान कर सके। इसलिए जीवन को सुचारु रूप से गतिशील करने के लिए गुरु बनाना आवश्यक है।

१३. क्या गुरु इष्ट हो सकते हैं?

उत्तर – *इष्ट का तात्पर्य एक ऐसा व्यक्तित्व, जो जीवन में सर्वोच्च है, जिसमें लीन हो जाना उसका लक्ष्य बन जाता है। यह तो साधक की भावना पर निर्भर करता है, कि वह किसे इष्ट माने ? हां साधक यदि गुरु को इष्ट मान लेता है, तो वह अपने लक्ष्य को शीघ्रता से प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है, क्योंकि अन्य देवी-देवता उसके समक्ष साकार उपस्थित नहीं रहते, जबकि गुरु उसके समक्ष साकार हैं वह अपनी समस्याओं का समाधान उनसे पूछ कर सहजता से प्राप्त कर सकता है।*

१४. यदि पति और पत्नी दोनों एक ही गुरु से दीक्षा लें, तो क्या वे परस्पर भाई बहिन बन जाएंगे?

उत्तर – नहीं, साधनात्मक स्तर में या आध्यात्मिक स्तर में सभी आत्मस्वरूप होते हैं, उनमें स्त्री या पुरुष का भेद नहीं रहता। आध्यात्मिक धरातल पर शरीर का भान नहीं रहता। गुरु भी आत्म स्वरूप माने जाते हैं, अतः वे शरीर को नहीं, आत्मा को दीक्षित करते हैं। इसीलिए एक ही गुरु से दीक्षित पति-पत्नी भौतिक स्तर पर पति-पत्नी बन कर रह सकते हैं, परन्तु अध्यात्म के धरातल पर वे आत्म स्वरूप में ही रहते हैं।

१५. एक बार दीक्षा लेने के बाद पुनः दीक्षा ली जा सकती है?

उत्तर – हां, एक बार दीक्षा लेने के बाद साधक दोबारा

भी दीक्षा ले सकता है। दीक्षा गुरु से साधनात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का माध्यम है, अतः साधक इसे जितनी बार चाहे, ले सकता है। इसमें कोई दोष नहीं होता है, यह तो गुरु कृपा होती है, जो बिरले को ही भाग्य से मिलती है।

१६. साधक के क्या कर्त्तव्य होने चाहिए?

उत्तर – **साधक का इष्ट के प्रति कर्त्तव्य है, कि वह उनमें पूर्ण रूप से समर्पित हो जाए, स्वयं अनुशासित रहे तथा सबसे आवश्यक तथ्य यह है, कि वह मंत्र, इष्ट तथा गुरु के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखे। साधक के मन में इनके लिए संशय नहीं होना चाहिए, जहां पर भी साधक के मन में संशय का भाव आता है, उसका पूर्णता प्राप्त होना संदिग्ध हो जाता है।**

१७. क्या साधक और साधिका दोनों के लिए साधनात्मक नियम समान होते हैं?

उत्तर – जैसा कि मैंने पूर्व में बताया है, कि साधना क्षेत्र में स्त्री व पुरुष आत्म स्वरूप में उपस्थित होते हैं, अतः दोनों के लिए साधनात्मक नियम भी समान ही होते हैं। हां इतना अवश्य है, कि शरीर की प्रकृति भिन्न होने के कारण साधिका को ऋतुकाल में साधना नहीं करनी चाहिए। यदि साधिका साधनारत है और वह रजस्वला हो जाती है, तो उसी अपनी साधना वहीं रोक देनी चाहिए, इससे वह साधना खण्डित नहीं समझी जाती। चार दिन के पश्चात पांचवें दिन बाल धोकर स्नान करे और साधनाक्रम को जहां पर छोड़ा था, उससे आगे प्रारम्भ कर साधना को पूर्ण कर लेना चाहिए।

१८. क्या गुरु से दीक्षा लेने के उपरांत भी मिलना आवश्यक है?

उत्तर – आवश्यक या अनिवार्य तो कुछ भी नहीं है, परन्तु गुरु से दीक्षा लेने के उपरांत भी मिलते रहें, तो साधक के लिए अनुकूल ही रहता है, क्योंकि गुरु सतत चैतन्य और प्राणश्चेतना की ऊर्जा से युक्त रहते है और शिष्य यदि गुरु से मिलता है, तो उनके सान्निध्य से ही शिष्य आधी सफलता प्राप्त कर लेता है। शिष्य गुरु के सान्निध्य में रहकर यदि कोई कामना करता है, तो यह गुरु का कर्त्तव्य हो जाता है, कि वे शिष्य की इच्छा को पूर्ण करें। अतः हजार कामों के होते हुए भी समय-समय पर गुरु का सान्निध्य प्राप्त करना ही चाहिए।

१९. मैंने आपके यहां से प्राप्त कर बगलामुखी यंत्र धारण किया, इस यंत्र के द्वारा मैंने मुकदमों में भी सफलता पाई है, परन्तु इसके धारण करने के पश्चात मुझे गर्मी महसूस होती है। क्या कारण है?

उत्तर – शरीर में गर्मी बढ़ना स्वाभाविक है, क्योंकि जब यंत्र मंत्र सिद्ध होता है, तो उसमें विशेष ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है, जिसकी वजह से साधक को गर्मी अनुभव होती है। परन्तु इससे कुछ नुकसान नहीं होता है, बल्कि इससे तो यंत्र की प्रामाणिकता ही प्रकट होती है।

२०. एक साधना में प्रयोग की गई माला को क्या दूसरी साधना में प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तर – नहीं, एक साधना में प्रयोग की गई माला को दूसरी साधना में नहीं प्रयोग किया जा सकता है। जिस साधना से सम्बन्धित माला आप लेते हैं, वह उस साधना के लिए ही विशिष्ट मंत्रों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित की जाती है, दूसरी साधना में उस माला द्वारा किया गया जप निष्फल ही रहेगा। साधना सम्बन्धित सामग्री उस साधना के देव या देवी के सम्पर्कित होने का माध्यम है। जैसे आप कानपुर से दिल्ली तक की टिकट से जोधपुर नहीं जा सकते, दिल्ली का टिकट है, तो दिल्ली ही आना पड़ेगा। यह बहस करना व्यर्थ है, कि यह टिकट ही तो है।

२१. क्या आध्यात्मिक जीवन पर पूर्वजन्म का भी प्रभाव पड़ता है?

उत्तर – हां आध्यात्मिक जीवन तो जब से इस पृथ्वी पर आप आये हैं, तब से ही शुरु हो जाता है, शरीर बदलने से आत्मा नहीं बदलती, आत्मा वही रहती है, उसके कर्म भी उसके साथ रहते हैं। इसी प्रकार शरीर बदलने से आध्यात्मिक स्तर पर कुछ फर्क नहीं पड़ता, उसके पूर्वजन्म का सम्बन्ध उसके साथ ही रहता है। पूर्वजन्म कृत पाप-पुण्य उसके इस जीवन को प्रभावित करते ही हैं।

मंत्र क्या होते हैं तथा इसका प्रभाव क्या होता है?

उत्तर – मंत्र एक विशेष प्रकार के शब्दों का संगुम्फन है और उससे एक विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है। मंत्र के शब्दों का संयोजन एक विशेष प्रकार से होता है, अतः उसका प्रभाव भी अधिकारिक स्वर से निश्चित रूप से होता है।

हम जो कुछ चाहते हैं, वह होना ही चाहिए, अतः मंत्र का उच्चारण सही प्रकार से होना आवश्यक है। मंत्र के द्वारा निश्चित अवधि में साधक अपना कार्य सम्पन्न कर सकता है। गलत ढंग से या गलत प्रकार से मंत्र उच्चारित किया जाए, तो उसका प्रभाव निष्फल रहता है। अतः मंत्र का उच्चारण करते समय विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

तंत्र बाधा निवारण दीक्षा

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका जीवन सुखी एवं समृद्धिशाली हो और इसके लिए वह सतत् प्रयत्नशील रहता है। सुबह प्रातः जल्दी उठकर अपने दैनिक कार्य में संलग्न हो जाता है। दिन भर के कठोर परिश्रम के पश्चात सायं तक वह अपने व अपने परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था, उनके रहने के लिए, स्कूल की पढ़ाई का खर्चा आदि की व्यवस्था कर पाता है। कई व्यवसायी बड़ी मेहनत से अपने व्यवसाय को स्थापित करते हैं, जिसमें वे उत्पादन के साथ-साथ कई लोगों को रोजगार भी प्रदान करने में सक्षम होते हैं, किन्तु जीवन के इस आपाधापी के युग में यह आवश्यक नहीं है, कि व्यवसाय में निरंतर प्रगति हो या स्थायित्व बना रहे।

जीवन में हम देखते हैं, कि बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद भी बहुत कम सफलता मिल पा रही है, व्यापार में दिन-भर मेहनत करते रहते हैं और समय आने पर उसका जो लाभ होना चाहिए, वह नहीं मिल पाता है। व्यक्ति अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन मुटाव नहीं चाहते हैं, परन्तु फिर भी प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख शांति और आनन्द होना चाहिए, वह नहीं मिल पाता है।

तब मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता है, कि जब थोड़ा सा परिश्रम करने से दूसरे व्यक्ति व्यापार में लक्ष्मी प्राप्त करके आराम की जिंदगी व्यतीत करने में सफल हो जाते है परिश्रम करने के बाद भी आप ग्रस्त है, तो जरूर इसके पीछे कोई न कोई रहस्य है, कोई न कोई कारण है, जिसे हम भली प्रकार नहीं समझ पाते हैं।

तांत्रिक प्रयोग मुख्य कारण

जब जीवन में ऐसी स्थिति अनुभव हो, तो यह निश्चित है, कि किसी ने कोई टोना-टोटका या तांत्रिक प्रयोग कर दिया है, जिससे जीवन में जो अनुकूलता और सुख प्राप्त होना चाहिए वह नहीं हो पाता है।

यद्यपि तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं है, किन्तु आजकल छोटे-मोटे टुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये हैं, जो किसी का हित तो कर नहीं पाते, पर उसे नुकसान अवश्य पहुंचा देते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे-मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिए हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर देते हैं, इसके कारण सामने वाले की भरी-पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।

अभी एक सज्जन अपनी समस्या लेकर आये वे अच्छे सरकारी पद पर कार्यरत थे। घर में खूब शान, बंगला, कार आदि सब कुछ उपलब्ध था, किन्तु कुछ ईर्ष्यालू लोगों से उनकी शान शौकत व सुखी जीवन देखा नहीं गया और उन पर तंत्र प्रयोग करवा दिया, जिसके कारण उनके परिवार के सदस्यों की एक-एक कर मृत्यु होने लगी, उन सज्जन को नौकरी से मुअत्तल कर दिया गया। आय के समस्त स्रोत बंद हो गये। साथ ही अपने घर से बेघर हो गये। इस तरह लोगों के साथ तंत्र बाधा के हादसे आये दिन होते हैं।

यह तो वैसी बात हुई कि किसी व्यक्ति को चाकू मारने में कोई विशेष हुनर या ज्ञान की जरूरत नहीं होती, कहीं से भी उसके हाथ पर एक छोटा सा चाकू लग जाता है और वह बिना परिणाम जाने किसी के पेट में चाकू का घाव कर देता है, परन्तु उस घाव को दूर करने में और कटे हुए स्थान की चिकित्सा

करने में विशेष ज्ञान, विशेष अनुभव और विशेष औषधि की जरूरत होती है, बिना कुशल डाक्टर के वह घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी-कभी उससे मृत्यु भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ है, कि चाकू लगाने में केवल एक क्षण का समय लगात है, परन्तु चाकू लगने से, जो घाव होता है, उसको ठीक करने में पूरा एक महीना लग सकता है। चाकू लगाने में केवल दो रुपये चाकू खरीदने में खर्च होते हैं, परन्तु उससे जो घाव बन जाता है, उस घाव को ठीक करने में सैकड़ों रुपये लग जाते हैं।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है, तांत्रिक प्रयोग कोई भी कर सकता है, परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं और एक प्रकार से देखा जाए, तो पूरी जिंदगी अस्त व्यस्त हो जाती है। हमला करने या तांत्रिक प्रयोग कराने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है, तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती ही है।

क्योंकि तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करना विशेष विद्वान या जानकार के द्वारा ही संभव है और तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक होता है, कि यह प्रयोग किसने किया है तथा तंत्र की सैकड़ों विद्याओं में से कौन सा तांत्रिक प्रयोग ा है और इस तांत्रिक प्रयोग की काट क्या है, किस विधि से या किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता है। इसके लिए तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करना एक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपाय है।

तांत्रिक बाधा के संभावित परिणाम

दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं से हम आसानी से मालूम कर सकते हैं, कि हम पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है कि नहीं। यद्यपि दूसरे कारण भी हो सकते हैं, किन्तु यदि जीवन के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लग जाए, तो तंत्र प्रयोग की संभावना ही अधिक होती है और आज के युग में इस तरह छोटे-मोटे तांत्रिक हैं, जो विरोधियों से धनराशि लेकर तांत्रिक प्रयोग कर देते हैं और उसके परिणाम स्वरूप परेशानियां उत्पन्न हो जाती हैं।

यहां पर कुछ तथ्य दिये जा रहे हैं, जिनके माध्यम से आप यह जान सकते हैं, कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं –

१. यदि स्वयं थोड़ा या बहुत बीमार रहें, तबीयत ठीक रहे ही नहीं और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो, तो समझ लेना चाहिए, कि आप पर प्रयोग हुआ है।

२. यदि आप हर समय चिन्ताग्रस्त रहते हैं या बार-बार आत्महत्या करने की भावना मन में आती है या घर-बार छोड़कर कहीं दूर चले जाने का विचार मन में आता है, तो समझना चाहिए, कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।

३. यदि परिवार में कोई न कोई बीमार बना ही रहता है और दवाइयों पर, डॉक्टर पर खर्चा होने के बावजूद भी बीमारी का पता नहीं चल रहा हो या घर से बीमारी समाप्त हो नहीं रही हो या घर में डॉक्टर का आना जाना बना ही रहे, तो निश्चय ही तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

४. यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो और डॉक्टर्स को दिखाने पर यदि रिपोर्ट सही आ रही हो, कि स्वास्थ्य की दृष्टि से और संतान पैदा करने की दृष्टि से कमी नहीं है, फिर भी संतान नहीं हो रही हो, तो यह

समझ लेना चाहिए, कि किसी ने गर्भ बांध दिया है।

५. इसी प्रकार यदि संतान पैदा हो कर मर जाती है या बीच में ही गर्भ गिर जाता है, तो निश्चिय ही गर्भ बंधन प्रयोग किया गया है, ऐसा समझना चाहिए।

६. यदि घर में जवान पुत्र या पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाय, तो निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिए, कि किसी ने घर के सदस्यों पर मूठ का प्रयोग किया है या मृत्यु का अन्य कोई प्रयोग किया है।

७. यदि आप ने मकान बनाया है और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती है, तो समझ लेना चाहिए, कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

८. यदि आप का स्वभाव हंसमुख है और आप अचानक बराबर कमजोरी अनुभव करते हैं और आपका मनोबल समाप्त हो गया है, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।

९. यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।

१०. यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आपका मकान नहीं बन रहा हो या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हो या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही गृह बंधन प्रयोग है, जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

११. यदि संतान बराबर अस्वस्थ रहती हो, इलाज कराने पर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा है या वह ठीक ढंग से पढ़ाई नहीं कर रही हो अथवा उसका मानसिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो, तो इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

१२. यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हो, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाय या आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करें, तो इसका सीधा-सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।

१३. यदि हर समय पति-पत्नी में मतभेद हो, आपके समझाने पर भी पत्नी सही रास्ते पर नहीं चल रही हो या हर समय घर में कलह का वातावरण हो, तो यह कलह तंत्र प्रयोग है।

१४. यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों के लिए आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते हैं, तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता है।

१५. यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण बाधाएं आ रही हो, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो रही हो, तो इसका तात्पर्य भाग्य बंधन अथवा इसी तरह का कोई तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए।

१६. यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चने आती हो, प्रयत्न करने पर भी अधिकारी से मतभेद दूर नहीं हो रहे हो, प्रमोशन नहीं हो रहा हो, आप जैसा स्थानान्तरण चाहते हैं, प्रयत्न करने पर वैसा नहीं हो रहा हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग ही है।

१७. यदि आपके साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम के बावजूद भी लक्ष्मी का आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हो, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग के कारण से हो सकता है।

उक्त बिन्दुओं के आधार पर यह आसानी से जान सकते हैं, कि हम वर्तमान परेशानी किस कारण से भुगत रहे हैं और इसका एकमात्र उपाय तंत्र बाधा का निवारण करने से ही संभव है।

अत्यधिक व्यस्तता का युग होने के कारण यह संभव नहीं हो पाता, कि शिष्य गुरु से अपनी समस्या को विस्तारपूर्वक बताकर अपने अनुकूल दीक्षा की प्रार्थना कर सके। ऐसी अवस्था में यह पत्रिका आपका मार्गदर्शन का कार्य करती है। इसमें दीक्षाओं की विस्तृत जानकारी समय-समय प्रकाशित की जाती है, जिससे शिष्य अपने अनुकूल दीक्षा चयन के लिए सक्षम हो पाता है, जो शिष्य व्यक्तिगत भेंट कर दीक्षा प्राप्त नहीं कर सकते, उन्हें फोटो से भी दीक्षा प्रदान करने की कृपा पूज्य गुरुदेव करते हैं।

इसके अतिरिक्त जो लोग बार-बार तांत्रिक बाधाओं से परेशान होते हैं अथवा जिन पर शत्रु बराबर तंत्र प्रयोग करवाते रहते हैं, वे विशेष तंत्र रक्षा कवच भी धारण करने हेतु प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तुतः तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त होना इस कठिनाई के युग में एक वरदान से भी उच्च स्थिति है। यह परम पूज्य गुरुदेव की हमारे देश पर कृपा दृष्टि है।

आरोग्य सरिता

यों तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परन्तु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

1. हड्डी एवं मांस पेशियों का दर्द

शहरों में बढ़ते प्रदूषण एवं वायु की अशुद्धता के कारण शरीर की मांस पेशियां और हड्डियों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, और परिणाम होता है, जोड़ों में दर्द, बदन भर में दर्द, एक एक मांस पेशी में दर्द। अधिकतर लोग मालिश आदि से इस दर्द की निवृत्ति करते हैं, कुछ लोग इसे असाध्य मान लेते हैं तथा कुछ लोग इसे गम्भीरता से लेते ही नहीं। परन्तु ये दर्द अनेक कारणों से हो सकते हैं और वृद्धावस्था आने पर और भी पीड़ित करते हैं, अतः इनके प्रति सावधानी आवश्यक है।

अपने पूजा घर में किसी पात्र में **रोग निवारण गुटिका** को स्थापित कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का १५ मिनट तक मंत्र जप ११ दिन तक करें –

॥ ॐ ह्रीं मंगले रोग वारिणी फट् स्वाहा ॥

साधना समाप्ति के बाद रोग निवारण गुटिका को मरीज को पहना दें।

साधना सामग्री : 150/-

2. क्या आपकी हाइट कम है और आप हीन भावना से ग्रस्त है तो

सौन्दर्य हर प्रकार का होता है, सांवले नैन-नक्श जिस प्रकार से अलग सुन्दरता लिए रहते हैं, ठीक उसी प्रकार अगर हाइट कम है, तो इसमें हीन भावना से ग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रकृति स्वयं अपने हाथों से प्रत्येक को गढ़-गढ़कर बनाती है।

लेकिन फिर भी सौन्दर्य का मापदण्ड पा लेना भी श्रेष्ठ है और सम्पूर्ण ऊंचाई पाना भी सौन्दर्य का एक गुण है। यह सौन्दर्य मंत्रों के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, यदि आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से यह प्रयोग करें।

कल्पवांछा गुटिका किसी पात्र स्थापित कर उसके समक्ष नित्य २१ दिनों तक मात्र ११ बार निम्न मंत्र जप करें, इससे आप पा लेंगे आपकी हाइट –

॥ ॐ हुं हुं क्लीं हुं हुं फट् ॥

लेकिन इस प्रयोग के बाद आप नित्य २० बार भस्त्रिका करें और जमीन पर बैठे-बैठे उछल कर खड़े हो। प्रयोग के बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 100/-

3. जब भी आपके जीवन में मुसीबत बाधा या अड़चन आवे, तो आप तुरंत इसे कर डालिये

अब सम्भव नहीं हो सकता, कि कोई मुसीबत, बाधा या अड़चन आपकी सफलता के मार्ग में रोड़ा बने, क्योंकि आपके पास समाधान है इसे दूर करने का।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद बाधा, अड़चन या मुसीबत आपके लिए एक छोटी सी कंकरी है, जिसे आप पलक झपकते ही उछालने की क्षमता रखते हैं, क्योंकि अब आप समर्थ हैं, कि वह चाहे कितनी ही बड़ी बाधा क्यों न हो, आप उसे एक झटके में हटा देंगे और बना लेंगे अपने जीवन को निष्कंटक।

किसी कागज पर अपनी परेशानी लिखकर उस पर **क्लक्ष गुटिका** रखें, फिर उस पर ११ बार निम्न मंत्र का जप ५ दिन तक करें –

॥ ॐ क्लीं क्लेशनाशाय क्लीं फट् ॥

आठवें दिन **क्लक्ष** को उस कागज समेत मौली से बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 100/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

साधक साक्षी हैं

गुरु कृपा से भगवती छिन्नमस्ता के दर्शन

परम पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी के आशीर्वाद से मैंने महाविद्या साधनाएं सम्पन्न करने का निश्चय किया। जिनमें मुझे सफलता भी प्राप्त हुई सबसे अधिक भगवती छिन्नमस्ता साधना के दौरान देवी से रूबरू हुआ।

अत्यंत तीव्र प्रचण्ड स्वरूप वाली छिन्नमस्ता साधना में बैठा तो साधना काल में गुरुकृपा से कोई विघ्नबाधा नहीं हुई। साधना के अंतिम चरण में आसन पर बैठ कर साधना सम्पन्न कर रहा था कि अचानक मेरे पीछे स्थित बंद दरवाजा जोरों से हिला इसके साथ ही देवी जी का कक्ष में पदार्पण हुआ मैं सिहर उठा माताजी ने मुझे आशीर्वाद प्रदान किया। तत्पश्चात उसी ध्वनि के साथ लघुरूप में यज्ञाग्नि के लौ पर एक क्षण रुकती हुई आगे स्थापित यंत्र में विराजित होकर अदृश्य हो गई पूज्य गुरुदेव की कृपा से ही मुझे भगवती के दर्शन संभव हुए गुरुदेव जी हम सभी गुरु भाई बहनों पर भी इसी तरह कृपा करते रहें।

– ओकार सिंह सोनकर दुर्ग, म. प्र.

गुरुकृपा से पी. ई. टी. परीक्षा में पास

गुरुदेव के चरणों में मेरा शत-शत प्रणाम मैं बुरहानपुर का रहवासी हूं। मेरे पिताजी ने सन १९९७ में राज्याभिषेक दीक्षा पूज्य गुरुदेव जी से दिल्ली में ली थी। जब से मैं भी गुरुदेव जी की हर महीने प्रकाशित पत्रिका पढ़ता हूं, मेरे ऊपर गुरुदेवजी की कृपा है मैंने इस वर्ष प्रतियोगी परीक्षा पी.ई.टी. प्रथम प्रयास में ही निकाली मेरी वेटिंग थी मुझे काऊंसिलिंग के दौरान में सभी उपस्थित थे जब मैंने कालेज की सीटों का ब्योरा लिया तो मैं दंग रह गया कि फ्री सीट में केवल हर कालेज में एक-एक सीटें ही थी। जबकि मुझे इन्दौर के कालेज में जाना था। जिसमें वहां बाकी कालेज में सबसे अच्छा था। मुझे पूर्ण विश्वास हो गया था कि मेरे पहले २८ लड़के में से कोई न कोई यह सीट ले लेगा मैंने वहीं गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया और केवल गुरु मंत्र की शक्ति से वह सीट आखिरी तक खाली रही। और वह सीट मुझे ही प्राप्त हुई केवल गुरु मंत्र में ही इतनी शक्ति है। श्रद्धा और विश्वास के साथ किया गया मंत्र जप विफल नहीं जाता है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से मेरे असम्भव कार्य भी संभव हो गया।

– गणेश दिलावरे, बुरहानपुर,जिला खंडवा

गुरु कृपा से जान बची

मैं अपने एक मंजिल मकान पर पिताजी एवं अन्य लोगों के साथ गटर पर पत्थर की सिल को सही तरीके से रखने हेतु सिल को सभी लोग पकड़े हुए थे एक कोने पर मैं भी पकड़े हुए था उसी समय मेरा एक पांव गाटर से फिसला और छटपटाते हुए नीचे आ गिरा एवं जिस शीला को मैं अपने हाथों से पकड़ा हुआ था वह अन्य लोगों के हाथों में संभल गई अन्यथा वो मेरे ऊपर आ गिरी होती,

जब मैं नीचे आकर गिरा तो वहां पर मौजूद सभी लोग मुझसे बैचेन होकर पूछने लगे अरे, कहां पर लगी है, चोट ज्यादा तो नहीं आई सच-सच बता, लेकिन मैं भी क्या करता सत्य तो सत्य होता है मैंने सभी से सहज ही कह दिया कि मुझे कहीं पर भी नहीं लगी है और बिलकुल सही सलामत हूं। मैं भी इस घटना से चकित था क्योंकि जहां पर गिरा था वहां पर ईटों पत्थरों का ढेर बिखरा पड़ा था और सबसे बड़ा सत्य तो यह था कि जब मैं ऊपर से गिरा था तो ऐसा लगा जैसे किसी ने मुझे ऊपर से गोद में ले लिया हो और नीचे आकर बैठा दिया हो, यह सब मुझे अच्छी तरह याद है और वहां उपस्थित सभी प्रियजनों ने ऐसा ही देखा है। यह सब पूज्य गुरुदेव जी की कृपा से ही संभव हुआ है। ऐसी कृपा आप हमारे सभी गुरु भाई बहनों पर भी बनाए रखें।

– मानवेन्द्र कुमार पुरोहित झांसी (उ. प्र.)

निखिल अमृत वचन

तुम दीपावली पर मिट्टी के दिए जलाते हो, पर मैंने जीवन भर दीपावली ही मनाई है और जीवित जाग्रत दीपक जलाए हैं, तेजस्वी साधकों के रूप में, एक, दो नहीं लाखों की संख्या में, जिनके प्रखर तेज में विश्व भर का अंधकार समाप्त हो सके।

ये दीपक दीवाली के चिरागों की तरह एक रात में जल कर बुझने वाले नहीं, बल्कि युगों युगों तक प्रकाश करेंगे, क्योंकि इनकी लौ में मैंने सूर्य से प्रचण्ड ज्वाला झटक कर स्थापित की है, और ऐसा कोई तूफान नहीं जो इनकी प्रचण्ड दीपशिखा को छू सके, क्योंकि खुद मैंने ही इनको अपने प्राणों के तेल से भरा है।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

– श्रीमन्

लक्ष्मी स्वयं याति निवास हेतुः

लक्ष्मी का निवास कहां

– लक्ष्मी केवल ऐसे घर में निवास करती है, जहां उसकी पूजा, आराधना होती है।

– जहां कर्म को, परिश्रम को प्रधानता दी जाती है और आलस्य का त्याग किया जाता है, वहां लक्ष्मी रहती है। जहां आपस में प्रेम हो, स्नेह हो, मन में उत्साह हो, कामना हो, वहां लक्ष्मी स्थायी रूप से वास करती है। – जहां पूजा, साधना, उपासना तथा श्रेष्ठ कर्म होते हैं, वहां लक्ष्मी स्थायी रूप से होती है। जो लक्ष्मी को प्राप्त कर उसका श्रेष्ठ कर्मों में उपयोग करता है, वहां लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

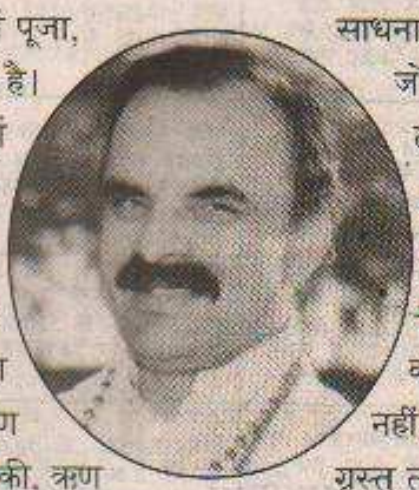

लक्ष्मी कहां नहीं रहती है

– जहां माता-पिता, गुरु, अतिथि का सत्कार नहीं होता, वहां मैं निवास नहीं कर सकती हूं।

– जो व्यक्ति हमेशा चिन्ता करता है, भयतीत रहता है, तथा शत्रु से त्रस्त होता है, वहां मैं पदार्पण नहीं करूंगी।

– जो व्यक्ति अत्यंत पातकी, ऋण ग्रस्त तथा अतिशय कंजूस है, वहां मैं नहीं रह सकती।

– जिस व्यक्ति ने गुरु दीक्षा नहीं ली है और जिस घर में पूजा नहीं होती है, वहां मैं नहीं जाऊंगी।

– जो सदा शोक पीड़ित, मंद बुद्धि और दुराचारी होता है तथा जिसकी स्त्री भ्रष्ट है, वहां मैं प्रवेश नहीं करती हूं।

– जो कटु भाषी है, हमेशा कलह करता है, जिसके घर में शुद्धता नहीं होती है, या जिसके घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता है, उस घर में भी मैं प्रवेश नहीं करती हूं।

– जो आपत्ति झेलने में, कष्ट उठाने में, परिश्रम करने में सहनशील नहीं हैं, उस पर मैं प्रसन्न नहीं होती हूं।

– जो व्यक्ति हरि पूजा, गुरु पूजा, अतिथि सत्कार नहीं करता है उस पर मेरी भी कृपा नहीं होती है।

जयतु जयतु देवी देव संघात पूज्या – हे भगवति! देवगण भी आपकी पूजा आराधना करके धन्य हो जाते है। आपकी सदा ही जय हो।

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय के वे सभी रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है – श्रेष्ठ, मध्यम और निम्न। जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निम्न समय का उपयोग तो सदा से निषिद्ध है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ भूल वश भी निम्न समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि निम्न समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे।

* **विशेष दिनांक 15 अक्टूबर तक के लिए समय का निर्धारण पिछले अंक में दिया जा चुका है। (संदर्भ: नवम्बर अंक, पेज 62)**

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (15, 22, 29 अक्टूबर 5, 12 नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 10.00 तक सायं 6.48 से 7.36 तक सायं 8.24 से 10.00 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 10.00 से 2.00 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक	दोपहर 2.00 से 6.48 तक सायं 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक
सोमवार (16, 23,30 अक्टूबर 6, 13 नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 10.48 से 1.12 तक रात्रि 7.36 से 10.00 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	प्रातः 9.00 से 10.36 तक दोपहर 1.12 से 8.24 तक रात्रि 7.00 से 9.00 तक रात्रि 10.36 से 1.24 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
मंगलवार (17, 24, 31 अक्टूबर 7, 14, नवम्बर)	दोपहर 10.00 से 12.48 तक सायं 4.30 से 5.12 तक सायं 7.36 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.00 तक	प्रातः 9.12 से 10.00 तक पहर 1.12 से 3.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 8.24 से 9.12 तक दोपहर 12.24 से 4.30 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.00 से 2.48 तक
बुधवार (18, 25, अक्टूबर 1, 8 नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 8.24 तक प्रातः 7.36 से 9.12 तक दोपहर 11.36 से 12.00 तक सायं 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	सुबह 6.00 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 12.00 तक दोपहर 2.00 से 3.36 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	दोपहर 12.00 से 2.00 तक सायं 6.00 से 6.48 तक रात्रि 12.24 से 2.24 तक
गुरुवार (19, 26, अक्टूबर 2, 9 नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक दोपहर 10.48 से 1.12 तक सायं 4.24 से 6.00 तक रात्रि 7.00 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक सायं 6.00 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	सुबह 8.24 से 9.12 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक
शुक्रवार (20, 27 अक्टूबर 3, 10, नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 1.12 तक दोपहर 12.00 से 1.12 तक सायं 6.00 से 7.12 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.36 तक	दोपहर 1.12 से 4.24 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.36 से 1.12 तक	सुबह 6.00 से 6.48 तक दोपहर 1030 से 12.24 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 7.36 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
शनिवार (21, 28 अक्टूबर 4, 11 नवम्बर)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक दोपहर 10.30 से 12.24 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	सुबह 7.36 से 8.24 तक दोपहर 1.12 से 2.00 तक सायं 6.00 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक	सुबह 6.00 से 7.36 तक सुबह 8.24 से 10.30 तक सायं 5.12 से 2.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

14 अक्टूबर कार्य पर जाने के पूर्व निखिल शतकम् की निम्न स्तुति का ११ बार पाठ करके ही जाएं –

एका प्रभो! मम् गतिस्तव पादरेणु।
एका मति स्मरणमेव पदाब्जयोस्ते।
एकं बलं शरणमस्ति तवैव सर्वं,
वन्दे गुरो! निखिला तैचरणारविन्दम् ॥

15 अक्टूबर तनक की पांच ढेरियां बनाकर पांचों पर पुष्प, अक्षत, कुंकुम चढाकर जाएं।

16 अक्टूबर भगवान गणपति को लड्डू का भोग लगाएं तथा उनके चरणों में पांच लौंग चढाएं।

17 अक्टूबर एक पात्र में जल लेकर उसमें पुष्प, अक्षत, कुंकुम डालकर किसी भी वृक्ष की जड़ में डाल दें।

18 अक्टूबर बाहर जाने से पूर्व निम्न श्लोक का उच्चारण सात बार करके ही बाहर जाए।

ध्यानं शृणु महादेवि! सर्वानन्द प्रदायकम्।
सर्व सौख्यकरं नित्यं भुक्तिमुक्ति विधायकम् ॥

19 अक्टूबर **हनुमान बाहु** जल से स्नान कराकर सिंदूर से पूजन करके ही कार्य हेतु जाएं। (न्यौछावर ६०/-)

20 अक्टूबर आज अहोई अष्टमी है आज आप दूध का भात बनाकर अपने इष्ट देव को भोग लगाकर इसे बच्चों में बांट दें।

21 अक्टूबर गुरु जन्म दिवस के रूप में प्रातः **'निखिलेश्वरानन्द स्तवन'** का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चिन्तन करें। सामर्थ्यानुसार गुरु सेवा करने का संकल्प लें।

22 अक्टूबर कार्य हेतु जाते समय पांच इलायची को कागज में रख कर जेब में डाल कर ले जाएं, वापस लौटते समय कागज को मार्ग में फेंक दें।

23 अक्टूबर भगवान राम का ध्यान कर उनके समक्ष घी का दीपक लगाकर ही कार्य हेतु जाएं।

24 अक्टूबर आज धनत्रयोदशी है आज के दिन आप सुबह धन लक्ष्मी का ध्यान कर उनके समक्ष पांच घी के दीपक जलाकर ही उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।

25 अक्टूबर **'पारद लक्ष्मी'** (न्यौछावर ३००/-) को जल से स्नान कराकर, कुंकुम, अक्षत से पूजन करें।

26 अक्टूबर आज महालक्ष्मी पूजन है पारद लक्ष्मी का पंचोपचार पूजन करें। तथा पांच मिनट श्री मंत्र का जप करें।

27 अक्टूबर आज अमावश है आज आप लक्ष्मी चित्र के समक्ष **ॐ श्रीं महालक्ष्मी प्रसन्नभव श्रीं ॐ नमः** मंत्र का ग्यारह बार जप करें।

28 अक्टूबर दीपक को उत्तर दिशा की ओर करके लगा दें।

29 अक्टूबर प्रातः काल **निखिलेश्वरम शतकम** के पांच श्लोक का पाठ कर अपने भाई की लम्बी उम्र की प्रार्थना करें।

30 अक्टूबर किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'ॐ' मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।

31 अक्टूबर अपने दिन का आरम्भ करते समय जब बाहर निकलें, तो पहले आप दाहिना पांव बाहर रखें।

1 नवम्बर पीपल के पत्ते पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उसे मंदिर में चढाकर आ जाएं।

2 नवम्बर तेल का दीपक लगाकर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत से कर कार्य हेतु जाएं।

3 नवम्बर दुर्गा चालीसा का पाठ करके कार्य हेतु जाए।

4 नवम्बर एक सुपारी किसी पात्र में रखकर सिंदूर से पूजन करके ही कार्य हेतु जाएं।

5 नवम्बर पीपल के पेड़ की पांच परिक्रमा करके ही कार्य हेतु जाएं।

6 नवम्बर राई लेकर बगलामुखी के बीज मंत्र का जप करते हुए अपने चारों ओर फेंकें।

7 नवम्बर अपने मस्तक पर प्रातः अष्टगंध का तिलक गुरु मंत्र बोलते हुए लगावे।

8 नवम्बर दिन का प्रारम्भ कुलदेवता का ध्यान करके ही करें।

9 नवम्बर **इन्द्राक्षी स्तोत्र** का एक बार पाठ कर बाहर जाए।

10 नवम्बर पांच बिल्व पत्र को शिवलिंग पर चढाएं।

11 नवम्बर प्रातः गुरु मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।

12 नवम्बर दही को ग्रहण करके ही शुभ कार्य के लिए जाएं।

13 नवम्बर गुरु गीता के प्रथम पांच श्लोक का पाठ करें।

14 नवम्बर हमेशा ही प्रसन्न रहकर कार्य को आरम्भ करें।

मनवा मन की आंखें खोल

तस्मै नमः शिव संकल्पमस्तु

॥ मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ॥

मन ही मनुष्यों के लिए बन्धन और मोक्ष का कारण है।

व्यक्ति का मन अर्थात चित्त जैसी इच्छा करता है, उसे वैसा ही प्राप्त होता है। मन के साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भय, पीड़ा, कष्ट की स्थितियां संलग्न हैं, अतः प्रत्येक व्यक्ति इन स्थितियों का अनुभव करता है।

अक्सर यह सुना जाता है, कि आज मेरा मूड ठीक नहीं है, इस काम में मेरा मन नहीं लग रहा है, आज खाना खाने की इच्छा नहीं है, आज मेरा हृदय काफी व्यथित है आदि। अतः यह निश्चित है, कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी मनः स्थिति पर निर्भर करता है। जैसी मन की स्थिति होती है, शरीर वैसा ही व्यवहार करने लगता है। मन के प्रसन्न होने से व्यक्ति प्रसन्न होता है, मन के दुःखी होने से व्यक्ति दुःख अनुभव करता है।

जब मन किसी वस्तु की इच्छा करता है, कोई कामना करता है, कुछ प्राप्त करना चाहता है, कुछ छोड़ना चाहता है, हर्ष अनुभव करता है, दुःखी होता है, तो निश्चय ही यह मनुष्य को बंधन युक्त करता है।

आलस्य और प्रसाद भी मन के ही उत्पाद हैं, अहंकार भी मन में ही उत्पन्न होता है, जैसा मन कहता है, वैसा ही शरीर करता है और ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हमारा मन पर नियंत्रण नहीं है, मन हमारे काबू में नहीं है, अपितु हम उसके दास हो गये हैं और वह हमारा स्वामी।

ऐसी स्थिति में हम अपने विवेक से निर्णय नहीं ले पाते, क्योंकि सामान्य मनुष्य का मन चञ्चल होता है और वह उसे इन्द्रिय जनित विषय-वासनाओं की ओर अग्रसर करता है तथा व्यक्ति उसका गुलाम बन कर उन विषय-वासनाओं में लिप्त हो जाता है। मन ही मोह उत्पन्न करता है, कि यह मेरा पुत्र है, यह मेरी पुत्री है, यह मेरी पत्नी है, ये मेरे स्वजन हैं, मन ऐसा मानता है और व्यक्ति को उन बंधनों में जकड़ लेता है, जो सामाजिक बंधन कहलाते हैं, जो सांसारिक बंधन कहलाते हैं।

मन जब कामासक्त होता है, तो व्यक्ति को कामान्ध बना देता है, जब मन क्रोध युक्त होता है, तो व्यक्ति को क्रोधी बना देता है, जब मन में लालच समा जाता है, तो व्यक्ति को लालची बना देता है, जब मन संशयग्रस्त होता है, तो व्यक्ति को अविश्वासी बना देता है, जब मन आलस्य से ग्रसित होता है तो व्यक्ति को आलसी बना देता है, अर्थात मन ही वह कारण है, जो व्यक्ति के शरीर को नियंत्रित करता है, उसके व्यवहार को नियंत्रित करता है।

अतः यह स्पष्ट है, कि यदि इन काम, क्रोध आदि

बुराइयों पर विजय प्राप्त करनी है, तो पहले मन पर विजय प्राप्त करना होगा।

और जब व्यक्ति मन को नियंत्रित कर लेता है, तो वह काम, लोभ, मोह, अहंकार आदि स्थितियों पर भी नियंत्रण प्राप्त कर लेता है फिर ये सब उसके जीवन में, उसके व्यवहार में, उसके आचार-विचार पर प्रभावी नहीं हो पाते, वह काम, क्रोध आदि की परिधि से परे हो जाता है, वह आसक्ति से परे हो जाता है, वह कुछ प्राप्त करने या त्याग करने की स्थितियों से भी ऊपर उठ जाता है।

अतः वह सुख दुःख हानि-लाभ आदि प्रवृत्तियों से ऊपर उठ जाता है, वह न सुख अनुभव करता है न दुःख, वह न क्रोध अनुभव करता है, न पीड़ा, न वह सम्मान प्राप्त होने पर प्रसन्न होता है, न अपमानित होने का ही उसके ऊपर कोई प्रभाव पड़ता है।

इसीलिए ज्ञानी पुरुषों ने कहा है, कि कामनाओं का त्याग कर मन को निर्विचार बनाओं। जब मन निर्विचार होगा तो इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त हो सकेगा, तभी आसक्ति का नाश होगा, जब आसक्ति का नाश होगा, तभी हर्ष और विषाद, सुख और दुःख की प्रवृत्तियों से वह बच सकेगा। अतः मन को निर्विचार और निर्विकार बनाना ही बंधन मुक्त होना है।

जब व्यक्ति के मन में सोच-विचार नहीं हो, कामना नहीं हो, सुख-दुःख का अनुभव नहीं हो, कुछ प्राप्त होने पर प्रसन्नता नहीं हो, कुछ खो जाने पर शोक नहीं हो, तो यह स्पष्ट है, कि वह व्यक्ति मुक्ति या मोक्ष की ओर अग्रसर हो रहा है।

आसक्ति ही बंधन है तथा अनासक्ति मोक्ष का मार्ग, अतः आवश्यकता आसक्ति का त्याग कर मन को निर्विचार बनाने की है, क्योंकि आसक्ति ही पुनर्जन्म लेने का कारण है, आसक्ति के कारण ही व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र में घूमता रहता है, बार-बार जन्म लेता रहता है।

जब मन स्थिर होगा, व्यक्ति के नियंत्रण में होगा, तभी व्यक्ति ईश्वर के चिंतन में रत हो सकेगा।

अतः साधक का यह प्रथम कर्त्तव्य है, कि वह मन पर नियंत्रण प्राप्त करने का प्रयत्न करें, आसक्ति को दूर करने का प्रयत्न करे। यद्यपि यह अत्यन्त कठिन है, क्योंकि मन की चञ्चलता को समाप्त कर उसे स्थिरता प्रदान करना सहज किया नहीं है। परन्तु –

करत करत
अभ्यास ते,
जड़मति होत
सुजान।
रसरी आवत जात
ते, सिल पर पड़त
निसान॥

सतत प्रयत्न के द्वारा ही मन पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

अतः यह स्पष्ट है, कि व्यक्ति के स्वयं के हाथ में ही है, कि वह बंधन युक्त रहना चाहता है या बंधन मुक्त। जब तक वह देह को ही अपना सब कुछ मानता रहेगा, इन्द्रिय जनित सुख के अधीन रहेगा, चूंकि इन्द्रियां मन के अधीन हैं, अतः मन के अधीन होने के कारण वह बंधन युक्त रहेगा। जब व्यक्ति देह बोध से ऊपर उठता है, मन धीरे-धीरे उसके नियंत्रण में आने लगता है और मन के पूर्ण नियंत्रण होते ही वह सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

जब मन पूर्ण रूप से नियंत्रित होगा, तभी इन्द्रियां भी पूर्णतः नियंत्रित हो सकेंगी, क्योंकि सभी इन्द्रियां मन के ही अधीन हैं। जब मन नियंत्रित होगा, जब उसकी चञ्चलता समाप्त होगी, तभी व्यक्ति साधनाओं या यौगिक क्रियाओं को

पूर्णता से सम्पन्न कर सकेगा, तभी वह साधक की वास्तविक भावभूमि पर अपने पैर रख सकेगा, तभी वह इष्ट से साक्षात्कार कर सकेगा।

मन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए सबसे पहला आवश्यक तथ्य है, कि इसे शुभ संकल्प युक्त बनाया जाय। व्यक्ति के सामने ईश्वर प्राप्ति का लक्ष्य हो और वह उसको पूर्णता से प्राप्त करने के लिए जुट जाये।

जब यह संकल्प दृढ़ होगा, तो व्यक्ति किसी भी सांसारिक स्थिति से विचलित नहीं होगा। ऐसा ही संकल्प लेकर योगी जन जंगलों में, पर्वतों की कन्दराओं में भी सर्दी, गर्मी, धूप, वर्षा आदि परिस्थितियों का सामना करते हुए कन्द-मूल खा कर भूख मिटाते हुए, झरनों के जल से प्यास बुझाते हुए भी पूर्ण आनन्द अनुभव करते हैं और इससे हीन व्यक्ति को पेट भरा होने पर भी कोमल, मखमली, गद्दे पर सोने पर भी रात भर नींद नहीं आती।

अतः व्यक्ति सर्वप्रथम दृढ़ संकल्प युक्त हो, कि उसे साधना के पथ पर बढ़ना ही है, चाहे कितनी भी विषम परिस्थितियां आयें, चाहे कितना भी विरोध सहना पड़े, चाहे कितनी भी बाधा आये, वह हर बाधा को तोड़ता हुआ इस पथ पर अग्रसर होगा ही।

मन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए दूसरा तथ्य यह है, कि व्यक्ति इस वास्तविकता को जानने का प्रयत्न करे, कि देह बोध क्षण भंगुर है, अनित्य है, विनाशशील है, नष्ट होने वाला है। जो देह बोध के सम्बन्ध हैं, जो इन्द्रिय जनित सुख है, वह कभी न कभी समाप्त हो जायेगा। पुत्र, पुत्री, पत्नी, स्वजन, मित्र, भवन, भोग-विलास की वस्तुएं यहां तक कि व्यक्ति का स्वयं का शरीर भी सब कुछ समाप्त हो जाने वाला है।

यह सम्पूर्ण विश्व एक रंगमंच मात्र है, यहां जो भी दिखाई दे रहा है, वह सब अनित्य है, कल्पित है। जिस प्रकार सिनेमा के पर्दे पर फिल्म चलती है, हम भिन्न-भिन्न दृश्य, व्यक्ति या क्रिया-कलाप देखते हैं, लेकिन फिल्म के समाप्त होने पर वहां कुछ भी शेष नहीं रहता, उसी प्रकार इस विश्व रूपी रंगमंच पर भी विविध फिल्में चलती रहती हैं, लेकिन अंत में कुछ भी शेष नहीं रहता।

इसे जान कर व्यक्ति अपने देह बोध को त्यागता हुआ, आसक्ति को समाप्त करता हुआ निर्लिप्त होने का प्रयत्न करे तथा ईश्वर, जो कि नित्य है, शाश्वत है, उसका चिंतन मनन करे, उसे प्राप्त करने का साधन करे।

मन पर नियंत्रण प्राप्त करने का तीसरा तथ्य यह है, कि व्यक्ति इष्ट और गुरु के चरणों में पूर्ण समर्पण का भाव रखे। समर्पण के बारे में गीता में कहा गया है –

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

अर्थात सभी धर्मों का त्याग कर कर्मों का, सभी कामनाओं का त्याग कर मन को आसक्ति और विषय-वासनाओं से मोड़ते हुए इष्ट या सद्गुरु के चरणों में ही पूर्ण रूप से लगाना ही समर्पण है।

और जब समर्पण होता है, तब सांसारिक दायित्वों के प्रति केवल मात्र कर्तव्य बोध ही शेष रह जाता है, लगाव या आसक्ति नहीं रहती – न पत्नी, न पुत्र, न बन्धु, न मित्र, न भवन, न ही स्वयं का देह बोध।

गुरु चरणों में पूर्ण समर्पण होने के पश्चात तो गुरु आज्ञा पालन के अलावा कुछ करने के लिए शेष रह ही नहीं जाता, फिर तो यह सद्गुरु का कर्तव्य हो जाता है, कि वे उसे पूर्णता प्रदान करें, उसे आज्ञा प्रदान कर आत्म बोध कराते हुए [illegible]

न प्रदान करें।

इस प्रकार व्यक्ति सभी बंधनों से मुक्त हो सकता है, तब उसे विषम परिस्थितियों पर नियंत्रण और दृढ़ संकल्प युक्त हो कर चित्त को ईश्वर और गुरु चरणों में लगाने की क्षमता प्राप्त होती है। इसीलिए कहा गया है –

॥ तस्मै मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

जब तक परम तत्व का ज्ञान नहीं हो जाता और परम तत्व को मन ग्रहण नहीं कर लेता, तब तक पूर्णता नहीं आ सकती। और जब तक पूर्णता नहीं आ सकती तब तक संसार में विषाद, संताप ही रहेगा। और जैसे ही परम तत्व का ज्ञान होने लगता है तब वैसी ही स्थिति बनती है मानो प्रातः काल सूर्योदय हो रहा है, जिसमें शीतलता भी है, ऊष्णता भी है, लालिमा भी है, एक शांति भी है। ठीक वैसी ही स्थिति बन जाती है जब कोई कली पुष्प में परिवर्तित हो रही होती है। धीरे-धीरे एक-एक पंखुड़ी का खिलना और एकाएक पूर्णता पा लेना, यही परम तत्व की अनुभूति है।

❋ पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

उप समीपं प्रतिष्ठते

ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु चरणों में बैठना उपनिषद है।

उपनिषद तो ज्ञान सागर है

प्रश्नोपनिषद सार

(द्वितीय खंड)

गतांक – पत्रिका में पिछले चार अंकों से उपनिषदों की मूल मंत्रों सहित व्याख्या की जा रही है पाठकों के निरन्तर पत्र प्राप्त हो रहे हैं। उनका लिखना है कि अब तक तो हमें ऐसा ही लगता था कि उपनिषद ऋषियों मुनियों और ज्ञानियों के योग्य ही विषय वस्तु है। अब तो ऐसा लगता है कि उपनिषदों के एक-एक मंत्र को बार-बार पढ़ूं और उन भावों को अपने जीवन में उतारूं ।

अब तक ईशावास्योपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद और प्रश्नोपनिषद का ज्ञान प्रस्तुत किया गया है प्रश्नोपनिषद प्रथम खंड में आपने पढ़ा कि पिप्पलाद ऋषि के पास छः ऋषि पुत्र सुकेशा, सत्यकाम, गार्गी, कोशल्य, वैदर्भि और कबन्धी छः ऋषि पुत्र पहुंच कर उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करना चाहते हैं। पिप्पलाद ऋषि ने उन्हें अपना शिष्य बनाकर एक वर्ष के उपरान्त उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। पूर्वार्क में तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, दक्षिणायन, उत्तरायण, प्राणशक्ति इत्यादि के सम्बन्ध में विवरण पढ़ा।

प्रस्तुत अंक में प्राण, अपान, समान, और व्यान, उदान और शरीर पिंड का स्वरूप और प्राण, मन आत्मा ब्रह्म का उत्तरोत्तर महत्व इत्यादि से सम्बन्धित प्रश्नों का समाधान किया जा रहा है।

इन प्रश्नों से सम्बन्धित मुख्य-मुख्य श्लोक और उनसे सम्बन्धित व्याख्या भी स्पष्ट भी जा रही है। आने वाले समय में प्रत्येक उपनिषद पर सदगुरुदेव द्वारा दिये गए व्याख्यात्मक विवरण को पुस्तक रूप में अवश्य ही प्रकाशित किया जाएगा।

मूल प्रश्न

अथ हैनं कौशल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छ / भगवन्कुत एष प्राणो
जायते कथमायात्यस्मिञ्छरीर आत्मानं वा प्रविभज्य कथं
प्रातिष्ठते केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिधत्ते कथमध्यात्ममिति ॥१॥

अर्थ – अश्वल ऋषि के पुत्र कौशल्य ने जिज्ञासा व्यक्त की, हे आदरणीय ये तो आपने बताया कि सृष्टि में जो कुछ है उसे **प्राण** ही धारण करता है लेकिन यह **'प्राण'** स्वयं कहां से उत्पन्न होता है? यह शरीर में किस प्रकार से आता है? प्राण अपने भिन्न-भिन्न विभाग करके शरीर में कैसे स्थित हैं? देह शांत होने पर यह किस प्रकार शरीर में से निकलता है? बाह्य संसार को यह प्राण किस प्रकार धारण करता है? और आत्मा को यह शरीर में किस प्रकार धारण करता है?

व्याख्या – ये तो सत्य है कि सब वस्तुओं में प्राण है

और प्राण के कारण से ही इस जगत की सृष्टि चलती है। लेकिन इस देह में भी यह प्राण किस प्रकार से आता है और यह प्राण का आत्मा से क्या सम्बन्ध है? शरीर का प्रत्येक अंग अपना अपना कार्य करता है उसमें प्राण उसे किस प्रकार से चलाता है? प्रश्न के मूल में प्राण, आत्मा और शरीर के आपसी सम्बन्ध के बारे में जिज्ञासा व्यक्त की है। तीनों पृथक होते हुए भी एक है, क्योंकि सामान्य व्यक्ति को केवल देह ही दिखाई देती है और वह देह को ही प्राण और आत्मा मान लेता है यही संसार में दुख का मूल कारण है। अतः इस विषय पर प्रत्येक को विचार करना आवश्यक है। इस देह से परे इसके भीतर स्थित प्राण और आत्मा को किस प्रकार संजीवन रखा जाएं।

देह गत अवस्था में रोग, शोक, व्याधी, जरा, पीड़ा सब कुछ आता ही है। यदि कोई मनुष्य देह में पीड़ा होने पर केवल इतना विचार कर ले कि यह देहगत पीड़ा है और मैं अपनी प्राण शक्ति से इस पर विजय प्राप्त कर सकता हूं तो यह समस्या अपने आप अस्थायी हो जाती है। देह तो मूल रूप से एक बाहरी आवरण है। इसके भीतर स्थित प्राण ही परम तत्व है जब तक वह परम तत्व जाग्रत रहता है। तो देह को भी विपरीत स्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता।

आत्मन एष प्राणो जायते / यथैषा पुरुषे
छायैतस्मिन्नेतदाततं मनोकृतेनायात्यस्मिञ्शरीरे ॥३॥

यथा सम्राडेवाधिकृतान्विनियुङ्क्ते
एतान्ग्रामानेतान्ग्रामान
धितिष्ठस्वेत्येवमेवैष प्राण इतरान्प्राणान्पृथक्पृथगेव
संनिधत्ते ॥४॥

पायूपस्थेऽपानं चक्षु श्रोत्रे मुखनासिकाभ्यां प्राणः
स्वयं प्रातिष्ठते मध्ये तु
समानः / एष ह्येतद्धुतमन्नं समं नयति तस्मादेताः
सप्तार्चिषो भवन्ति ॥५॥

अर्थ – पिप्पलाद ऋषि कहते हैं, यह प्राण आत्मा से उत्पन्न होता है। जैसे पुरुष के साथ सदैव छाया लगी रहती है उसी प्रकार आत्मा के साथ प्राण लगा है और यह प्राण मन की प्रेरणा से किये हुए कार्यों से इस देह में आता है।

जिस प्रकार चक्रवर्ती राजा अपने अधीन कर्मचारियों को नियुक्त करता है कि इन ग्रामों को अपने अधिकार में रखकर अधिष्ठाता बनो उसी प्रकार यह प्राण अपने ही विभक्त दूसरे प्राणों को नियुक्त करता है।

गुप्त स्थान में अपान, प्राण को, आंख, कान, मुख, नासिका में स्वयं प्राण रूप में और शरीर के मध्य में समान प्राण रूप में प्रतिष्ठित होता है। समान प्राण ही जठराग्नि अर्थात पेट में ग्रहण किये गए भोजन को पचाकर पूरे शरीर को समान रूप से बांटता है और इसी कारण सात प्रदीप्त ज्वालाएं दो नेत्र, दो कान, दो नाक, और एक मुख और जिव्हा अपने अपने कार्य करने में समर्थ होती है।

व्याख्या – आत्मा अर्थात परम तत्व परमात्मा से ही यह प्राण उत्पन्न होता है और जहां आत्मा रहेगी वहां यह प्राण रहेगा। जिस प्रकार छाया पुरुष से जुड़ी है उसी प्रकार प्राण आत्मा से जुड़ा है। पूर्वजन्मकृत कार्य ही इस शरीर में आत्मा को स्थापित करते हैं और जैसे ही शरीर में आत्मा प्रवेश करती है प्राण क्रियाशील हो जाता है। मनुष्य चाहे कितने ही वैज्ञानिक तर्क दें लेकिन उसे यह मानना ही पड़ेगा कि शरीर का मूल क्रियात्मक मूल आधार स्तम्भ प्राण है। और प्राण का आधार स्तम्भ आत्मा है। सामान्य व्यक्ति केवल क्रियात्मक पक्ष ही देखता है। इस कारण वह पंचइन्द्रियों को प्रधानता देता है। लेकिन इन पंचइन्द्रियों को प्रेरणा देने वाला तो प्राण ही है। यद्यपि प्राण दिखाई नहीं देता लेकिन क्या प्राण के बिना शरीर रह सकता है।

सामान्य जीवन में एक मुहावरा प्रयोग में आता है कि डर के मारे 'उसके प्राण ही सूख गये' अथवा प्रसन्नतावश उसका प्राण खुशी से भर उठा।

सामान्य व्यक्ति के जीवन में यदि डर, घबराहट की स्थिति आए और उसे पूछा जाए कि क्या आपके कान को डर लग रहा है, नाक को डर लग रहा है। मुह को डर लग रहा है। हाथ को डर लग रहा है, किसको डर लग रहा है तो उसका यही उत्तर होगा कि प्राणों को डर लग रहा है। अर्थात ये इन्द्रिया तो केवल बाह्य स्वरूप है इन इन्द्रियों में डर घबराहट दुःख प्रसन्नता, आनन्द, ज्ञान जैसी चेतना नहीं है। यह सारी चेतना तो प्राण के अधिकार क्षेत्र में है। इसलिए मनुष्य इन्द्रियों का उपभोग प्राण के निर्देश अनुसार ही करें।

इसी खण्ड के दूसरे श्लोक में प्राण द्वारा अपनी ही विभक्ति कर अलग-अलग भागों में बांटने का विवरण आया है प्राण भी स्वयं चक्रवर्ती सम्राट होते हुए अपना कार्य बांट देता है। जिस प्राण तत्व द्वारा गुप्तेन्द्रियों से सम्बन्धित कार्य

होते है वे अपान प्राण कहलाते हैं। जिस प्राण द्वारा नेत्र, कर्ण मुख की क्रिया सम्पन्न होती है, उसे प्राण कहा गया है और पेट की क्रिया जो प्राण तत्व सम्पन्न करता है वह समान प्राण कहलाता है। उसका कार्य शरीर में आए अन्न को पचाकर उसे शक्ति तत्व में परिवर्तित कर शरीर के सभी अंगों में समान रूप से भेजना है। देह रचना और देह क्रिया को स्पष्ट रूप से समझाते हुए कहा गया है कि प्राण कभी भी भेद नहीं करता कि शरीर के किसी भाग में कम ऊर्जा को प्रवाहित करें। यह तो मनुष्य अपने कार्यों द्वारा, इन्द्रियों को हाथ, पैर इत्यादि को क्षति पहुंचा देता है। तब भी समान प्राण उसे ऊर्जा देकर ठीक रखने ठीक करने का प्रयास अवश्य ही करता रहता है। इसलिए मनुष्य को ऐसा ही भोजन ग्रहण करना चाहिए जो समान प्राण ग्रहण करने योग्य समझे सुपाच्य हो, सात्विक हो, जिससे ऊर्जा की प्राप्ति हो। गलत प्रकार का अन्न ग्रहण करके शरीर में ऊर्जा संचारित नहीं हो सकती।

इसीलिए शास्त्रों में मांस तथा अन्य त्याज्य वस्तुओं का प्रयोग वर्जित कहा गया है। क्योंकि इससे देह को शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती अपितु देह की शक्ति का ह्रास हो सकता है। प्राण तो जैसा अन्न आप ग्रहण करेंगे और उसमें जैसे भी शक्ति होगी उस शक्ति को शरीर के सभी अंगों में पहुंचा देगा। यह मन पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार का भोज्य प्रदार्थ ग्रहण करें। गलत भोज्य पदार्थ ग्रहण करने से ही नेत्रों की शक्ति, मुख की शक्ति, नाक की शक्ति और हाथ पैरों की शक्ति कम होती है और श्रेष्ठ भोजन करने से इन सभी अंगों की शक्ति समान रूप से वृद्धि करती है।

प्रत्येक पूजा के प्रारम्भ में दैनिक संस्कार में भी आचमनी में जल भरकर, प्राणाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, अपानायय स्वाहा, उदानायस्वाहा और व्यानायय स्वाहा कहा जाता है। किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले प्राण के इन पांच भागों तत्वों को पूर्ण रूप से जाग्रत और साक्षीभूत एवं शुद्ध करने के लिए ही जल तत्व ग्रहण किया जाता है। अर्थात मेरे प्राण के इन पांच भागों में यदि कोई अशुद्धि है तो वह अशुद्धि दूर हो जाए और मैं आत्म भाव से प्राण से ऊपर उठकर श्रेष्ठ कार्य में संलग्न हो सकूं।

हृदि ह्येष आत्मा। अत्रैतदेकशतं नाडीनां तासां शतं शतमेकैकस्यां
द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः प्रतिशाखानाडीसहस्राणि
भवन्त्यासु व्यानश्चरति ॥६॥

अथैकयोर्ध्व उदानः पुण्येन पुण्यं लोकं नयति पापेन पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् ॥७॥

तेजो ह वा उदानस्तस्मादुपशान्ततेजाः। पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसि संपद्यमानैः ॥९॥

यच्चित्तस्तेनैष प्राणमायाति प्राणस्तेजसा युक्तः सहात्मना यथासंकल्पितं लोकं नयति ॥१०॥

अर्थ – आत्मा का निवास हृदय में है, इस हृदय से मुख्य रूप से १०१ नाड़ियां है, और प्रत्येक नाडी से सौ सौ शाखाएं निकली है और प्रत्येक शाखा से ७२००० प्रति शाखाएं निकली हैं, हृदय से लेकर इस सम्पूर्ण रक्त संचारणीय संस्थान में ज्ञान स्वरूप प्राण विचरण करता है।

हृदय से एक नाडी ऊर्ध्व वेश मस्तिष्क को जाती है, इसमें उदान नामक प्राण ऊपर से नीचे तक और नीचे से ऊपर तक विचरण करता है। पुण्य कर्म करने वालों को यह उदान प्राण आत्मा को, उदान पुण्यलोक में ले जाता है और पाप कर्म करने वाले को उदान पापलोक में ले जाता है। दोनों प्रकार के कर्म करने से उदान प्राण आत्मा को मनुष्य लोक में ले जाता है।

शरीर में जैसे उदान प्राण है वैसे ही बाह्य जगत में तेज है। उदान प्राण द्वारा ही आत्मा शरीर मे रहती है तब तक शरीर में तेज रहता है। जब तक आत्मा उदान प्राण के साथ शरीर से निकलती है जब शरीर का तेज शांत हो जाता है तो इन्द्रियां भी शांत हो जाती है और मनुष्य पुनर्जन्म की तैयारी करने लगाता है।

देह शांत होने के समय जिस प्रकार का चित्त होता है उसी प्रकार का चित्त प्राण के पास पहुंचता है प्राण शक्ति तेज चित्त और आत्मा को अपने-अपने संकल्पों के अनुसार के लोक में ले जाता है।

व्याख्या – शरीर रचना के साथ-साथ तंत्रिका तंत्र की भी व्याख्या की गई है किस प्रकार हमारे शरीर रुधिर शरीर के सब अंगों में पहुंचता है उसी प्रकार इस सूक्ष्म शरीर की नाड़ियां शरीर के सब स्थानों पर पहुंच कर क्रियाशील रहती है। पूरे शरीर में रक्त के साथ-साथ तंत्रिका तंत्र अर्थात नर्वस सिस्टम में व्यान नामक प्राण विचरण करता है लेकिन व्यान प्राण से भी महत्वपूर्ण उदान प्राण हृदय प्रदेश से सुषुम्ना नाड़ी में स्थित होकर मध्य से ऊपर और मध्य से नीचे स्थित

होता है। ऊपर की ओर मस्तिष्क स्थित होता है जो व्यक्ति अपनी शक्ति को मस्तिष्क की ओर ले जाते हैं। अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करते हैं और अपने बुद्धि ज्ञान को प्रधानता देते हुए उसी के अनुसार कार्य करते है तो वह कार्य पुण्य कार्य बन जाता है। उदान प्राण तो केवल एक वाहक है और यदि मनुष्य केवल निम्न स्तरीय कार्यों की ओर रत रहता है अर्थात अपने उदान प्राण को ज्ञान बुद्धि से विवेचित न कर शरीर के निम्न भाग केवल इन्द्रिय सुख की ओर ही ले जाता है और शरीर को केवल काम सुख की ओर ही प्रवृत्त करता है तो उससे जीवन में पापलोक की स्थिति बनती है।

पाप और पुण्य-लोक कोई अलग नहीं है मनुष्य अपनी शक्ति का उपयोग ज्ञान के लिए करें अथवा वासना के लिए करें यह उसकी चित्त प्रवृत्ति पर निर्भर करता है।

बाह्य जगत में प्राण ही आदित्य रूप होकर उदय होता है चक्षु मानव शरीर के सूर्य हैं और इस ब्रह्माण्ड के चक्षु सूर्य है। सूर्य के साथ प्राण का सम्बन्ध है पृथ्वी के साथ अपान प्राण का। पृथ्वी तो सूर्य से खीची रहती है लेकिन बाह्य जगत में अपान ही गुरुत्व शक्ति रूप में स्थित होकर पृथ्वी को नीचे की ओर खींचता है। इसी कारण पृथ्वी टिकी हुई है।

जैसा बाह्य जगत में पृथ्वी, आकाश, सूर्य, वायु, जल है वैसे ही शरीर में भी ये पंच प्राण – प्राण, समान, अपान, व्यान और उदान है। सूर्य प्राण तत्व का प्रतीक है, भूमि अपान तत्व का, जल समान तत्व, वायु व्यान तत्व का, आकाश उदान तत्व का बोधक है।

शास्त्रों में कहते हैं कि मृत्यु के समय जिस प्रकार का चित्त होता है उसी के अनुरूप मनुष्य विभिन्न लोकों में जाता है लेकिन क्या मृत्यु के समय यदि चित्त विचार से युक्त हो गया और जीवन भर दूषित विचारों से युक्त रहा तो भी क्या मनुष्य श्रेष्ठ लोक प्राप्त कर सकता है ?

प्राण की मानसिक शक्ति उसका चित्त है और चित्त के द्वारा ही संकल्प, विकल्प बनते है चित्त का निर्माण एक दिन में नहीं होता मनुष्य अपने पूरे जीवन में जिस प्रकार के संकल्पों और विकल्पों से जीवन बनाता है उसी के अनुरूप उसका चित्त बनता है चित्त वृत्ति एक दिन में शुद्ध भी नहीं हो सकती है चित्त वृत्ति निरन्तर श्रेष्ठ चिन्तन से श्रेष्ठ कार्यों के द्वारा ही उत्तम बन सकती है। सांसरिक भाषा में चित्त का अर्थ मन भी है इस मन को जिस प्रकार से व्यक्ति अपने जीवन में सजाता संवारता है अथवा बिगाड़ता है उन सब स्थितियों से ही उसके जीवन की गति निर्धारित होती है। जीवनभर के दोष अंतिम समय में कोई एकाध श्रेष्ठ कर्म कर देने से श्रेष्ठ चित्त नहीं बन सकते हैं।

कितने आश्चर्य की बात है कि मनुष्य अपने पूरे जीवन देह पर अभिमान करता हुआ यही समझता है कि मैं ही प्राण हूं आत्मा हूं, सब कुछ हूं, और विभिन्न प्रकार के अनुचित कार्य करता रहता है, लेकिन जैसे ही वृद्धावस्था आने लगती है अर्थात शारीरिक शक्ति क्षीण होने लगती है तब उसे ईश्वर, आत्मा ज्ञान, तपस्या, साधना, देवता, सारे याद आने लगते हैं। अपनी चित्त वृत्तियों को सुधारने का प्रयत्न भी करता है लेकिन पूरे जीवन जिस प्रकार से अपने देह और मन को ढाल दिया उससे बाहर निकलना उसके स्वयं के लिए मुश्किल हो जाता है। विभिन्न प्रकार के मोह पाश, वासना पाश, कर्मपाश उसे जकड़े रहते है।

जहां जीवन में प्रारम्भ से ही संस्कार नहीं होते वहां मनुष्य पशु की भांति जीवन व्यतीत करता है। ज्ञान उसे प्राप्त अवश्य होता है लेकिन तब तक जीवनकाल का बहुत अधिक समय बीत गया होता है। तब उसे अपने द्वारा किए गए कर्मों पर क्षोभ, पश्चाताप, क्रोध भी आता है। इसीलिए हर शास्त्र में बार-बार कहा जाता है कि अपनी बुद्धि को स्थिर रखते हुए जीवन में क्रियाशील रहो और इसीलिए पिप्पलाद ऋषि ने भी इस मूल प्रश्न के अंतिम संभाग में यही कहा कि

य एवं विद्वान्प्राणं वेद न हास्य प्रजा हीयतेऽमृतो भवति तदेष श्लोकः ॥११॥
उत्पत्तिमायतिं स्थानं विभुत्वं चैव पञ्चधा।
अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते
विज्ञायामृतमश्नुत इति ॥१२॥

अर्थ – पिप्पलाद ऋषि कहते है कि जो प्राण के सम्बन्ध में सब कुछ जानता है वह मृत्यु के पश्चात भी अमर हो जाता है जो प्राण के विषय में यह जानता है कि इसकी उत्पत्ति कहां से होती है पांच स्थान कौन से है किस प्रकार यह पंचप्राण शरीर में और बाह्य रूप में विद्यमान है इन दोनों का आपसी सम्बन्ध किस प्रकार से स्थापित है वह व्यक्ति अपने जीवन में ही अमृत तत्व प्राप्त कर लेता है।

एकाकार होने की क्रिया ही तुम्हें ईश्वर तक पहुंचा सकती है, तुम्हारें अंह को गलाकर उस विराटता में निमग्न कर सकती है, जिसे तुम ब्रह्म, परब्रह्म और सर्वोच्च सत्ता कहते हो।
– पूज्यपाद सदगुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नक्षत्रों की वाणी

मेष

(चू, चे, चो, ला, लु, लो, अ)

स्वयं मौलिक निर्णय लेकर कार्य करें, अन्यथा आपको हानि उठानी पड़ेगी। मित्रों व सम्बन्धियों से आशा करना व्यर्थ होगा। कुछ नये सम्पर्क बनेंगे, जो भविष्य में लाभप्रद सिद्ध होंगे। जीवन साथी के व्यवहार से प्रसन्नता होगी। सन्तान सुख सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें, अन्यथा चिकित्सा व्यय-भार में वृद्धि होगी। अदालती विवादों में विजय प्राप्त होगी, परन्तु नवीन विवादों से बचने का प्रयास करें। किसी कार्य विशेष हेतु यात्रा करते समय एक **'मधुरूपेण रुद्राक्ष'** (न्यौछावर:१०५/-) को अपनी जेब में रखें तथा कार्य से वापस लौटने पर उसे किसी शिव मन्दिर में चढ़ा दें। इससे आपकी पूर्ण रक्षा होगी तथा कार्यों में सफलता के अवसर बढ़ेंगे। इस माह में **हनुमान साधना'** (संदर्भ: मार्च-२००० अंक) सम्पन्न करें। इस माह की शुभ तिथि – १५, १८, २१, २४, ३०.

वृष

(ई, उ, ए, वा, वी, वू, वे, वो)

कई बार मन विचलित होगा तथा कारोबार परिवर्तन के विचार आपको तनाव की ओर अग्रसर करेंगे। लेकिन अभी व्यापार या स्थान परिवर्तन आपके हित में नहीं होगा। इसकी अपेक्षा जो कार्य आपके हाथ में हैं, पहले उन्हीं पर पूरा ध्यान दें, कुछ देर से ही सही आपको अनुकूलता प्राप्त होगी। शत्रु पक्ष विश्वासघात कर सकता है और आपको या आपके परिवार के किसी अन्य सदस्य को हानि भी पहुंचा सकता है। संयम और सूझबूझ से कार्य करें। **'बगलामुखी साधना'** सम्पन्न करेंगे तो यदि किसी प्रकार का शत्रु भय है, तो वह समाप्त होगा और आप निर्द्वन्द्वता पूर्वक कार्य कर सकेंगे। दाम्पत्य तथा पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। वाहन प्रयोग में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें। अनुकूल तिथियां – १४,१८,२२,२७,२९.

मिथुन

(का, की, कू, घ, ङ, छो, हा)

आप गहन और गम्भीरता पूर्वक विचार करने के बाद ही किसी कार्य को प्रारम्भ करते हैं, फिर भी आपको बार-बार असफलता का सामना करना पड़ता है। बार-बार आने वाले विघ्नों को दूर करने के लिये **'भैरव साधना'** सम्पन्न करें। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। आर्थिक व्यय भार में वृद्धि होगी। नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। बेरोजगार व्यक्तियों के लिये समय अत्यन्त शुभ है। आर्थिक मामलों में उत्साह रहेगा। साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी, परन्तु श्रम अत्यधिक करना पड़ेगा। मानसिक शान्ति बनाये रखें और किसी भी विवाद की स्थिति में धैर्य एवं संयम से काम लें। इस माह की अनुकूल तिथियां – १०,१३,१९,२४,२९.

कर्क

(ही, हू, हो, डा, डी, डे, डा)

आपको जोखिम उठाने में आनन्द आता है, लेकिन इस माह ऐसे कार्यों से दूर रहें, वाहन भी धीरे चलायें, दुर्घटना योग प्रबल है। शत्रु आपका विश्वास जीत कर विश्वासघात करने का प्रयत्न करेंगे, सावधानी अपेक्षित है। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग आपके अनुकूल सिद्ध होगा तथा रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। गृहस्थ सुख तथा भौतिक सुख के साधनों में वृद्धि होगी। आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। मांगलिक कार्यों को लेकर उत्साह रहेगा और आर्थिक व्यय-भार में वृद्धि होगी। **'महाकाली साधना'** सम्पन्न करना आपके लिये अनुकूल है। इस माह आपके लिये अनुकूल तिथियां हैं – ११, १३, १७, २२, २५, ३०.

सिंह

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टा)

व्यर्थ के विवादों से बचें और धैर्य तथा संयम से काम लें, अन्यथा राज्य भय व्याप्त हो सकता है। अदालती मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। कारोबारी मामलों में उत्साह रहेगा तथा यात्रा योग बनेंगे। पुराने मित्रों का पुन: साथ मिलेगा, परन्तु उनसे किसी भी सहयोग की आशा करना व्यर्थ होगा। किसी के भी बहकावे में न आयें। जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें। सन्तान सुख सामान्य रहेगा। **'तारा साधना'** आपके लिये अनुकूल रहेगी। नित्य घर से बाहर जाते समय थोड़ा सा जल अपने दरवाजे पर गिराने के बाद ही पैर बाहर निकालें। यात्रा या वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। अपने स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान दें, किसी भी प्रकार की लापरवाही नुकसानदेह सिद्ध हो सकती है। इस माह की अनुकूल तिथियां हैं – ११, १५, १८, २२, २६, २८.

कन्या

(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

किसी से भी सहयोग की आशा न रखें तथा वैचारिक तालमेल बनाये रखने का प्रयत्न करें। सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी तथा मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता रहेगी। कारोबारी विस्तार होगा तथा यात्रा योग निर्मित होंगे। बाधाओं के न होने पर भी एक अनजाना भय व्याप्त रहेगा। धार्मिक प्रसंगों में खिन्नता उत्पन्न होगी। घर में मांगलिक योग बनेंगे तथा व्यय भार में वृद्धि होगी। किसी के बहकावे में न आयें, नहीं तो भविष्य में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, मौलिक सूझबूझ के अनुसार ही कार्य करें। अनुकूल तिथियां – १०,१४,१८,२२,२६,२९.

तुला

(रा, री, रू, ता, ती, तू, ते)

आपको गहन आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। कारोबारी स्थिति में गिरावट से मानसिक तनाव पैदा हो सकता है। यह समय आपके लिये संयम व सूझबूझ से काम लेने का है। किसी भी व्यर्थ के विवाद में न उलझें और पूरी श्रद्धा से अपना कार्य करते रहें। मित्रों एवं सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। अदालती स्थिति में सुधार होगा। ऐसा कोई भी कार्य नहीं करें, जिनसे समाज में आपके मान-सम्मान को ठेस पहुंचे। **'मंगल ग्रह साधना'** आपके अनुकूल रहेगी। अनुकूल तिथियां – ११,१४,१९,२३,२८,३०

सर्वार्थ, अमृत, रवि, पुष्य, द्विपुष्कर, सिद्धि योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

21 अक्टूबर – सर्वार्थ सिद्धि योग
30 अक्टूबर – सर्वार्थ सिद्ध योग
4 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग
8 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग, सिद्ध योग
14 नवम्बर – सर्वार्थ सिद्धि योग

ज्योतिष की दृष्टि से अक्टूबर २०००

इस समय देश की स्थिति बहुत ही अच्छी और लाभप्रद रहेगी तथा इस समय विश्व की कई महाशक्तियां भारत से विशेष सम्बन्ध बनाने का प्रयास करेंगे। ज्योतिषीय दृष्टि से समय बहुत ही अच्छा है बाहरी देश भी भारत से समझोता करेंगे तथा आयात निर्यात के कार्यों में वृद्धि होगी इलेक्ट्रानिक के कार्यों में विशेष वृद्धि होगी।

तुला *(रा, री, रू, ता, ती, तू, ते)*

आप स्वभाव के बहुत ही हसमुख है अपनी हंसी में हर व्यक्ति को सम्मोहित कर लेते है। लड़कियों से थोड़ा बचकर ही रहे वह आपके पीछे ज्यादा ही घूमती रहती है। उनसे थोड़ा कम मेल-झोल रखें नहीं तो आपको हानि होगी। कम्प्युटर के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही उत्तम रहेगा उनको नौकरी मिलने की संभावना है। समाज में मान सम्मान होगा तथा उनके कार्य की सराहना होगी। श्रमिक वर्ग के लिए समय कठिनाईदायक रहेगा उनके कार्य रुक-रुक कर पूरे होंगे। इस समय आप **'महालक्ष्मी साधना'** सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – १,३,२३,२७,२९.

वृश्चिक *(तो, ना, नी, तू, ने, नो, या, यी, यू)*

इस समय आप बहुत ही कष्ट में रहेंगे तथा धन भी रुक-रुक कर आपके पास आयेगा। शत्रु आप पर हावी रहेंगे वह आप पर घात करेंगे लेकिन गुरु कृपा के कारण आप बच जायेंगे। इस समय आप व्यर्थ की बातों में न लगकर साधनात्मक चिंतन बनाएं रखें। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा उनके बहुत समय से सोचे हुए कार्य इस समय पूरे होंगे। श्रमिक वर्ग के लिए भी समय बहुत ही लाभदायक रहेगा उनको गुप्त धन की प्राप्ति होगी या फिर कहीं से भी धन प्राप्त होगा। महिलाओं के लिए भी यह समय बहुत अच्छा रहेगा उनके रुके हुए कार्य पूरे रहेंगे तथा घर परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा घर में पुत्र की प्राप्ति होगी। इस समय आप **'धनेश्वरी साधना'** सम्पन्न करें। शुभ तिथियां – १, ९, २५, २९.

धनु *(ये, यो, भा, भी, धा, फा, ढा, भे)*

इस समय सभी ग्रह की दशा अच्छी चल रही है लेकिन फिर भी धन रुक-रुक ही प्राप्त होगा भाग्य आपका साथ नहीं दे रहा है। परिवार में आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से परेशानी रहेगी। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा उनके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। तथा नौकरी में पदोन्नति होने की संभावना है। घर परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा किसी धार्मिक स्थान में जाने का योग है। इस समय आप **'रम्भा अप्सरा साधना'** सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – २, ११, १२, १९, २७.

मकर *(भो, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)*

आप किसी से प्रेम करते है और कहने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं, यह पूरा समय आपका इसी में गुजर रहा है और दिल की बात दिल में ही रह जाती है। बिजनेस में आपको काफी लाभ होने की संभावना है अपना थोड़ा समय कार्य में देंगे तो आपको बहुत लाभ होगा नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय मध्यम रहेगा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही लाभदायक रहेगा उनके रुके हुए कार्य पूरे होंगे परिवार में उनका मान सम्मान होगा तथा समाज उनके कार्य की सराहना करेगा। इस समय आप **'भुवनेश्वरी कवच'** का पाठ करें। शुभ तिथियां ७,१३,१६,२९

कुम्भ *(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)*

इस समय आप बहुत ही मेहनत कर रहे है इसलिए इसका फल भी मीठा ही होगा क्योंकि मेहनत बेकार नहीं जाती है। परिवार में पुत्र के आने से प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी। बेरोजगार व्यक्तियों को नये रोजगार मिलेंगे तथा इन्टरव्यू के लिए भी काल आने की संभावना है। महिलाओं के लिए भी समय अच्छा है आपका छोटा सा उद्योग बहुत ही अच्छा चलेगा तथा उससे आपको लाभ प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग समय का सही उपयोग करेंगे तो सफलता उनके हाथ लगेगी। इस समय आप **'गणपति ऋद्धि सिद्धि साधना'** सम्पन्न करें। आपके लिए २,७, १४, २१,२८.

मीन *(दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)*

समय का चक्र निरन्तर चलता ही रहता है समय के अनुसार अपने को ढालने की कोशिश कीजिये समय हमेशा एक सा नहीं होता है आज आपके बुरे दिन है हिम्मत मत हारो कल अच्छे भी दिन आयेंगे गुरु पर विश्वास रखो। नौकरी पेशा वर्ग के लिए समय बहुत ही रहस्यमय साबित होगा उन्होंने जो कार्य सपने भी नहीं सोचा होगा वह पूरा हो जायेगा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय थोड़ा खराब रहेगा उनकी ग्रह दशा थोड़ी अच्छी नहीं चल रही है। इस समय आप **'केतु साधना'** सम्पन्न करें शुभ तिथियां ५, ८, १०, २१, २९.

अक्टूबर त्यौहार

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

20 अक्टूबर – कार्तिक कृ. पक्ष शुक्रवार	अहोई अष्टमी
23 अक्टूबर – कार्तिक कृ. पक्ष सोमवार	रमा एकादशी व्रत
24 अक्टूबर – कार्तिक कृ. पक्ष मंगल	धनत्रयोदशी
27 अक्टूबर – कार्तिक कृ. पक्ष शुक्र वार	अमावस (दीपावली)
28 अक्टूबर – कार्तिक शु. पक्ष शनिवार	श्री राम तीर्थ जयंति
4 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष शनिवार	गोपाष्टमी
5 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष रविवार	परिक्रमा नवमी
7 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष मंगलवार	एकादशी व्रत
11 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष शनिवार	गुरु नानक जयंती
12 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष रविवार	मार्गशीर्ष स्नान शुरु
14 नवम्बर – कार्तिक शु. पक्ष मंगलवार	पंडित नेहरु जयंति

शरीर लक्षण से पहचानें

भविष्य कथन के लिए ज्यादातर लोग जन्मपत्री देखते हैं अथवा हाथ की रेखाओं का अध्ययन करते हैं लेकिन कोई व्यक्ति आपसे मिलता है और आप उसके स्वभाव गुण अवगुण इत्यादि के विषय में जानना चाहते हैं तो उसका चेहरा देखकर भी आप जान सकते हैं। व्यक्ति के मुख की आकृति बहुत कुछ कह देती है। शरीर के प्रधान भाग मुख के लक्षण क्या कहते हैं इसका विवेचन सद्गुरुदेव ने अपनी पुस्तक 'वृहदहस्त रेखा शास्त्र' में स्पष्ट किया है इसे पढकर आप भी भविष्य वक्ता बनिये तो सही –

❊ कान

१. यदि कान उभरे हुए हों तथा कान की नोक सुडौल तथा बड़ी हो तो वह सौभाग्यशाली होता है।

२. यदि कान जन्म से ही लम्बे हों, तो वह सुखी व्यक्ति होता है।

३. जिसके कान मोटे हों, वह कोमल स्वभाव का होता है।

४. जिसके कान छोटे-छोटे हों, वह बुद्धिमान होता है।

५. शंख के समान कान वाला व्यक्ति मिलिट्री में ऊंचे पद पर पहुंचता है।

६. चपटे कानों वाला व्यक्ति भोगी होता है।

७. बड़े-बड़े रोम युक्त कान दीर्घायु को स्पष्ट करते हैं।

८. बहुत मोटे कान नेतृत्व करने वाले के सूचक होते हैं।

९. अत्यन्त छोटे कान वाला व्यक्ति कंजूस होता है।

१०. सूखे हुए कान दरिद्रता की निशानी है।

११. लम्बे और फैले हुए कान क्रूर व्यक्ति का परिचय देते हैं।

१२. बड़े कान वाला व्यक्ति पूजनीय होता है।

१३. चिकनाई रहित कान कमजोरी का सूचक है।

१४. स्त्रियों के कानों पर केश होना विधवापन का सूचक है।

१५. स्त्री के कान लम्बे हों, तो अच्छे होते हैं।

❊ नाक

१. यदि चार अंगुल लम्बी नाक हो, तो वे दीर्घायु होते हैं।

२. जिनकी नाक उभरी हुई हो, वे सदाचारी होते हैं।

३. हाथी के समान नाक रखने वाला व्यक्ति भोगी होता है।

४. तोते के समान नाक रखने वाला व्यक्ति सुखी होता है।

५. जिनकी नाक सीधी हो, वह सौभाग्यशाली होता है।

६. जिनके नथुने छोटे हों, वे भाग्यवान पुरुष होते हैं।

७. जिसके नाक का आगे का हिस्सा टेढ़ा हो, वह आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

८. नुकीली नाक वाला राजा होता है।

९. छोटी नाक वाला धर्मात्मा होता है।

१०. जिसकी नाक का आगे का हिस्सा दो भागों में बंटा हुआ हो, वह दरिद्र होता है।

११. चपटी नाक वाला व्यक्ति सरल स्वभाव वाला होता है।

१२. कटी हुई नाक वाला व्यक्ति पापी होता है।

१३. दाईं ओर झुकी हुई नाक कमजोरी का चिन्ह है।

१४. बड़े नथुने श्रेष्ठ कहलाते हैं।

१५. स्त्रियों में यदि नाक छोटी हो, तो वह मजदूर स्वभाव वाली होती है।

१६. चपटी और लम्बी नाक वाली स्त्री विधवा होती है।

१७. यदि नाक के आगे का हिस्सा लम्बाई लिए हुए हो, तो वह रानी के समान सुख भोगती है।

१८. यदि नाक के आगे की नोंक पर काला तिल या मस्सा हो, तो वह दुराचारिणी होती है।

१९. अत्यधिक लम्बी नाक वाली स्त्री सुखहीन होती है।

२०. सुडौल और समान छिद्र वाली नाक श्रेष्ठता की सूचक है।

* मुख

१. यदि छोटा मुंह हो, तो वह अच्छा कहलाता है।

२. यदि बहुत अधिक फैला हुआ हो, तो यह दरिद्रता का सूचक है।

३. यदि मुंह चौड़ाई लिए हुए हो, तो अशुभ कहलाता है।

* गर्दन

१. छोटी गर्दन वाला भाग्यशाली होता है।

२. गोल और मजबूत गर्दन वाला व्यक्ति धनवान होता है।

३. शंख के समान गर्दन वाला व्यक्ति राजा होता है।

४. भैंसे के समान मोटी गर्दन वाला व्यक्ति बलवान होता है।

५. बैल के समान गर्दन वाला व्यक्ति अल्पायु होता है।

६. लम्बी गर्दन वाला व्यक्ति भोगी होता है।

७. टेढ़ी गर्दन वाला चुगलखोर होता है।

८. लम्बी और चपटी गर्दन वाला दुखी होता है।

९. मांसहीन गर्दन निर्धनता की सूचक है।

१०. चार अंगुल वाली गर्दन सबसे श्रेष्ठ मानी गई है तथा गर्दन का घेरा २४ से २६ अंगुल का अत्यन्त श्रेष्ठ होता है।

११. बड़ी-बड़ी हड्डियों से युक्त गर्दन निर्धनता की सूचक होती है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

१२. यदि स्त्रियों के गले के मनके सीधे हों, तो वह दीर्घायु होती है।

१३. यदि गले की गुटकी ऊंची हो, तो वह सौभाग्यशाली होती है।

१४. मांस से भरी हुई सुन्दर गर्दन श्रेष्ठता की सूचक होती है।

१५. तीन रेखाओं से युक्त गर्दन वाली स्त्री धनी होती है।

१६. जिस स्त्री के गले में हड्डियां दिखाई देती हों, वह दुर्भाग्य युक्त होती है।

१७. मोटी गर्दन वाली स्त्री विधवा होती है।

१८. जिसके गले में नाड़ियां दिखाई देती हों, वे दरिद्री होती हैं।

१९. जिस स्त्री की गर्दन बहुत अधिक लम्बी हो, वह कुल का नाश करने वाली मानी जाती है।

२०. जिसकी गर्दन सुन्दर, सुडौल चार अंगुल वाली हो, वह स्त्री श्रेष्ठ होती है।

* चिबुक (ठोढ़ी)

१. यदि चिबुक गोल या मांस से भरी हो, तो वह धनवान होता है।

२. लम्बी, पतली और दुबली चिबुक दरिद्रता की सूचक होती है।

३. यदि जबड़े गोल हों, तो शुभ कहे जाते हैं।

४. यदि ठोढ़ी का अग्रभाग सुन्दर और कोमल हो तो शुभ है।

५. यदि ठोढ़ी के आगे के भाग में ललाई दिखाई दे तो अशुभ होता है।

६. यदि स्त्री की चिबुक दो उंगली की, मांसल तथा सुन्दर हो, तो वह सौभाग्यशाली स्त्री होती है।

७. रोम युक्त चिबुक रखने वाली स्त्री दुराचारिणी होती है।

* कपोल

१. यदि फूले हुए गाल हों, तो वह व्यक्ति सुखी होता है।

२. मांसल कपोल भोगी होने की सूचना देते हैं।

३. जिनके गाल सिंह के समान उभरे हुए हों, वे राजा होते हैं।

४. मांस रहित चिपके हुए गाल दुख भोगी होते हैं।

५. फूले गाल वाला व्यक्ति मंत्री होता है।

६. निर्मल तथा सुन्दर गाल जिन स्त्रियों के होते हैं, वे श्रेष्ठ कही जाती है।

७. जिन स्त्रियों के गालों पर रोम हो, वे दुखी होती है।

८. यदि गालों पर नाड़ियां न दिखाई देती हो, तो वह देवी के समान होती है।

९. जिसके गाल गड्ढेदार हों, वह पूर्ण भौतिक तथा शौकीन मिजाज की स्त्री होती है।

* होंठ

१. लाल होंठ वाले व्यक्ति धनवान होते हैं।

२. गुलाबी होंठ वाले व्यक्ति बुद्धिमान होते हैं।

३. मोटे होंठ वाला व्यक्ति धर्मात्मा होता है।

४. लम्बे होंठ वाला व्यक्ति भोगी होता है।

५. ऊबड़-खाबड़ होंठ वाला व्यक्ति दुख पाता है।

६. रूखे-सूखे पतले तथा कान्तिहीन होंठ निर्धनता के सूचक होते हैं।

७. जिस स्त्री के होंठ लाल तथा चिकने हों, वह श्रेष्ठ होती है।

८. जिसके होंठ के बीच में रेखा दिखाई दे, वह सौभाग्यशाली होती है।

९. आड़े तिरछे होंठ वाली दुर्भाग्यशाली होती है।

१०. काले और मोटे होंठ वाली स्त्री पति सुख हीन होती है।

११. बहुत अधिक मोटे होंठ वाली स्त्री कलह करने वाली होती है।

१२. ऊपर का होंठ कोमल, झुका हुआ तथा चिकना हो, तो वह सौभाग्यशाली होती है।

१३. यदि नीचे का होंठ ऊपर की ओर उठा हुआ हो, तो वह विधवा होती है।

१४. गोल तथा लालिमा लिए हुए होंठ वाली पूर्ण पति सुख प्राप्त करती है।

* दांत

१. जिस व्यक्ति के दांत सीधी रेखा में समान रूप से उठे हुए और चिकने हों, तो वह व्यक्ति धनवान होता है।

२. लम्बे दांत वाले व्यक्ति धनी होते है।

३. अन्दर की तरफ झुके हुए दांत वाले व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

४. काले ऊबड़-खाबड़ दांत वाले व्यक्ति परेशानी उठाते हैं।

५. बत्तीस दांत वाले व्यक्ति भाग्यवान होते है।

६. तीस दांत वाले धन के अभाव में चिन्तित रहते हैं।

७. इकतीस दांत वाले भोगी होते हैं।

८. इससे कम दांत वाले व्यक्ति हमेशा दरिद्री रहते हैं।

९. जिनके दांत धीरे-धीरे उखड़ते हैं, वे दीर्घ जीवी होते हैं।

१०. जिस व्यक्ति के दांत एक दूसरे से अलग-अलग हो, वह व्यक्ति दूसरों के धन पर मौज करता है।

११. जिन स्त्रियों के दांत नोकदार, एक सीध में, सफेद और आपस में मिले हुए हों, वे स्त्रियां सौभाग्यशाली होती हैं।

१२. जिन स्त्रियों के ऊपर तथा नीचे सोलह-सोलह दांत हो तथा गौ दूध के समान श्वेत रंग के हों, वे पति की अत्यन्त प्रिय होती है।

१३. जिन स्त्रियों के दांत बहुत छोटे-छोटे हो, वे दुखी रहती है।

१४. जिनके नीचे के जबड़े में अधिक दांत हो उनको मां का सुख नहीं मिलता।

१५. भयंकर तथा टेढे दांत वाली स्त्री विधवा होती है।

१६. सफेद मसूढे वाली स्त्री कुटिल होती है।

१७. मोटे और डरावने दांत वाली स्त्री कष्ट भोगने वाली होती है।

१८. यदि दांत अलग-अलग हो और बीच में दूरी हो, तो वह दुराचारिणी होती है।

१९. यदि दांत के ऊपर दांत आए हुए हो, तो वह चतुर, स्वार्थी तथा पति को उंगली पर नचाने वाली होती है।

२०. जिनके मसूढ़े काले हों, वे चोर होते हैं।

※ जीभ

१. जिस पुरुष की जीभ लाल, पतली और नरम हो, वह ज्ञानवान, चतुर तथा ईश्वर भक्त होता है।

२. जिसका आगे का भाग नुकीला हो तथा लालिमा लिए हुए हो, वह पूर्ण वैभव सुख प्राप्त करता है।

३. जिसकी जीभ सफेदी लिए हुए हो, वे बदमाश होते हैं।

४. काली या नीली जीभ वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं।

५. मोटी और एक समान चौड़ी अथवा पीली रंग की जीभ हो, तो वह पूर्ण वैभव सुख प्राप्त करता है।

६. जिस पुरुष की जीभ नाक को छूती हो, वह उच्चकोटि का साधक या योगी होता है।

७. लम्बी जीभ वाला व्यक्ति स्पष्टवादी होता है।

८. चौड़ी जीभ वाला व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खर्च करने वाला होता है।

९. जिन स्त्रियों की जीभ कोमल, लाल तथा पतली होती है, वे सौभाग्यशाली होती है।

१०. जिन स्त्री की जीभ संकीर्ण होती है, वे अशुभ कहलाती है।

११. जिस स्त्री की जीभ मोटी हो, वह पूर्णायु नहीं प्राप्त करती।

१२. लाल रंग की जीभ रखने वाली स्त्री श्रेष्ठ पति से शादी करती है।

१३. काली जीभ वाली स्त्री झगडालू होती है।

१४. बहुत अधिक चौड़ी जीभ वाली स्त्री निरन्तर दुख उठाने वाली होती है।

※ हास्य

१. हंसते समय जिनके दांत बाहर नहीं आते, वे उत्तम व्यक्ति होते है।

२. जो व्यक्ति हंसते समय सिर और कंधा फड़काते है, वे भोगी अथवा पापी होते है।

३. आंख मूंदकर हंसने वाले व्यक्ति अधार्मिक होते हैं।

४. जिसका मुख हमेशा मुस्कराता रहता है, वह जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

५. जिस स्त्री के हंसते समय दांत न दिखाई पड़े और थोड़ा सा मुंह खुले, वह स्त्री सौभाग्यशाली होती है।

६. यदि हंसते समय स्त्री बार-बार कांपती हो या जोरों से खिलखिलाती हो, तो वह रसिक मिजाज की तथा पर पुरुष से सम्बन्ध रखने वाली होती है।

७. जिस स्त्री के हंसते समय गाल में गड्ढे पड़ते हो, वह पर-पुरुष की इच्छा रखने वाली होती है।

श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा

सत्पुरुषों में आप श्रद्धा रूप से तथा कुलीन पुरुषों में लज्जा रूप से निवास करती हैं।

षोडशी श्री विद्या स्तोत्र

भागवतपाद शंकराचार्य द्वारा विरचित यह स्तोत्र अपने आप में गोपनीय और महत्वपूर्ण रहा है, दूसरे शब्दों में इसे लक्ष्मी स्तोत्र, महालक्ष्मी स्तोत्र, कनकवर्षा स्तोत्र, कल्याणवृद्धि स्तोत्र भी कहा जाता है।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी तो साक्षात भगवती लक्ष्मी का मूर्तिमंत्र स्वरूप है, यह महाविद्या है, और इसको सिद्ध करने के लिए ऊंचे से ऊंचे साधक लालायित रहते हैं, भारतवर्ष के आधे से अधिक साधक षोडशी श्री विद्या के उपासक हैं, वे अभी इस स्तोत्र की खोज में थे, परन्तु यह स्तोत्र अभी तक अप्राप्य था।

प्रभु कृपा से हमें पिछले ही दिनों यह स्तोत्र प्राप्त हुआ, षोडशी त्रिपुर सुन्दरी मंत्र में कुल सोलह अक्षर है, और इस स्तोत्र में भी सोलह पद है, तथा प्रत्येक पद का प्रारम्भ मंत्र के प्रत्येक अक्षर से है, यदि इन सोलह पदों के पहले अक्षरों को मिला कर पढ़ें तो वह षोडशी मंत्र बन जाता है।

इस प्रकार एक अद्भुत आश्चर्यजनक और दुर्लभ स्तोत्र है, जो साधक नित्य इसका पाठ करते हैं, उनके जीवन में आर्थिक बाधा तो रह ही नहीं सकती, वह सभी दृष्टि से पूर्ण सुख सौभाग्य युक्त एवं समृद्ध होता है।

कल्याण वृष्टि भिरिवामृतपूरिताभि
र्लक्ष्मीस्वयंवरणमंगलदीपिकाभिः
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भक्ति मतां जनानाम् ॥१॥

अर्थात्

हे अम्बे ! अमृत से परिपूर्ण कल्याण की वर्षा करने वाली एवं लक्ष्मी को स्वयं वरण करने वाली मंगलमयी दीपमाला की भांति आपकी सेवाओं में आपके चरण कमलों में भक्ति भाव रखने वाले मनुष्यों के मन में क्या नहीं कर दिया, अर्थात उनके समस्त मनोरथों को पूर्ण कर दिया।

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगते च नेत्रे
सान्द्रेन्दुमुद्दरुणायतसारवरस्य
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य ॥२॥

अर्थात्

जननि ! मेरी तो बस यही स्पृहा है, कि परमोत्कृष्ट सुधा से परिप्लुत तथा उदीयमान अरूण वर्ण सूर्य की क्षमता करने वाले आपके अरूण श्री विग्रह के सन्निकट पहुंचकर आपकी वन्दना के समय मेरे नेत्र अश्रुजल से परिपूर्ण हो जाए।

ईशित्वभाक्तुषाः कति नाम सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतिभुजं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते

यः यावद्योरतय सकृत् प्रणतिं करोति ॥३॥

अर्थात्

मां! प्रभुत्वभाव से कलुषित ब्रह्मा आदि कितने देवता हो चुके है, जो प्रत्येक युग में प्रलय से अभिभूत (विनष्ट) हो गये हैं, किन्तु एक वही व्यक्ति स्थिरसिद्धियुक्त विद्यमान रहता है, जो एक बार आपके चरणों में प्रणाम कर लेता है।

सम्भवा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम्
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ॥४॥

अर्थात्

त्रिपुर सुन्दरि! आप में भक्तिभाव रखने वाले भक्तजन एक बार भी आपके करूणा से अंकुरित सुशोभन कटाक्ष को पाकर कामदेव सदृश सौन्दर्यशाली हो जाते हैं, और त्रिभुवन में युवतियों को सम्मोहित कर लेते है।

ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय
क्रीडन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥५॥

अर्थात

त्रिकोण में निवास करने वाली एवं तीन नेत्रों से सुशोभित माता त्रिपुरसुन्दरि वेद 'ह्रीं' कार को ही आपका नाम बतलाते हैं, वह नाम जिनके संस्मरण में आ गया, वे भक्तजन यमदूतों के भय को त्याग कर लोक पालों के साथ नन्दनवन में क्रीड़ा करते हैं।

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः।
क्रूरः कथं नु भविता गरलस्य वेगः।
आश्वासनाय किल मातरिदं तदार्धं
देहस्य शश्वद् मृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥

माता! निरन्तर अमृत से परिप्लुत होने के कारण शीतल बने हुए आपके शरीर का यह अर्धभाग जिनके साथ संलग्न था, उन त्रिपुरहन्ता शंकर जी के गले में भरा हुआ हलाहल विष का वेग उनके लिए अनिष्टकारक कैसे होता।

सर्वज्ञतां सवनि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वद् घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलभातपत्रं
द्वे चामरे च वसुधा महती ददाति ॥७॥

अर्थात

देवि! आपके चरण कमलों में किया हुआ प्रणाम सर्वज्ञता और सभा में वाक्चातुर्य उत्पन्न करता ही है साथ ही उदभासित मुकुट, श्वेत छत्र दो चामर और विशाल पृथ्वी का साम्राज्य भी प्रदान करता है।

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम् ॥८॥

अर्थात्

मां त्रिपुरसुन्दरि! मैं आपकी भक्ति से परिपूर्ण हूं और आपकी ओर ही दृष्टि लगाये हैं, अतः आप मुझ अनाथ की ओर मनोरथों को पूर्ण करने में कल्पवृक्ष सदृश एवं कल्याणसागरस्वरूप अपने कटाक्षों से देख तो लें।

हन्तेतरेश्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं प्रजाति त्वमेव ॥९॥

अर्थात

देवि! खेद है, कि अन्यान्य जब आपके अतिरिक्त अन्य निम्न देवताओं में भी मन लगाकर उनकी भक्ति करते हैं, किन्तु मैं मन और वचन से आपका ही स्मरण करता हूं, आपको ही प्रणाम करता हूं, क्योंकि जगत में आप शरणदात्री हैं।

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनानां
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथंचित्।
नूनं मयापि सदृशं करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते च ॥१०॥

अर्थात

त्रिपुर सुन्दरि! यद्यपि आपके नेत्रों के लिए देखने के बहुत से लक्ष्य वर्तमान है, तथापि किसी प्रकार आप मेरी ओर दृष्टि डाल दें, क्योंकि निश्चय ही मेरे समान करूणा का पात्र कोई पैदा हुआ है और न ही हो रहा है, और न पैदा होगा।

ह्रीं ह्रीं मिति प्रतिदिनं जपतां जनानां

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे
मालाकिरीटमदवारणमानिनीर्वा
स्तान् सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥११॥

अर्थात्

त्रिपुर में निवास करने वाली मां! ह्रीं इस प्रकार (आपके बीज मंत्र का) प्रतिदिन जप करने वाले मनुष्यों के लिए इस जगत में क्या दुर्लभ है, माला किरीट और उन्मत्त गजराज से युक्त उन मानिनियों की तो स्वयं मधुमती लक्ष्मी ही सेवा करती है।

सम्पत्करणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि
त्वद्वन्दनानि दुरितोद्धरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥

अर्थात्

कमलनयनी ! आपकी वन्दनाएं सम्पत्ति प्रदान करने वाली, समस्त इन्द्रियों को आनन्दित करने वाली, साम्राज्य प्रदान करने में कुशल और पाप समूह को नष्ट करने में उद्यत रहने वाली है माता! ये निरन्तर मुझे ही प्राप्त हो, दूसरे को नहीं।

कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य,
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य।
पाशांकुशेक्षवशरासन पुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥१३॥

अर्थात्

कल्प के उपसंहार के समय ताण्डव नृत्य करने वाले खण्डपरशु देवाधिदेव परमेश्वर शंकर के लिए पाशा, अंकुश, ईख का धनुष और पुष्पबाण को धारण करने वाली आपकी एकमात्र मूर्ति साक्षी रूप से सुशोभित होती है।

तत्त्वं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
तेजः परं बहुलकुंकुमपंकशोणम्।
भास्वत्किरीटमृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम् ॥१४॥

अर्थात्

माता! आपका यह अर्धांग, जो परम तेजोमय, अत्यधिक कुंकुमपंक से युक्त होने कारण, चमकदार किरीट से सुशोभित, चन्द्रकला से विभूषित, अमृत से परमार्द्र व त्रिकोण के मध्य में प्रकट है, वह सदा शिव से निमग्न रहे।

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले।
त्वत्तेजसापरिणतं विश्वाविभूतं
सौख्यं तनोति सरसीरुहसम्भवादेः ॥१५॥

अर्थात्

कमल पर निवास करने वाली सुन्दरि! ह्रीं कार ही आपका धाम है, वही आपका रूप है, वही आपका नाम है, और वही आपके तेज से उत्पन्न हुए आकाशादि से क्रमशः परिणत जगत का आदिकारण है जो ब्रह्मा विष्णु आदि की रचित पालित वस्तु बनकर परम सुख देता है।

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मंत्रेण संवीत
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मंत्रवित्
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणी निर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घायुषः ॥१६॥

इति श्री मदाद्यशंकराचार्यविरचितं कल्याण वृष्टिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥१६॥

मां! जो मंत्रज्ञ तीन ह्रीं कार से सम्पुटित महान मंत्र से संवीपित इस स्तोत्र का प्रतिदिन आपके समक्ष जप करता है, उसके राजा लोग वशीभूत हो जाते हैं, उसकी लक्ष्मी चिरस्थायिनी हो जाती है, उसकी वाणी निर्मल सूक्तियों से परिपूर्ण हो जाती है, और वह दीर्घायु हो जाता है।

बहुत आशाओं से उन्होंने ये पौधे रोपे थे, कि आने वाले समय में वे वृक्ष बनेंगे और विश्व को शीतल छाया प्रदान करेंगे। क्या उनके स्वप्नों पर पानी फेर देना उचित है?

...और यदि यह उचित है, तो हमारा निराश हो जाना भी उचित है।

...यदि हम स्वयं ही व्यथित हो जाएंगे तो वह विशाल कार्य कौन करेगा, जिसे पूज्यपाद गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी हमारे कन्धों पर छोड़ गए हैं।

प्रत्येक साधना निःशुल्क

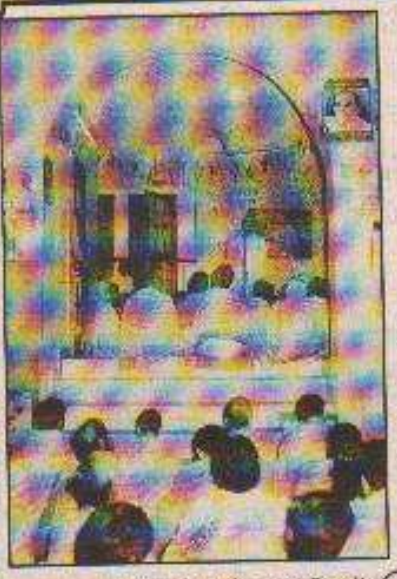

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि— पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 7 से 9 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)।

20.10.2000 शुक्रवार — साबर धनदा प्रयोग

अन्य साधनाओं की अपेक्षा साबर साधनाओं के बारे में मान्यता है, कि वे शीघ्रता से सफल हो जाती हैं। इसका मूल कारण यह होता है, कि उनमें अधिक विधि विधान, कर्मकाण्ड की जटिलता न होकर मंत्र की तेजस्विता ही मूल तत्व है। व्याकरण की दृष्टि से देखा जाए, तो साबर मंत्र बड़े ही अजीब और बे सिर पैर के लगते हैं, परन्तु उन मंत्रों के एक-एक अक्षर में इतनी तीव्रता होती है, कि उनमें प्रभाव को देखकर साधक स्वयं भी हैरान रह जाता है। साबर पद्धति से प्रयोग किए जाने के पश्चात साधक के दुर्भाग्य को पीछे हटना ही पड़ता है। नाथ सम्प्रदाय के योगियों की यह परम्परा रही है, कि वे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं, वे अपनी आवश्यकताओं को अपने साधनात्मक बल से प्राप्त करने में विश्वास करते हैं। यह **साबर धनदा प्रयोग** ऐसे ही नाथ योगियों की एक पद्धति है, जिसके माध्यम से लक्ष्मी और अटूट लक्ष्मी साधक को उपलब्ध होती है। इस प्रयोग के बाद उसके जीवन में धन का संकट पुनः नहीं बनता है। ऐसा नाथ योगियों का प्रत्यक्ष अनुभव है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रु. 225/- है परन्तु आपको मात्र रु. 438/- ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र, गुटिका आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तौल सकते।

फोटो द्वारा 'कमला दीक्षा' केवल २० से २२ अक्टूबर को ही

आप चाहें तो निर्धारित दिवसों से पूर्व ही अपना फोटो एवं न्यौछावर राशि का बैंक ड्राफ्ट ('मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नाम से) भेजकर भी इन दिवसों पर होने वाली दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच सदस्यों के पते दिल्ली कार्यालय को समय पर प्राप्त हो सकें, इस हेतु आप अपना पत्र स्पीड-पोस्ट द्वारा ही भेजें। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी।

21.10.2000 शनिवार तीव्र भाग्योदय साधना

प्रायः साधक भाग्योदय साधना की उपेक्षा कर देते हैं, परन्तु साधनाओं में या अन्य कार्यों की सफलता में भाग्य की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भाग्य दोष के कारण व्यक्ति – १. मात्र कुछ अंकों से परीक्षा में अच्छी श्रेणी प्राप्त करते-करते रह जाता है, २. व्यापार में पूंजी निवेश करता है, परन्तु परिश्रम के बावजूद प्रत्याशित लाभ नहीं मिलता, ३. नौकरी के लिए आवेदन किया जाता है, परन्तु योग्यता होते हुए भी आप वंचित रह जाते हैं, ४. समस्याएं और असफलताएं आपके पास ही आती हैं। इन सबका कारण भाग्य दोष ही है, जिसे साधना द्वारा मिटाया जा सकता है।

22.10.2000 रविवार सौन्दर्य आकर्षण प्रयोग

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यदि आपके मुख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतः सामने वाला व्यक्ति आप से प्रभावित होगा ही। शरीर यदि दुर्बल भी हो, परन्तु यदि मुख पर आभा है, सौन्दर्य है तो कोई भी आप से बात करने को लालायित होता है। सौन्दर्य आकर्षण प्रयोग द्वारा जहां स्त्रियों के सौन्दर्य में गजब का निखार आने लगता है, काया कंचन हो जाती है, वहीं पुरुषों के मुख मंडल पर तेजस्विता और रौनक आ जाती है। बड़े-बड़े नेताओं, अफसरों, सुन्दरियों में यह गुण प्राकृतिक रूप से व्याप्त होता है। यदि आप व्यापारी या कर्मचारी हैं और सामने वाले से अपनी बात मनवाना चाहते हैं या इण्टरव्यू में या अफसर के सामने घबराते हैं, तो इस प्रयोग के माध्यम से स्वयं अपने चेहरे पर आकर्षण और सम्मोहन ला सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को हर किसी से अनुकूलता ही प्राप्त होती है। इसके साथ ही आपके व्यक्तित्व में निखार आता है, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।

'गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व'

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मन्दिर में मंत्र जाप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे। और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं!

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों की साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

- दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का . . .
- गुरु प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु मार्ग है . . .
- दीक्षा में भाग लेने वाले सभी साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों को सायं ६ बजे प्रदान की जाएगी। दीक्षा के उपरान्त एक उपयोगी मंत्र प्रदान किया जाएगा।

योजना केवल इन ३ दिनों के लिये किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनके डाक पते लिखवा कर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं

शक्तिपात युक्त दीक्षाएं

कमला दीक्षा

225x5 =Rs.1125/-

भगवती कमला धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ को प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का ध्येय होता है और इसमें से भी लोग अर्थ को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है, कि भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस सहज स्वाभाविक प्रेम के पाश से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला सर्वश्रेष्ठ साधना है।

यह दीक्षा सर्व शक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति, द्युति, बल, मेधा, श्रद्धा, आरोग्य, विजय आदि दैवी शक्तियां भिन्न-भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई है।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली – 34, फोन : 011–7182248, टेली फैक्स : 011–7196700

निः शुल्क उपहार

महाकाल माला

भगवान महाकाल की तीव्रता का अनुभव हर उस व्यक्ति को होता है, जो काल के ज्वार भाटे का अनुभव करता है, इन क्षणों में व्यक्ति किसी भी अन्य पर विश्वास नहीं करता, वह निर्भर होता है तो मात्र स्वयं पर या काल पर लेकिन जो समर्थ व्यक्ति होते हैं, वे काल पर भी निर्भर नहीं होते अपितु अपने साधनात्मक बल से काल को अपने अनुसार चलने को बाध्य कर देते हैं। 'महाकाल माला' भी एक ऐसी ही अद्वितीय माला है, जिसे धारण करके साधक अपने मार्ग की रुकावट को धकेल कर हटा सकता है, बाधाओं को पैर की ठोकरों से उड़ा सकता है। आप इसे सवा माह तक धारण करने के उपरान्त नदी में विसर्जित कर दें तथा नित्य भगवान शिव का ध्यान करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – ''ज्ञान दान''

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि **''मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निः शुल्क 'मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित महाकाल माला'** 365/- (20 **पूर्व प्रकाशित पत्रिका के** 300/- + **डाक व्यय** 65/-) **की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे** 20 **पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।''** आपका पत्र आने पर, 300/-+ डाक व्यय 65/- = 365/- की वी. पी. पी. से **'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित महाकाल माला'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वी.पी.पी. छूटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क **अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)

फोन – 0291-432209, टेली फैक्स: 0291-432010

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं

चन्द्रमा की उपासना से व्यक्ति तेजस्वी तथा यशस्वी बनता है।

चन्द्र नमस्कार

चन्द्रमा सदैव से ही कवियों के लिए प्रेरणा स्रोत रहा है, सौन्दर्य का एक प्रतीक रहा है। वस्तुतः चन्द्रमा जीवन में शीतलता का, सौन्दर्य का प्रतिस्थापन करता है, वहीं व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष, कल्पनाशीलता एवं आध्यात्मिकता को भी नियंत्रित करता है। चन्द्रमा मूल रूप में स्त्री तत्व का द्योतक है, जिसके फलस्वरूप मादकता, प्रेम व आकर्षण स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। पुरुष में पुरुषोचित गुणों के साथ यदि चंद्र तत्व का भी समावेश हो जाए, उसमें ठूंठता समाप्त होकर प्रेम, मिठास व शीतलता का स्रोत फूट जाए, तो वह पुरुष से देवत्व की ओर अग्रसर हो जाता है। चन्द्रमा के ये गुण आपको एक सम्मोहक व आकर्षक व्यक्तित्व में परिणीत कर सकें, इसलिए प्रस्तुत है क्रिया योग की सर्वथा यह सुगम्य विधि।

जीवन में यदि वेग न हो, सौन्दर्य न हो, आकर्षण न हो, तो वह जीवन ठूंठ सा हो जाता है। सौन्दर्य चाहे वह किसी नवजात शिशु के भोले मुख का हो, चाहे किसी षोडशी बाला के तीखे नैन-नक्शों का हो, किसी खिले गुलाब के पुष्प का हो या प्रातः वेला में पक्षियों के मधुर कलरव का हो, सौन्दर्य ने हमेशा से ही मनुष्य के मन को आकृष्ट किया है। सौन्दर्य ने हमेशा से ही मनुष्य के मन को आकृष्ट किया है। सौन्दर्य के इसी गुण से आकृष्ट हो मनुष्य ने स्वयं में सौन्दर्य तत्व को जाग्रत करने का प्रयास किया, जिससे वह भी आकर्षण का केन्द्र बन सके और इसी भावना के फलस्वरूप उदय हुआ सम्मोहन जैसी विधा का।

यह आवश्यक नहीं, कि सम्मोहन में किसी का बलपूर्व वशीकरण ही किया जाता है, अपितु यह तो एक नैसर्गिक गुण, एक ईश्वर प्रदत्त गुण होता है, जिसके फलस्वरूप लोग प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते।

क्यों ऐसा कहा जाता है, कि **'अमुक'** का व्यक्तित्व बड़ा सम्मोहक है, या **'अमुक'** की वाणी में सम्मोहन है, तो उसमें कोई जादू नहीं होता, बल्कि वक्ता के अन्दर एक आत्मिक ऊर्जा का विकास हो जाता है, जिसके कारण उसकी वाणी, मन और सम्पूर्ण व्यक्तित्व में चन्द्रमा के उस प्रभावकारी गुण का समावेश हो जाता है, जिसे सम्मोहन कहा जा सकता है।

चंद्रमा के सौन्दर्य को देखकर कवियों को अनेक काव्यों की प्रेरणा मिली है (चारु चंद्र की चंचल किरणें . . .) **चंद्रमा वस्तुतः प्रतीक है, जीवन में शीतलता का, सौम्यता का।** और सौन्दर्य का। चन्द्रमा मूल रूप से स्त्री तत्व का प्रतीक है, जिसके अन्तर्गत स्त्री का प्रेम, मादकता, कोमलता और आकर्षण सभी कुछ तो आ जाते हैं। सौन्दर्य तो स्वयं में सम्मोहन का आधार बिन्दु है, और यदि चन्द्रमा का यह गुण व्यक्ति में आ जाए, तो उसका व्यक्तित्व एवं मन दोनों ही सम्मोहक हो जाते हैं, लावण्य से परिपूर्ण हो जाते हैं।

ऋषियों ने जहां अनेक सम्मोहन साधनाओं का प्रतिपादन किया है, वहीं क्रिया योग की ऐसी सटीक, विधियां भी दीं, जो दुर्भाग्यवश कम ही प्रचलित हुई – इन विधियों को यदि अपनाया जाए, तो व्यक्ति का चेहरा कांतियुक्त, शीतलता प्रदायक बन जाता है। पातंजल योग में योग की बहुविधि उपयोगिता को वर्णित किया गया है, योग के माध्यम से सौन्दर्य प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, जहां प्राप्त किया जा सकता है, वहां योग के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण की क्रिया तथा समाधि की अवस्था प्राप्ति भी बताई गई है।

चन्द्र नमस्कार जैसा कि नाम स्पष्ट है, कि चन्द्रमा पर आधारित है, इस आसन के आठ अंग हैं।

इस आसन का प्रमुख गुण यह है, कि यदि बेडौल स्त्री हो या पुरुष, शीघ्रता से ही वह अपने सौन्दर्य, अपने यौवन की प्राप्ति कर लेता है या यूं कहा जाए सौन्दर्य प्राप्ति हेतु यह आसन सर्वश्रेष्ठ आसन है। इस आसन को करने के पश्चात पुरुष सम्पूर्ण पुरुषोचित सौन्दर्य की प्राप्ति कर सकेंगे, चौड़ा

वक्षस्थल, दीप्तियुक्त भाल, आनन्द प्रदान करने वाला व्यक्तित्व तथा स्वयं में अपूर्व बल, साहस क्षमता और दृढ़ आत्मविश्वास के स्वामी होंगे।

इसी प्रकार स्त्रियों के लिए भी यह आसन महत्वपूर्ण है, वे इस आसन के फलस्वरूप ही अद्वितीय सौन्दर्य रूप की सामग्री बन जाएंगी। आकर्षक चेहरा, लम्बे घने बाल, सुराहीदार गर्दन, सुडौल देहयष्टि, उन्नत वक्षस्थल, कदली स्तंभवत् जंघाएं तथा अल्हड़ता निखर आती है।

चन्द्रमा का सौन्दर्य पक्ष जहां इस क्रिया से साधक में उत्पन्न होता है, वहीं उसका अन्तःपक्ष भी अप्रभावित हुए बिना नहीं रहता। साधक का आध्यात्मिक पक्ष, उसका भावनात्मक पक्ष और उसकी कल्पनाशीलता, गूढ़ विद्याओं में रुचि चन्द्रमा ग्रह से ही प्रभावित होती है, यह तथ्य ज्योतिष क्षेत्र के विद्वानों को विदित है। चन्द्रमा के गुणों का यदि मनुष्य में जागरण हो जाए, तो उसका बाह्य एवं अन्तः सौन्दर्य दोनों ही निखर जाता है, इस प्रकार चन्द्र नमस्कार स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध सभी के लिए समान रूप से वरदान है।

इस चन्द्र नमस्कार आसन में आठ चरण हैं, इन आठों चरणों को पूर्ण करने पर एक बार चन्द्र नमस्कार आसन पूर्ण होता है। यह आसन प्रातः खाली पेट ही करें तथा अपने विचारों को शुद्ध रखें, क्योंकि योग का प्रभाव आपकी मानसिक स्थिति पर भी निर्भर करता है।

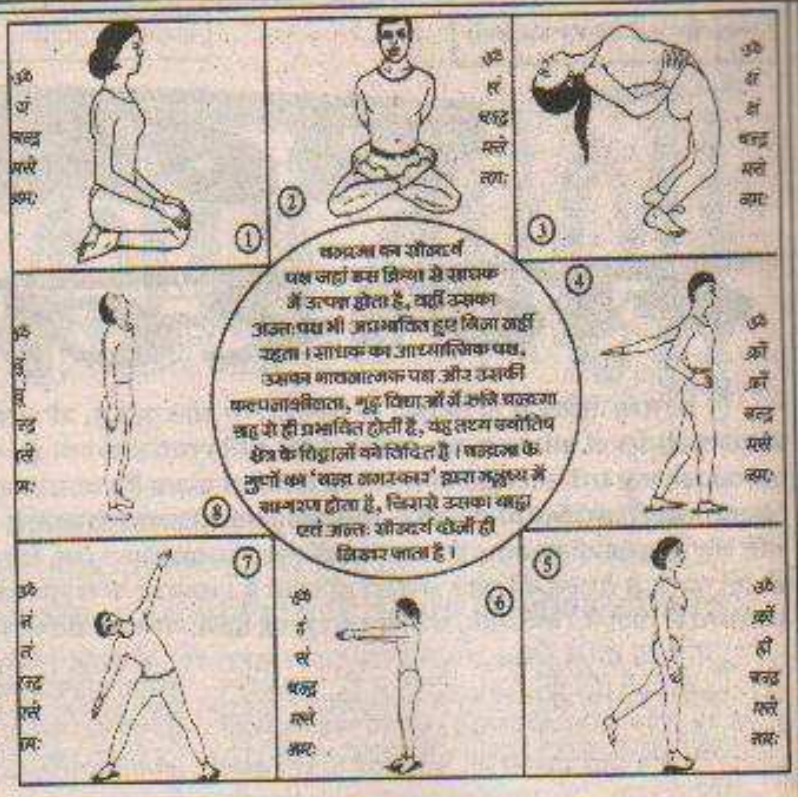

१. प्रथम चरण –

दोनों घुटने मोड़कर एड़ियों पर बैठ जाएं, फिर दीर्घ श्वास लेकर रोक लें तथा निम्न मंत्र का तीन बार मन में उच्चारण करें, उसके बाद श्वास छोड़ दें, श्वास छोड़ने के बाद पुनः रोक कर तीन बार मन में पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करें। यह क्रिया कम से कम तीन बार दोहराएं।

॥ ॐ गं चन्द्रमसे नमः ॥

लाभ – इस क्रिया को करने से रीढ़, कमर, जांघ, घुटनों और पैरों की शक्ति बढ़ती है तथा चर्बी समाप्त होती है। पेट स्वस्थ रहता है, यदि पैरों में दर्द रहता है तो नियमित रूप से करने पर दर्द समाप्त होता है।

२. दूसरा चरण –

पद्मासन लगाकर सीधे बैठ जाएं तथा दोनों हाथ कमर के पीछे से ले जाकर दाहिने हाथ से बाएं पैर का अंगूठा पकड़े तथा बाएं हाथ से दाहिने पैर का अंगूठा पकड़े एवं श्वास की गति साधारण ही रखें। फिर आगे की ओर झुककर अपना सिर जमीन पर लगाने का प्रयत्न करें, सिर जमीन पर लगाने के उपरांत पांच बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा सीधे बैठ जाएं। यह क्रिया कम से कम पांच बार करें। शरीर को अनावश्यक खिंचाव न दें।

॥ ॐ लं चन्द्रमसे नमः ॥

लाभ – इस चरण से साधक अपने मन को नियंत्रित करने में सहायता प्राप्त करता है। साधक को यदि आलस्य अधिक आता है, तो उसका आलस्य भी समाप्त होता जाता है। मस्तिष्क की कार्य क्षमता बढ़ती है। यह आसन करने से रक्त संचार की गति भी नियमित होती है। स्त्रियों में इस आसन के कारण बेडौलता समाप्त होती है। पुरुषों में बल तथा साहस का संचार होता है, यदि व्यक्ति दुर्बल है, तो देह में ताकत आती है तथा देह आकर्षक बन जाती है।

३. तीसरा चरण –

व्यक्ति सीधा खड़ा हो जाए, अपने दोनों पैरों के मध्य एक फुट की दूरी रखें। अपने दोनों हाथ अपनी कमर पर रखें, श्वास छोड़ते हुए पीछे की ओर झुके और निम्न मंत्र को तीन बार उच्चारण करें, यह क्रिया तीन बार करें। फिर सीधे खड़े होकर निम्न मंत्र को ही पांच बार शांत होकर उच्चारण करें –

// ॐ क्षं क्षं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – यह आसन नियमित रूप से करने पर चेहरे के आकर्षण में वृद्धि होती है तथा अल्हड़ता आती है। पुरुषों के चेहरे से तेज झलकने लगता है। चेहरे पर होने वाले दाग धब्बों से भी छुटकारा मिलता है, तथा चेहरे पर गुलाबीपन आता है। या यूं कहें कि स्त्रियों को गुलाब के पुष्प की तरह नाजुकता तथा पुरुषों को गम्भीरता तथा शालीनता प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

४. चौथा चरण –

दोनों पैर एक फुट की दूरी पर रखकर खड़े हो जाएं, उसके साथ फिर श्वास को एक समान रखते हुए बाएं पैर को पीछे ले जाएं, उसके साथ ही बायां हाथ भी पीछे की ओर ले जाएं, निम्न मंत्र का तीन बार जप करें, बायां हाथ तथा पैर आगे की ओर लाकर स्थिर करें तथा फिर से निम्न मंत्र का तीन बार जप करें। इसी प्रकार दायें हाथ तथा पैर को पीछे ले जाकर फिर तीन बार मंत्र जप करें तथा पैर व हाथ को आगे लाकर तीन बार मंत्र जप करें, ऐसा तीन बार करें।

// ॐ क्रौं क्रौं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – इसका प्रमुख गुण है, कि यह व्यक्ति में निराशा की भावना को समाप्त करता है, उदासीनता, डिप्रेशन तथा निगेटिव विचारधारा में परिवर्तन करता है। व्यक्ति में दृढ़ आत्मविश्वास उत्पन्न होता है तथा हाथ एवं पैरों की कार्य क्षमता में बढ़ोतरी होती है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन आता है।

५. पांचवा चरण –

स्थिर खड़े होकर बायां पैर जोर से पीछे की ओर लाएं कि पैर नितम्ब भाग को स्पर्श कर ले, फिर सीधा खड़े हो जाएं, ऐसा ही दाहिने पैर से भी करें। इस प्रकार दस बार करने के पश्चात निम्न मंत्र का पांच बार उच्चारण करें, ऐसा तीन बार तक करें।

// ॐ क्रौं ह्रीं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – यह क्रिया हृदय को मजबूत बनाती है तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए यह श्रेष्ठतम आसन है। इस आसन को करने के पश्चात स्त्रियों का पेट पीपल के पत्ते की भांति बनता है, पुरुषों को बलिष्ठता प्राप्त होती है।

६. छठा चरण –

सीधे खड़े होकर दोनों हाथों को निम्न मंत्र बोलते हुए ऊपर ले जाएं तथा हथेलियों को जोड़कर रखें, तीन बार मंत्र बोलने के पश्चात हथेलियों को अपने सीने के सामने लाइए, फिर निम्न मंत्र का तीन बार उच्चारण करें। यह क्रिया पांच बार दोहराएं।

// ॐ हं सं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – इस आसन को करने से वक्षस्थल का विकास होता है, यदि कद छोटा है, तो कद में बढ़ोत्तरी होती है। इस आसन को करने के फलस्वरूप स्त्रियों के वक्षस्थल का समुचित विकास होता है तथा पुरुषों के वक्षस्थल में दृढ़ता आती है तथा चौड़ा हो जाता है।

७. सातवां चरण –

स्थिर खड़े होकर दोनों पैरों के मध्य में एक दो फीट का फासला रखें। दोनों हाथ अपने कन्धे की सीध में बगल में लाएं, निम्न मंत्र का तीन बार जप करते हुए बायीं ओर झुकें, इस अवस्था में घुटने मुड़ने नहीं चाहिए। फिर दाईं ओर झुकें, इस प्रकार दोनों ओर पांच-पांच बार यह क्रिया करें।

// ॐ नं नं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – स्त्रियों के इस आसन के माध्यम से बलखाती हुई कमर प्राप्त कर सकती हैं, सुराहीदार गर्दन, तीखे नेत्र प्राप्त कर अपने सौन्दर्य को और अधिक मादक बना देती हैं। पुरुष इस आसन के माध्यम से अपने पेट व कमर की फालतू चर्बी को समाप्त कर शरीर को कामदेव के समान पुरुषोचित सौन्दर्यवान बना सकेंगे।

८. आठवां चरण –

सीधे खड़े होकर अपनी गर्दन पीछे की ओर झुकाएं व तेज-तेज श्वास लें, दस बार करने के पश्चात शांत खड़े होकर निम्न मंत्र का पांच बार जप करें।

// ॐ दूं दूं चन्द्रमसे नमः //

लाभ – स्त्रियों को इस आसन के फलस्वरूप कांतियुक्त त्वचा प्राप्त होती है। निखरी स्वस्थ त्वचा की स्वामिनी बनती हैं, आवाज में भी मीठापन एवं लोच आता है। पुरुषों को इस आसन के द्वारा प्रभावात्मक वाणी व स्त्रियों को टकटकी बांधकर देखने वाला अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त होता है।

एक दृष्टि में:

साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

26- 27 अक्टूबर 2000 जोधपुर (राज.)

महालक्ष्मी दीपावली साधना शिविर

परम पूज्य सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले एवं वन्दनीय माता भगवती के चरणारविन्दों तले जोधपुर की दिव्यतम गुरु भूमि में आप समस्त गुरु भाई बहिनों को प्यार भरा आमंत्रण हम तो केवल अपने हृदय के भावों द्वारा आप से निवेदन कर सकते हैं, आप भी सद्गुरुदेव के आत्म अंश हैं, आप अवश्य आएंगे।

– समस्त जोधपुर स्टाफ

10-11 नवम्बर 2000 रायपुर (म. प्र.)

संन्यास दिवस साधना शिविर

समस्त सिद्धाश्रम साधक परिवार रायपुर, छत्तीसगढ़ म.प्र.

✻ आर. सी. सिंह बिलासपुर ०७८१-८३३३४३ ✻ के. के. तिवारी, रायपुर ०७७१-२४२६८० ✻ उमेश शाह रायपुर ✻ विनेश सैनी, रायपुर ५३४२७९-२२९६५० ✻ अजय कुमार स्वर्णकार २८३७५३ ✻ कमल चन्द्राकार दुर्ग ७७४२३३०८०९ ✻ योगेन्द्र शर्मा, वन्तेवाड़ा, ✻ बबला उपाध्याय, रायपुर ✻ एन. के. नायक सिलयारी ✻ गंगाराम साहू ✻ संतोष नारायण कांकेर ✻ एस. आर. कल्याण ✻ ध्रुव चन्द्रकर दुर्ग ✻ धड़के जी गरियाबाद ✻ तुकाराम गिर डोंगरगांव ✻ श्रीमति अमन चौबे डौडी ✻ टीकाराम वर्मा तिलदा ✻ विनोद कुमार साहू शिवरी नारायण ✻ संतोष सोनी चांपा ✻ एस. के. सिंह गोपाल नगर ✻ एस. बी. नीवसर कोरबा ✻ आर. एस. मिश्रा ३२६१९१

19-नवम्बर 2000 कानपुर (उ. प्र.)

सर्व महालक्ष्मी साधना शिविर

स्थान : ब्रजेन्द्र स्वरूप पार्क

कानपुर

सम्पर्क :– ✻ गोकर्ण सिंह कानपुर 0512-583834 ✻ रामगोपाल शास्त्री 580921 ✻ राजवीर सिंह 612016 ✻ धीरेन्द्र सिंह 611476 ✻ दर्शन सिंह यादव, ✻ राजेन्द्र वर्मा 233315

3 -दिसम्बर 2000 फैजाबाद (उ. प्र.)

ऐश्वर्यदात्री तारा महाविद्या साधना शिविर

स्थानः क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस, फतेहगंज चौराहा फैजाबाद उ.प्र.

सम्पर्क :– ✻ मदन लाल गुप्ता 05278-42308 ✻ डॉ. रुद्र प्रताप सिंह 988087132 ✻ बाबू भाई 46411 ✻ विनय शर्मा ✻ डॉ. हरीलाल सोनी 2501107

10 - दिसम्बर 2000 होशंगाबाद (म. प्र.)

सर्व साधना सिद्धि शिविर

स्थानः नर्मदा के तट पर होशंगाबाद

सम्पर्क :– ✻ सुनील चौहान 53860 ✻ शरद चन्द्र चौधरी 53697 ✻ संतोष शर्मा 24480 ✻ सुरेश धुर्वे, विनय प्रताप ठाकुर, ✻ जी. एल. पटेल 63185 ✻ एस. एल. मस्कोले 63176 ✻ कांतिलाल, सोनी थोटेकर जी 62430 ओ. पी. दुबे, एम. एम. सुमन, एस. पी. एम चौहान

16-17 दिसम्बर 2000 बम्बई

अष्ट महासिद्धि साधना शिविर एवं यज्ञ समारोह

स्थानः कस्तूरी पार्क सिद्धाचल जैन सुपर मार्केट के पास मलाड लिंक रोड, मलाड पश्चिम मुम्बई - 400064

सम्पर्क :– ✻ सतीश मिश्रा 8050323 ✻ गणेश सिंह 4313992 ✻ चन्दू टवरमलानी 4929090 ✻ हरिशंकर पांडे 8856080 ✻ अशोक पांडे 4963617 ✻ भास्करन जी 911-604702 ✻ कीर्ती भाई 412166 ✻ एडवोकेट राय 8886094 ✻ कृष्णा गोड़ा 8412860

24-25 दिसम्बर 2000 बड़वानी (म. प्र.)

गणेश लक्ष्मी साधना शिविर

स्थानः डा. पटेल मांगलिक भवन नया बस स्टेण्ड के पास बड़वानी (म. प्र.) 'इन्दौर' बस स्टेण्ड से बड़वानी जावें।

समस्त सिद्धाश्रम साधक परिवार (म. प्र.)

सम्पर्क :– ✻ उमर सिंह फाटला बड़वानी ✻ रेलम चौहान झाबुआ ✻ पूर्णेश चौबे बड़वानी 07290-23310 ✻ विजय गुप्ता इंदौर 412400 ✻ शशि चौहान इन्दौर 573606 ✻ मनोहर सिंह ठाकुर 22150 ✻ एल. डी. गिरासे 07290-24028 ✻ राजेन्द्रसिंह चौहान077290-24343 ✻ ओमप्रकाश शर्मा ✻ नरेन्द्र कुमार गुप्ता बड़वानी 22290 ✻ ओमप्रकाश सोनी कुक्षी 07290-34634 ✻ संजय ठक्कर कुक्षी, ✻ सरदार सिंह ठाकुर मनावर, ✻ लिमजी भाई पाटीदार ननौदा, भगवान पाटीदार लिंगवा, ✻ शोभाराम पाटीदार डोंगरगांव, ✻ सुरेश पंवार, ✻ डॉ. बी.एस. पवार, ✻ राधेश्याम पाटीदार, ✻ नरेन्द्र सिंह सोलंकी, ✻ सुधीर वाघेला 07296-35315 ✻ मनोहर सिंह दरबार

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

रजिस्ट्रेशन नं० 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date-20-24 Every Month

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2000

Licence to Post without Pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2000

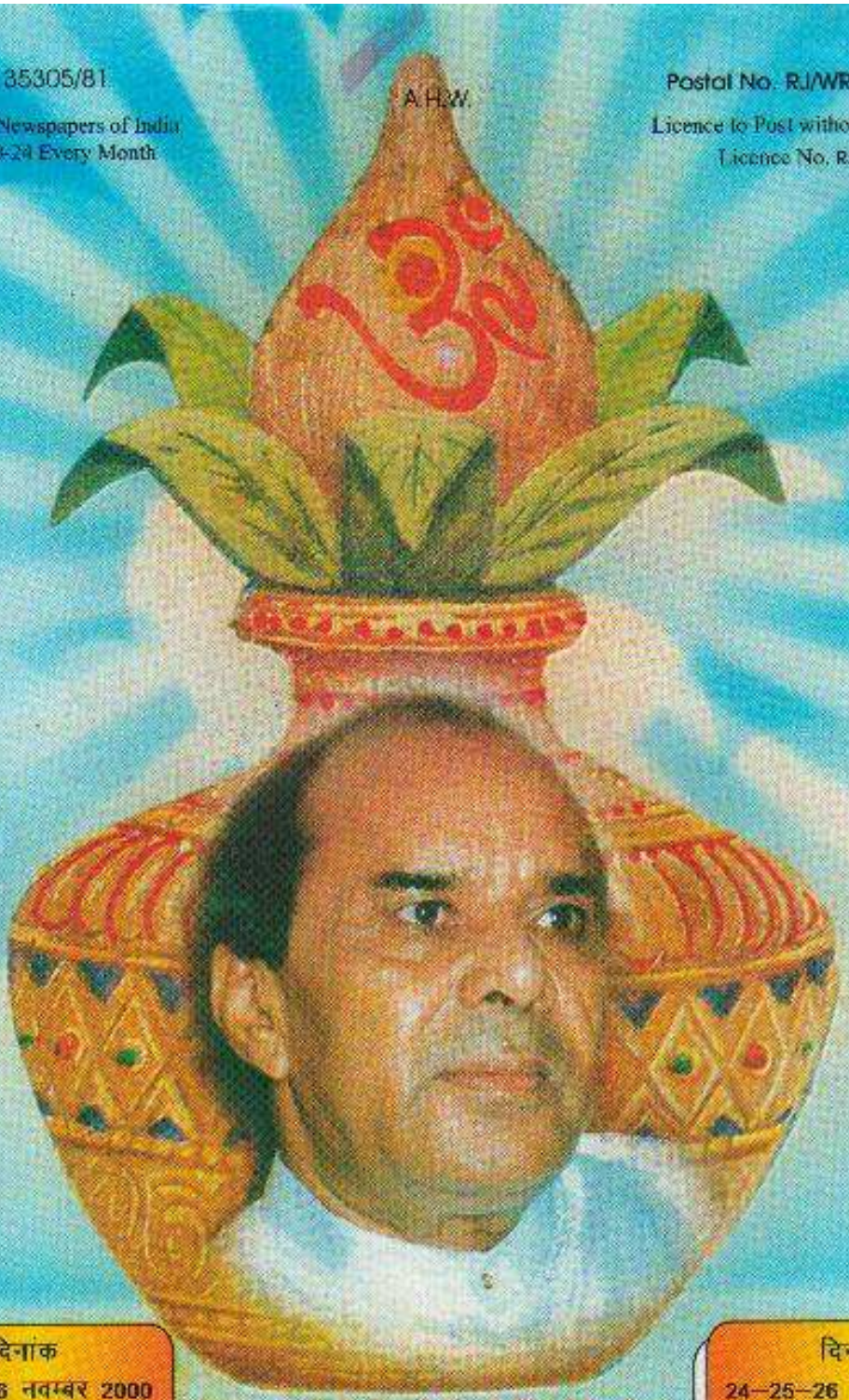

दिनांक
14–15–16 नवम्बर 2000
स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
24–25–26 नवम्बर 2000
स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

माह : नवम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।

इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर ये दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के मध्य तथा सायं 5 बजे से 7 बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

वर्ष — 20

अंक — 10

:: सम्पर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०), फोन: 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7192248, टेली फैक्स : 011-7196700

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING